मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
मई १९९३
कुण्डलिनी जागरण विशेषांक
१५/-

अद्वितीय अनुपम

आजीवन सदस्यता

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है ....

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

और फिर अप्रैल ९३ से तो पत्रिका व्यवस्थापकों ने आजीवन सदस्य बनने वाले को उपहारों का ढेर लगा दिया है -

- पूरे जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर डाक द्वारा
- सम्पूर्ण दीक्षा - रसेश्वरी दीक्षा - एक माह के भीतर भीतर निःशुल्क
- एक इक्कीस तोले का पारद शिवलिंग - जिसकी लागत न्यौछावर ही २५०० रू० है, पर आपको सर्वथा निःशुल्क
- एक १६ x २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य, सिद्ध गुरुचित्र निःशुल्क
- प्रत्येक शिविर में अत्याधिक उपयोगी "शिविर सिद्धि पैकेट" १, धोती, २. माला, ३. पंच पात्र, ४. गुरुचित्र तथा ५. सिद्धासन - सर्वथा निःशुल्क
- "सूर्यकान्त उपरत्न" जो मंत्र सिद्ध है, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य, सर्व कार्य सिद्धि दायक सर्वथा मुफ्त
- यह छूट केवल भारत में रहने वाले साधकों को ही प्राप्त होगी
- यह सुविधा ३ जुलाई ९३, गुरुपूर्णिमा तक बढ़ाई गई है (विशेष अनुरोध पर)।

आजीवन सदस्य

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४०० रू० देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

आपको जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका निःशुल्क घर बैठे प्राप्त होती रहेगी।

और

जो साधक या पाठक किसी को विशेष आजीवन सदस्य बनने के लिये प्रेरित करेगा उसे एक धातु युक्त पारद शिवलिंग निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त होगा।

विशेष

और फिर यह आपकी धरोहर धनराशि है जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो) पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद **यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।**

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

फोन : ०२९१-३२२०९

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

मूलाधारे कुण्डलिनी भुजगाकार रूपिणी
तत्र तिष्ठति जीवात्मा प्रदीप कलिका कृति: ।
ध्याये त्तेजोमयं ब्रह्म तेजोध्यानं परात्परम् ।।

मूलाधार में जो कुण्डलिनी सर्पिणी रूप में अवस्थित है, वहीं पर कली के रूप में जीवात्मा स्थापित है, उसके तेजस्वरूप ध्यान से ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार की अवस्थिति बन जाती है।

नियम

- मई मास के शेयर और राजनीतिक भविष्य
- ज्योतिष प्रश्नोत्तर
- इस माह का राशिफल
- आयुर्वेद
- अंक और यह माह
- आपके लिये अनुकूल समय
- आँखों देखी घटना पूर्वजन्म की
- व्यक्ति को देवराज इन्द्र बना देती है राज्याभिषेक दीक्षा
- कुण्डलिनी जागरण दीक्षा ही जीवन की सभी दृष्टियों से पूर्णता है
- आरम्भ हो चुका है युग परिवर्तन का क्रम
- "मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान" पत्रिका ही नहीं अपितु द्वापर युग की श्रीमद्भगवद्गीता है

और भी बहुत कुछ : इस अंक में ....
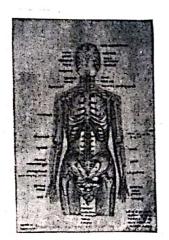
मंथन

इस महीने ग्रह स्थितियों में काफी परिवर्तन आया है, जिसके फलस्वरूप काफी परिवर्तन होंगे अगले कुछ दिनों में–

- अजीत सिंह एवं चन्द्रशेखर की 'इमेज' धीरे-धीरे जनता में बढ़ेगी, और वे ज्यादा से ज्यादा पावरफुल होते रहेंगे।
- भारतीय जनता पार्टी में जहां लालकृष्ण अडवानी ऊंचे उठेंगे, वहीं जोशी जी परेशानियों में घिरेंगे।
- इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रपति शासन की प्रबल संभावनाएं है, जिसका समापन 'मिड टर्म इलेक्शन' में होगा, पर इससे पूर्व तीन पर्टियों का गठबन्धन होकर शासन चलाने की संभावनाएं हैं, पर फिर भी राजनीतिक दृष्टि से अस्थिरता बनी रहेगी।
- पुत्र की वजह से प्रधान मंत्री नई विपत्तियों में घिरेंगे, आने वाला समय उनके लिये चुनौतियों एवं कांटों से भरा होगा, उन्हें अपने स्वास्थ्य का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।
- राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा जी के घुटनों में दर्द बढ़ेगा, एवं आने वाले समय में स्वास्थ्य की दृष्टि से कुछ परेशानियां रहेंगी।
- अर्जुन सिंह चारों तरफ से विपत्तियों से घिरेंगे, आने वाला समय उनके लिये अग्नि परीक्षा के समान होगा।
- शरद पंवार अपनी स्थिति को संतुलित बनाये रखने में सफल तो होंगे, पर किसी न्यायालय के मुकदमें से वे कुछ नई समस्याओं से घिरेंगे।
- जीतेन्द्र प्रसाद के लिए जून जुलाई का महीना विपरीत संभावनाओं को लिये हुए है अतः उन्हें संभल-संभल कर कार्य करना चाहिए।
- जुलाई में अमेरिका कुछ आन्तरिक समस्याओं से उलझेगा, और उन्हें आतंकवाद से मुकाबला करना पड़ेगा।
- पाकिस्तान के लिये अगले तीन-चार महीने आन्तरिक संघर्ष एवं संकट के होंगे, हो सकता है वह इस वर्ष के अन्त या अगले वर्ष के प्रारंभ में भारत पर आक्रमण कर दे।
- चीन-भारत के बीच प्रगाढ़ संबंध बनेगें, तथा वाणिज्य के साथ साथ सीमा-समस्या में भी सुधार होगा।
- दक्षिण भारत में संघर्ष एवं आतंकवाद जोर पकड़ेगा तथा बैंगलोर, हैदराबाद, बम्बई, पूना आदि में विस्फोट हो सकते हैं।
- असम में इस महीने कुछ समस्याएं बढ़ेंगी तथा काश्मीर में आतंकवाद शिथिल होगा।

सम्पादकीय

पत्रिका का यह इस वर्ष का पांचवा अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुये मुझे विशेष हर्ष इस कारण से हो रहा है क्यों कि इस बार का विषय 'कुण्डलिनी जागरण' पर है। कुण्डलिनी जागरण हमारे समाज में एक बहुपरिचित शब्द तो बन गया है लेकिन इसके दो ही आयाम संभव हुये। या तो इसे कोई स्पंदन करने कराने वाली विद्या और कुछ छोटी-मोटी अनुभूतियों तक सीमित कर दिया गया, अथवा दुरूह शास्त्रीय व्याख्याओं में बंद कर दिया गया। दोनों ही स्थितियां श्रेयस्कर नहीं हैं कुण्डलिनी जागरण न तो रीढ़ की हड्डी में होने वाला कोई स्पदंन मात्र है और न चक्रों का दुरूह संसार। वे सब तो रूपक की शैली में दी गयी उपमायें हैं।

यह 'कुण्डलिनी जागरण विशेषांक' इन्हीं अतिरेकों से परे हट कर एक गहन विषय को सरल भाषा में स्पष्ट करने का विनम्र प्रयास है। कुण्डलिनी जागरण, एक प्रक्रिया से भी आगे बढ़कर, इस मानव शरीर से ऊपर उठकर दिव्य अनुभूतियों तक पहुंचने का मार्ग है। जीवन को बहुविध रसयुक्त करने की, सुसज्जित करने की शैली है। इसमें ऐसा कुछ है ही नहीं कि वर्षों तक शरीर को सुखाकर, उदास और चिडचिड़ा बनकर जूझा जाये, यद्यपि 'कुण्डलिनी जागरण' शब्द का उच्चारण करते ही हमारे मानस में बिम्ब तो यही बनता है।

इस विशेषांक में यही स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार से आप में से प्रत्येक शक्ति का घटक है, अनंत संभावनाओं की खान है, और किस पद्धति से वह अपने अंदर उसे उद्घाटित कर सकता है।

इस अंक में कुण्डलिनी जागरण के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करने के साथ ही साथ सभी स्थायी स्तंभ यथा आयुर्वेद, ज्योतिष, राशिफल, काल गणना समाहित है।

आपके निरंतर मिलने वाले पत्रों से हमें यह ज्ञात हुआ कि पत्रिका का अप्रैल अंक अपने अन्तर्राष्ट्रीय आकार एवं मुद्रण के कारण आपको भा गया, हमारा निरंतर प्रयास है कि इसे ज्ञान के विभिन्न पक्षों से समृद्ध कर आपको आह्लादित कर सकें।

आपके सुझाव तो आमन्त्रित हैं ही, तथा पूज्य गुरुदेव के शिष्य के रूप में आपसे आशा है कि आप निरंतर इसके प्रसार प्रचार में भी सहयोग देंगे।

आपका अपना

नन्द किशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

मैं व्यवसाय से 'एक चिकित्सिका हूँ एवं मेरा स्वयं का योग केन्द्र भी है। मैं पत्रिका की पुरानी सदस्या भी हूँ। मेरी वर्षो से इच्छा है कि आप पत्रिका का 'योग विशेषांक' भी प्रस्तुत करें जिससे बाजारू योग साहित्य की भीड़ में अलग हटकर हमें प्रामाणिक एवं शोधपूर्ण जानकारी मिल सके।

डॉ० मालती कानड़े, लातूर (महाराष्ट्र)

मैंने पत्रिका के अप्रैल अंक में प्रकाशित इंटरव्यू "बसंत के कालजयी कदम" पढ़ा। मैं डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी का आवाहन पढ़कर आने का इच्छुक हो गया हूँ। मेरी रूचि सूर्य विज्ञान से संबंधित प्रयोगों में है। कृपया मुझे उचित मार्ग दर्शन दें।

कौशल सक्सेना, रीवां (म० प्र०)

मैं स्वयं एक पत्रकार हूँ। आपकी पत्रिका अपने आकर्षक कलेवर के कारण बुक स्टाल पर सबका ध्यान आकृष्ट कर ही रही थी। आपकी पत्रिका में दोनों इंटरव्यू मैंने विशेष रूचि लेकर पढ़े। मेरी भी इच्छा हो रही है कि मैं आपकी पत्रिका के लिये पत्रकारिता करूं। मैंने पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापन के अनुरूप "विश्रुत" शीर्षक से अपना आवेदन भेज भी दिया है।

सुदेश भदौरिया, जबलपुर (म० प्र०)

मैं "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका का पुराना पाठक हूँ और 'यक्षिणी साधना' में विशेष रूचि रखता हूँ। इस बार आपके बताये नवीन ढंग से साधना संपन्न की। साधना की समाप्ति होते-होते मुझे तीव्र सुगन्ध, वस्त्रों की सरसराहट, दबी-दबी हंसी तो सुनाई पड़ी, लेकिन कोई प्रत्यक्ष नहीं हुई। क्या मुझे प्रत्यक्ष करने के लिये कोई और साधना करनी पड़ेगी या इसी को दुबारा करूं?

देवजी आर० पटेल, अहमदाबाद

जादू टोना नहीं

यह पत्रिका कोई जादू टोने से संबंधित नहीं है और न इसमें कोई हल्के और घटिया प्रयोग दिये हुए होते हैं, यह तो शुद्ध प्रामाणिक भारतीय प्राच्य एवं गूढ़ विषयों से सुसज्जित पत्रिका है, जो अपने आप में ही अद्वितीय है।

पं० हरीशचन्द्र शर्मा, वाराणसी

अद्वितीय

इस बार अप्रैल का अंक अपने आप में ही सुन्दर सुखद एवं शानदार हैं, मेरी स्टाल पर लगभग दो सौ नई पत्रिकाएं हर माह आती है और मैं उसे सजाकर रखता हूं, इस बार तो इस पत्रिका ने अपनी शानदार साज सज्जा से सब को मात कर दी, दर्शकों-पाठकों का ध्यान सीधा इस पत्रिका पर ही जाता था।

बाबू लाल, कानपुर

अनुभव

मंत्रों में शक्ति होती है और यह मैंने इस बार अनुभव किया, पत्रिका में प्रकाशित मैंने याक्षिणी प्रयोग को आजमाया और जो कुछ मुझे अनुभव हुआ, वह आश्चर्य चकित कर देने वाला था। मैं अपने अनुभव अलग से लिख कर भेज रहा हूं।

प्रभुदयाल, कलकत्ता

'ज्वाला मालिनी-साधना' सचमुच कमाल की साधना है, लेकिन यह स्पष्ट कीजिए कि इससे नेत्रों को कोई नुकसान पहुंचने की संभावना तो नहीं?

(आप निश्चिंत रहें। पत्रिका में केवल वहीं साधनाएं प्रकाशित होती हैं, जिनको वरिष्ठ साधक अपनी कसौटी पर कस चुके होते हैं)

सम्पादक

मैंने अपने दुश्मनों की गुटबाजी से एवं छिपी हुई गुप्त चालों से परेशान होकर 'बगलामुखी साधना' संपन्न की। मैं आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि अब उनकी योजनाएं समय रहते ही मेरी आंखों के सामने चलचित्र की तरह घूम जाती हैं, और इस तरह मैं कई-कई बार दुर्घटना ग्रस्त होते-होते बच गया।

जीवन सिंह गहलौत, सीकर (राजस्थान)

मैं अपने मोटापे को लेकर सभी जगह हंसी का खजाना सा बन जाती हूँ, और इसी से शर्म के बारे ठीक से घूम फिर नहीं सकती जबकि मैं सभी तरह के परहेज आदि करके देख चुकी हूँ। क्या पत्रिका में दिये गये लेख में आई 'उत्तान बंद' औषधि आपकी संस्था से मिल सकेगी।

श्रीमती कृष्ण गुलाटी, पू० चम्पारण

कृपया अपने अपने लेख में "ग्रहनाश भूतेश्वर मंत्र" में जो पीड़ित व्यक्ति पर प्रयोग दिया है उसे विस्तार से स्पष्ट करें। क्या किसी ग्रह विशेष को पीड़ा में भी यह पर्याप्त लाभदायक सिद्ध होगा।

श्री चंद गुप्ता बिलासपुर (मध्य प्रदेश)

मैं बी० ए० द्वितीय वर्ष की छात्रा हूँ और योगासनों में रूचि रखती हूँ। पत्रिका के अप्रैल अंक में सौन्दर्य वर्द्धक आसनों का विवरण देख मैंने वह अंक खरीद लिया। आपने बहुत उपयोगी जानकारी दी, लेकिन चित्रों का अभाव खटक गया। भविष्य में जब भी योग पर लेख दें, तो स्पष्ट करने के लिये चित्र भी अवश्य दें।

कु० अर्पिता बनर्जी, फैजाबाद (उ०प्र०)

मैं इस नवरात्रि में भाग लेने के लिये दिल्ली से जोधपुर आ रही थी, कि रास्ते में एक भरी ट्रक ने बांयी ओर से गलत ओवर टेक करने के चक्कर में हमारी बस को लगभग टक्कर मार ही दी थी। तभी ऐसा लगा मानों हमारी बस को किसी ने हाथ के सहारे से एक ओर कर दिया हो। ठीक उसी समय अष्टगंध जैसी तीव्र सुगन्ध भी अनुभव की। जोधपुर में जब मैंने पूज्य गुरुदेव से यह घटना बताई तो वे बस रहस्यमय ढंग से मुस्कराकर चुप रह गये। किन्तु उनकी कृपा तो मैंने अनुभव कर ही ली भले ही अपने श्रीमुख से वे कुछ न कहें।

श्रीमती कमला सिकदर, दिल्ली

प्रामाणिक

मैं पिछले साठ वर्षों से मंत्र-तंत्र का अध्येता रहा हूं और मैं दम ठोंक कर कह रहा हूं कि पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक मंत्र प्रामाणिक एवं यथार्थ हैं, यह पत्रिका वसन्त की शीतल बहार की तरह है ... वास्तव में ही यह पत्रिका अद्भुत है, आश्चर्य जनक है, प्रामाणिक है।

पं० जनार्दन झा, बैंगलोर

सफलता निश्चय ही

किसी भी मंत्र का साधना विधि में चार या छः दिनों में जो साधना सिद्धि के बारे में लिखा होता है, वह उच्चकोटि के साधकों के लिये है, हम जैसे नवीन साधकों को तो पांच-छः बार उसी प्रयोग को करने पर सफलता मिलती है ... मैंने भी एक कठिन प्रयोग को ... कर्ण पिशाचिनी साधना को आठ बार किया तब सफलता मिली ... पर मिली अवश्य यदि धैर्य रहे तो ...।

ज्ञान देव, हरिद्वार

मैं धूमावती का सिद्ध साधक हूँ एवं आपने कई शिष्यों को भी सफलतापूर्वक ये साधना संपन्न करा चुका हूँ, किन्तु आपकी पत्रिका के अप्रैल अंक में धूमावती देवी का नवीन व तेजस्वी पंत्र पढ़कर मैं चौंक गया। मुझे तो अपने जीवन के ४५ साल के अनुभवों में भी यह मंत्र ज्ञात नहीं हो पाया था। क्या मैं आपसे मिल सकता हूँ?

स्वामी श्री आनन्द, चौपता (चमौली)

मैंने पत्रिका के अप्रैल अंक में पृष्ठ संख्या ६६ पर वर्णित ढंग से बगलामुखी साधना संपन्न की। अब जब भी मैं ध्यानावस्था में रहता हूँ तो स्पष्ट रूप से एक सुनहरे रंग का चक्र मेरे चारों ओर ज्योति बिखेरता हुआ घूमता रहता है। क्या यही वलगाचक्र है?

कमल दीक्षित (कानपुर)

वर्ष १३ अंक ५ सम्पादक मंडल मई ९३

पत्र व्यवहार– मंत्र-तंत्र-यंत्र कार्यालय, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)
टेलीफोन-०२९१-३२२०९

दिल्ली कार्यालय–गुरुधाम ३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन-०११-७१८२२४८

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली पुरस्कार

—१९९३—

ज्योतिष के क्षेत्र में डॉ० नारायण दत्त जी श्रीमाली का योगदान अमूल्य एवं अद्वितीय रहा है, सैकड़ों ग्रंथों के माध्यम से उन्होंने ज्योतिष के क्षेत्र में जो कार्य किया है वह अपने आप में अविस्मरणीय है।

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका" परम पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त जी श्रीमाली के आशीर्वाद से संचालित है, यह अत्यधिक प्रसिद्ध एवं अनुपम पत्रिका यह घोषणा करती है कि प्रति वर्ष "एक श्रेष्ठ ज्योतिषी एवं भविष्य वक्ता" को ११,००० रु०, शाल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करेगी।

- इस सम्मान को दिल्ली या अन्य किसी महत्वपूर्ण स्थान पर श्रेष्ठ व्यक्तित्व के हाथों प्रदान किया जायेगा, जिसमें सम्पूर्ण देश के चुने हुए ज्योतिषी, भविष्यवक्ता एवं राजनीतिज्ञ आमंत्रित होंगे।
- इस समय इस महत्वपूर्ण पत्रिका "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" को १,००,००० से भी ज्यादा पाठक पढ़कर लाभ उठा रहे हैं।
- आप देश या विदेश से संबंधित घटना को लगभग ३ महीने पहले निम्न पते पर रजिस्टर्ड डाक से भेजेंगे, भविष्यवाणी प्राप्त होने पर उसकी "कन्फर्मेशन" आपको भिजवा दी जायगी, एक ज्योतिषी एक बार में मात्र ६ भविष्य वाणियां भेज सकता है। जिसे हम इस पत्रिका में प्रकाशित करेंगे, साथ ही आप अपना फोटो व परिचय भी अवश्य भेजें।

हमारा निर्णायक मंडल ३१-१२-९३ को प्रकाशित भविष्य वाणियों के आधार पर "श्रेष्ठतम भविष्य वक्ता" का निर्णय करेगा, जिये चैलेन्ज नहीं किया जा सकेगा।

इस अद्वितीय "पुरस्कार योजना" में कोई भी ज्योतिषी या भविष्य वक्ता भाग ले सकता है।

भविष्यफल भेजने के लिए एवं अन्य सूचनाओं के लिए

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

३०६, कोहाट एन्क्लेव (पीतमपुरा), नई दिल्ली - ११० ०३४

टेलीफोन - ०११-७१८२२४८

कुण्डलिनी और मस्तिष्क

हमारे मस्तिष्क में असीम क्षमताएं समाहित हैं, जिन्हें कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से हस्तगत कर एक सम्पूर्ण मानव की संज्ञा प्राप्त कर सकते हैं। ब्रह्माण्ड में बिखरी अप्रतिम शक्तियों के स्वामी बन सकते हैं, और जीवन को पूर्णता के शिखर पर पहुंचा सकते हैं, ऐसा वास्तव में ही संभव है विश्वास न हो तो प्रस्तुत लेख आपके लिए ही है ....

विराट सम्भावनाओं की तुलना में मानव एक बीज मात्र ही है जिसमें बहुत कुछ सुप्त छिपा हुआ है। जब इस विराट ऊर्जा का भीतर प्रवाह जाग्रत हो जाता है तो नया जन्म होता है। यह ऊर्जा जो नीचे की ओर से प्रवहित है, ऊपर की ओर बहना प्रारम्भ कर देती है, इसके साथ ही यह हमें ऊपरी लोकों (दिव्य लोकों) से जोड़ देती है, और जब यह ऊर्जा मस्तिष्क (ब्रह्मरन्ध्र) तक पहुंचती है तो कुण्डलिनी जाग्रत होती है।

यदि झरने के वेग को, नदी के प्रवाह को रोक दिया जाये, तो वह किनारे तोड़ देता है रुका हुआ जल मलिन हो जाता है, उसका मूल तत्त्व ही समाप्त हो जाता है। हमारी आन्तरिक शक्ति का स्वरूप भी ऐसा ही है, यदि शक्ति को जाग्रत नहीं किया तो यह पूरे शरीर में विष तुल्य बनकर मानसिक विकास में व्याधियां उत्पन्न कर देगी।

वर्तमान समय में जीवन की तेज गति के फलस्वरूप मानव मस्तिष्क में शान्ति और स्थिरता समाप्त सी हो गई है और उसकी विचार शक्ति कई दिशाओं में, कई धाराओं में भटकती रहती है जीवन में जो सहज नदी समान प्रवाह होना चाहिए वह नहीं हो पाता और मनुष्य रोग, शोक, दुख, आदि प्रभावों से घिर जाता है। भौतिकता के प्रभाव में मानव का चेतन मन तर्क, विचार और संशयों की गिरफ्त में फंस कर अचेतन (आन्तरिक) मन की उपेक्षा कर बैठता है। यही कारण है कि आज कल नर्वस ब्रेक डाउन अर्थात् स्नायविक दुर्बलता अक्सर देखने को मिलती है। स्नायु तंत्र चेतन मन के पूर्ण प्रभाव के कारण इतना अधिक कमजोर हो जाता है कि मनुष्य हर पल भयग्रस्त, चिन्ता ग्रस्त व परेशान रहता है और उसके सामने बहुत कुछ होते हुए भी उसे प्राप्त नहीं कर पाता। ये सब अस्थिरता के ही लक्षण हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि मानव शरीर में मस्तिष्क का स्थान सर्वोपरि है। यह मस्तिष्क ही है जो हमें पशु जीवन से अलग करता है। यह मानव मस्तिष्क अपने आप में असीम क्षमताओं को समेटे हुए है। यह अलग बात है कि हम इन अधिकांश क्षमताओं से स्वयं को वंचित किये बैठे हैं। आधुनिक शल्य विज्ञान भी पूरे मस्तिष्क को खोजने के
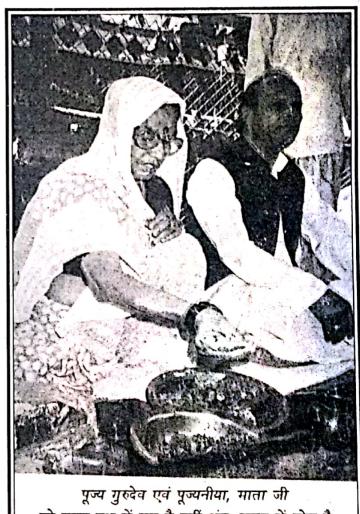
पूज्य गुरुदेव एवं पूज्यनीया, माता जी
जो बाह्य पक्ष में यज्ञ है वहीं अंतः करण में योग है

जब मात्र एक प्रतिशत सक्रिय हिस्सा मनुष्य को महान् वैज्ञानिक, आविष्कारक, चिकित्सक, संगीतज्ञ या कवि बनाने में समर्थ है तो उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब सम्पूर्ण मानव मस्तिष्क सक्रिय हो जाये।

बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि हमारा मस्तिष्क असंख्य छोटी २ तंत्रिक कोशिकाओं का समूह है, पर इनमें से केवल एक प्रतिशत कोशिकाएं ही जाग्रत हैं, और इस थोडे सक्रिय भाग से ही मानव अपनी सम्पूर्ण जीवन क्रिया सम्पादित कर लेता है।

मस्तिष्क की क्रियाशीलता

वास्तव में ही यह एक आश्चर्य का विषय है। जब मात्र एक प्रतिशत सक्रिय हिस्सा मनुष्य को महान वैज्ञानिक, आविष्कारक, संगीतज्ञ, चिकित्सक या कवि बनाने में समर्थ है तो उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब सम्पूर्ण मस्तिष्क सक्रिय हो जाये। निश्चय ही वह व्यक्ति अलौकिक कहलाएगा, उसकी तो कोई तुलना ही नहीं हो सकती। अतीन्द्रिय क्षमताओं का भी यही रहस्य है। जितने भी हम चमत्कारी पुरूषों, योगियों या सन्यासियों के सम्पर्क में आते हैं, उनके मस्तिष्क का कुछ भाग आम व्यक्ति की तुलना में अधिक सक्रिय होता है जिसके फलस्वरूप वे अतीन्द्रिय शक्ति सम्पन्न हो जाते हैं।

मस्तिष्क का पिछला सिरा लम्बा व पतला होकर सुषुम्ना के रूप में मेरूदण्ड के भीतर से गुजरता हुआ मूलाधार क्षेत्र पर समाप्त होता है। सुषुम्ना के दोनों पार्श्वों से नि:सृत हो तंत्रिका तन्तु पूरे शरीर में जाल बन फैल जाते हैं। सम्पूर्ण देह में मस्तिष्क द्वारा प्रसारित ज्ञान तथा क्रिया एवं आज्ञाओं के जाने का मुख्य मार्ग सुषुम्ना ही है। ज्ञान प्रधान मस्तिष्क और भावप्रधान हृदय अपने ज्ञान को क्रियान्वित करने के लिए विशेष रूप से 'सुषुम्ना मार्ग' का प्रयोग करते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि मस्तिष्क की अतीन्द्रिय क्षमता का विकास कैसे किया जाये? इसके लिए सर्वप्रथम हमें अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण प्राप्त कर विचार शून्यता की स्थिति प्राप्त करनी होगी, और ध्यान योग इसका सर्वाधिक सुगम उपाय है। यहां पर ध्यान और धारणा में विभेद स्पष्ट होना चाहिए। धारणा में व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति को एक विशेष दिशा में प्रसारित करता है जबकि ध्यान में व्यक्ति अपने चारों तरफ बिखरी प्राकृतिक परमात्म शक्ति को अपने अन्दर समाहित करता है।

सक्रिय ध्यान

इस ध्यान योग के पांच चरण हैं और प्रत्येक चरण केवल दस मिनट का है। इस प्रकार मात्र एक घण्टा प्रतिदिन व्यतीत कर आप अपने जीवन में चेतना का नया अध्याय खोल देते हैं, एक ऐसे मार्ग की ओर बढ़ते हैं जिसमें आनन्द है, तेज है, शक्ति, स्वस्थता है, शान्ति है और एक नवीन दृष्टि है।

यह प्रक्रिया प्रातःकाल की सन्धि में करने से अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होती है क्योंकि उस समय मस्तिष्क के सभी तन्तु, सभी नाड़ी केन्द्र अत्यन्त ग्रहणशील अवस्था में होते हैं, और एक विशेष लयबद्ध राग वायुमण्डल में व्याप्त रहता है। इस समय आरोपित किये गए सभी विचार प्रबल होकर जीवनी शक्ति को जाग्रत कर देते हैं।

प्रथम चरण में आंखें बंद कर पूरी शक्ति से तेज गहरे श्वांस लेना प्रारम्भ करें। इसमें किसी प्रकार की रूकावट न हो। इसमें पूरी शक्ति लगाएं और केवल श्वास का आना और जाना ही स्मरण रहे। बाकी सब भूल जाएं। धीरे-धीरे यह एक सहज गति बन जाएगी।

द्वितीय चरण में मन के सभी भावों को विमुक्त कर दें। मन में किसी प्रकार का बन्ध न रहे। दस मिनट तक रोना, हंसना, चीखना आरम्भ कर दें और शरीर या मन को इस कार्य में बाधक न बनायें। आन्तरिक भाव, दु:ख, आवेग, जिस रूप में भी प्रकट होना चाहते
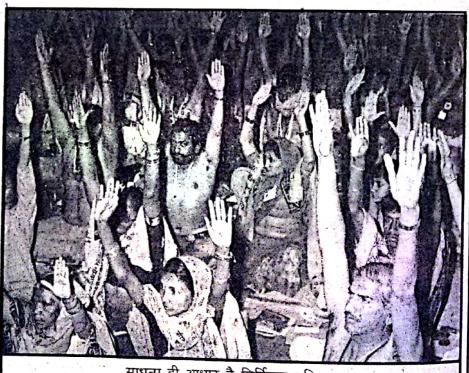
साधना ही आधार है निर्विचार मस्तिष्क का

वक्त तो दो ही कठिन गुजरे हैं सारी उम्र में।
इक तेरे आने से पहले, इक तेरे जाने के बाद।।

आर. एन. खन्ना - लखनऊ

गर्भ स्थित बालक की कुंडलिनी जागरण

"कुण्डलिनी जागरण" गर्भस्थ प्रक्रिया भी है, जब गर्भस्थ शिशु ४-५ महीने का हो जाय, तब उस गर्भस्थ बालक की कुण्डलिनी जाग्रत कर उसे बुद्धिमान मेधावी, चतुर, इंजीनियर, डॉक्टर, योगी और किसी भी क्षेत्र का श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाया जा सकता है, यह हजारों बार आजमाया है, और शत् प्रतिशत सफलता मिली है, अभिमन्यु की गर्भस्थ कुंडलिनी चेतना इसी का उदाहरण है।"

हैं, होने दें। श्वास की प्रक्रिया भी चालू रखें।

तृतीय चरण में दोनों भुजाएं ऊपर उठा कर पंजों के बल खड़े हो जायें और उसी स्थान पर एकाग्रता से उछलते हुए 'हुं' अन्तर मन से करें। शक्ति का प्रवाह आरम्भ होगा तथा इसको और अधिक तीव्रता से करें। इस कार्य में आनन्द का अनुभव करें।

चतुर्थ में सब आवाजें, सब क्रियाएं और गति बन्द कर दें, उसी स्थान पर शान्त, निश्चेष्ट होकर स्थिर हो जायें मानो शरीर में कुछ है ही नहीं। स्वयं को व्यवस्थित करने का प्रयत्न न करें। एक शून्यता, शान्ति जो भीतर समा रही है, उसे अनुभव करें। यह शून्य ही शक्ति का स्रोत है।

पंचम चरण में अपने भीतर जो शान्ति, मौन, आनन्द प्राप्त हुआ है, उसे प्रकट करने के लिए नाचे और गाएं, उत्सव का अनुभव करें। रोम, रोम में आनन्द को बहने दें। स्वयं को नियंत्रित न करें, पूरी तरह खुला छोड़ दें।

ध्यान प्रक्रिया के लाभ :-

१. यह ध्यान प्रक्रिया सुषुप्त कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत तथा उर्ध्वमुखी कर सहस्रार (मस्तिष्क) की ओर गतिशील करती है।

२. यह प्रक्रिया अन्तः ऊर्जा को बाह्य विराट ऊर्जा से जोड़कर मानव व्यक्तित्व का आमूल रूपांतरण कर देती है।

३. इससे मस्तिष्क पर भली प्रकार नियंत्रण प्राप्त हो जाता है और व्यक्ति अपनी दसों इन्द्रियों पर संयम रख सकता है।

४ शरीर की जड़ता, आलस्य, रोग, न्यूनता और बन्धन समाप्त हो जाता है और व्यक्ति चैतन्य, स्फूर्तिवान व वेगवान हो जाता है।

५. विद्यार्थियों के शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास के लिए यह विलक्षण प्रयोग है।

६. ध्यान की गहराइयों में जाने से पहले इसका अधिकतर प्रभाव शारीरिक व्याधियों एवं मानसिक विकृतियों के रेचन व शोधन में होता है।

७. इससे साधक के चैतन्य मन व अन्तर मन में विशेष सामंजस्य बन जाता है जिससे साधक अपने मस्तिष्क को नियन्त्रित कर अपने निर्णय ले सकता है एवं स्थिर चित्त से अपनी सभी शक्तियों का उपयोग कर सकता है।

८. साधक इच्छा शक्ति का प्रबल स्रोत बन जाता है और अपने अन्दर आनन्द, सुख, आरोग्य, उत्साह, श्रद्धा, भक्ति एवं सामर्थ्य की भावना का संचार करने में समर्थ हो पाता है।

वस्तुतः कुण्डलिनी जागरण द्वारा अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण प्राप्त करके ही हम अतीन्द्रिय क्षमताओं का विकास कर सकते हैं। समाज के नव निर्माण मे अमूल्य योगदान दे सकते हैं और आत्म साक्षात्कार कर देवत्व के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।

मानव शरीर ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। संसार की समस्त शक्तियां व्यष्टि रूप से मानव मस्तिष्क में ही विद्यमान हैं, आवश्यकता है तो उर्जा के इस अगाध स्रोत को जाग्रत करने की और यह कार्य कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया से भली भांति संभव है।

"इस युग में पूर्णता एवं श्रेष्ठता से कुण्डलिनी जागरण पूज्य गुरुदेव के द्वारा ही संभव है।"

- योगी हरिनाथ

आपके इस एक शरीर में छुपे हैं सात-सात शरीर !!

हम बस एक शरीर नहीं है, सात शरीर हैं। निर्वाण देह की उस देह शून्यता तक पहुंच कर धन्य हो जाइये।

हमारे स्वयं के व्यक्तित्व में ही छिपा हुआ कोई सूक्ष्म केन्द्र है जहां से परमात्मा को अनुभव किया जाता है, जहां से सत्य की झलक मिल सकती है, जहां से पहली बार दिव्य संगीत फूटता है, जहां से अनिवर्चनीय सुगन्ध प्रस्फुटित होती है, जहां परम स्वतन्त्रता है और जहां आनंद के अतिरिक्त कुछ नहीं है। लेकिन उस केन्द्र तक हमारी जीवन धारा नहीं जा पाती, कहीं नीचे ही अटक कर रह जाती है।

जिस केन्द्र मैं बात कर रहा हूं वह हमारे मस्तिष्क में सोया हुआ पड़ा है। इसे ही हम 'सुपर सेंस', 'अतीन्द्रिय - इन्द्रिय', 'छठी इंद्रिय' या 'तीसरी आंख' कह सकते हैं। यदि यह केन्द्र खुल जाये तो हम जीवन को नये अर्थों में देखेंगे।

पदार्थ अपना अस्तित्व खो बैठेगा और परमात्मा प्रकट होगा। आकार विलीन हो जाएगा और निराकार प्रकट होगा। मृत्यु समाप्त हो जाएगी और अमृतत्व के द्वार खुल जाएंगे। लेकिन वह केन्द्र कैसे सक्रिय हो?

हमें मात्र अपनी जीवनधारा को, अपनी ऊर्जा को उस केन्द्र तक पहुंचाने का ही प्रयास करना है। यह जीवनी-शक्ति (जो जननेन्द्रिय के पास कुण्ड की भांति अवस्थित है) ही कुण्डलिनी के नाम से प्रसिद्ध है। कुण्डलिनी स्वयं में एक ऐसी शक्ति है जिसे वर्णित करने के लिए विद्वानों ने देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार निकटतम रूपक प्रयोग किये हैं। कहीं उसे नारी-पुरूष की संयोजित सत्ता का रूप देने के लिए अर्धनारीश्वर की कल्पना की है तो कहीं उसकी सर्प वृत्ति का ध्यान करके (साढ़े तीन कुंडली मारे) सर्प की संज्ञा दी है। आज के परिपेक्ष्य में हम इसे एक प्रकार विद्युत शक्ति मान सकते हैं जिसे विभिन्न प्रकार के सात्विक, राजसिक और तामसिक कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

सामान्यत: यह दिव्य शक्ति प्रसुप्त अवस्था में ही रहती है परन्तु योग्य गुरू के निर्देशन में इसे जाग्रत किया जा सकता है। इसका जाग्रत होना एक नवीन व्यक्तित्व का सृजन करता है। इस ऊर्जा के भी दो रूप है - अगर यह अधोगामी होकर शरीर की ओर बहे, तो यह काम शक्ति (सेक्स) बन जाती है पर यदि यह उर्ध्वमुखी होकर आत्मा की तरफ बहे तो कुण्डलिनी बन जाती है।

कुण्डलिनी की यह अन्तर्यात्रा स्थूलतम आधार से प्रारम्भ होकर सूक्ष्म सूक्ष्मतर होती हुई सूक्ष्मातिसूक्ष्म का भी अतिक्रमण कर परमसत्य तक पहुंचाती है। इस साधना की उच्चावस्था में योग के अनेक आयाम और विविध प्रक्रियाएं भी समाहित हो जाती हैं, इसीलिए यह साधना 'सिद्धयोग' और 'महायोग' नाम से भी जानी जाती है। कुण्डलिनी साधना आंतरिक रूपान्तरण और जागरण की वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें अस्तित्व रूपान्तरण घटित होता है।

हमारी पूरी जीवन व्यवस्था पांच-छह फीट की है क्योंकि इतना ही फासला है कुण्डलिनी के निवास स्थान एवं गन्तव्य के मध्य। परन्तु

यह जीवन बस चार-पांच फीट की ही यात्रा है, कुण्डलिनी के उद्गम से लेकर गन्तव्य के मध्य फिर यही दूरी समस्त ब्रह्माण्ड को नाप लेने की यात्रा भी है।
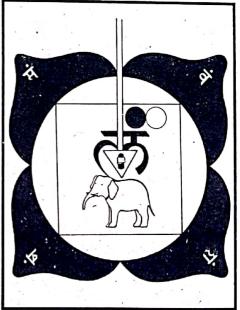
दूसरे अर्थों में यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की यात्रा है। यह यात्रा निज (इन्डीविजुअल) से प्रारम्भ होकर परम (एब्सोल्यूट) पर समाप्त होती है।

इस उपलब्धि के लिए साधक को स्वयं के भीतर ही यात्रा करनी होती है, स्वयं के अस्तित्व के साथ ही श्रम करना होता है और अपने ही भीतर के सुषुप्त चेतना केन्द्रों की शक्तियों को जाग्रत करना होता है। वस्तुतः कुण्डलिनी मनोगत अस्तित्व है अतः इस यात्रा को समझने के लिए हमें सर्वप्रथम मानव के विभिन्न सूक्ष्म शरीरों की रचना को समझना अत्यंत आवश्यक है। मूलतः मानव व्यक्तित्व को सात शरीरों में विभक्त किया जा सकता है।

१. स्थूल शरीर (फिजिकल बॉडी)

जीवन के पहले सात वर्ष में भौतिक शरीर ही निर्मित होता है। यह पशु स्वरूप होता है। इसमें कोई बुद्धि, कोई भावना, कोई कामना विकसित नहीं होती। कुछ व्यक्ति भौतिक शरीर पर ही रूके रहते हैं।

२. आकाश शरीर (ईथरिक बॉडी)

दूसरे सात वर्षों में आकाश शरीर का विकास होता है। ये वर्ष व्यक्ति के भाव जगत के विकास के वर्ष हैं। १४ वर्ष की उम्र में इसीलिए यौन परिपक्वता उपलब्ध होती है। यह भाव का एक प्रगाढ़ रूप है।

३. सूक्ष्म शरीर (एस्ट्रल बॉडी)

तीसरे सात वर्षों में सूक्ष्म शरीर विकसित होता है। इस शरीर में तर्क, विचार एवं बुद्धि का समावेश होता है इसीलिए विश्व के अधिकांश देश २१ वर्ष के व्यक्ति को मताधिकार देते है। जहां पहले एवं दूसरे शरीर प्रकृति के पूर्ण सहयोग से विकसित होते हैं वहां तीसरे शरीर का विकास शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता के योगदान से होता है।

४. मनस शरीर (मेंटल बॉडी)

चौथे शरीर के अत्यन्त अनूठे अनुभव हैं। कुण्डलिनी वस्तुतः चौथे शरीर की ही घटना है इसीलिए मैंने मनोगत कहा है। एक कुशल सर्जन भी, पूरे शरीर को खोलने के बाद, कुण्डलिनी या इसके चक्रों को नहीं देख सकता, क्योंकि चौथा शरीर सूक्ष्म है, उसे पकड़ा नहीं जा सकता, परन्तु इस मनस शरीर एवं प्रथम

पूज्य गुरुदेव द्वारा कुण्डलिनी की गूढ़ विवेचना

शरीर के तालमेल से पड़ते हुए स्थान है, और इसीलिए हम इन चक्रों से सम्बन्धित बिन्दुओं का पता स्थूल शरीर पर भी लगा सकते हैं।

५. आत्म शरीर (स्प्रिचुअल बॉडी)

इसे अध्यात्म शरीर भी कहा गया है। यह ३५ वर्ष की अवस्था तक विकसित हो जाना चाहिए। परन्तु चौथे शरीर में कुण्डलिनी जाग्रत होने पर ही पांचवे में प्रवेश हो सकता है। ऐसा व्यक्ति आत्मवादी होता है। मोक्ष भी पांचवें शरीर की ही अवस्था का अनुभव है।

६. ब्रह्म शरीर (कॉस्मिक बॉडी)

यदि मानव जाति वैज्ञानिक ढंग से विकास करे तो छठें शरीर का सहज विकास ४२ वर्ष तक हो जाना चाहिये। छठें शरीर पर मोक्ष के भी पार ब्रह्म की संभावना है। परम अस्तित्व को छठवें शरीर पर और छठवें केन्द्र से ही जाना जा सकता है।

७. निर्वाण शरीर (बॉडीलेस बॉडी)

यह सातवां शरीर देहशून्यता की अवस्था है, जहां कुछ है ही नहीं, जहां परम शून्य है, वह निर्वाण है। निर्वाण काया का तात्पर्य है – शून्य काया, इसीलिए सातवां शरीर सही अर्थों में महामृत्यु है। इस अवस्था को प्राप्त करना ही मानव जीवन की सार्थकता एवं पूर्णता है।

स्त्री एवं पुरूष का भेद मात्र चार शरीरों तक ही सीमित है। पांचवा शरीर (आत्म शरीर) यौन भेद से परे है। विद्युतीय दृष्टि से पुरूष का प्रथम स्थूल शरीर धनात्मक है लेकिन चूंकि किसी भी ध्रुवका स्वतंत्र अस्तित्व असंभव है अतः पुरूष का दूसरा अर्थात भाव शरीर ऋणात्मक होता है। स्त्री के साथ विपरीत स्थिति है। उसका प्रथम शरीर तो ऋणात्मक है परन्तु दूसरा शरीर धनात्मक है। दूसरे शब्दों में प्रत्येक पुरूष के पास स्त्री शरीर है और प्रत्येक स्त्री के अन्दर पुरूष शरीर भी विद्यमान है।

कुछ हसीं ख्वाब और कुछ आंसू
मेरी उम्र भर की यही कमाई है।

वेदानन्द झा – देवघर

तांत्रोक्त गुरू साधना

तन्त्र साधनाओं में गुरू को आधार माना गया है, गुरू ही शिष्य को तन्त्र का पूरा ज्ञान करा सकता है, उसका प्रायोगिक ज्ञान दे सकता है, जिससे शिष्य अपने मार्ग में कहीं भटक न जाए और लाभ के स्थान पर अपनी हानि न कर बैठे।

अत: तन्त्र साधना में इच्छुक साधक को कम से कम महीने में एक बार अपने स्थान पर गुरू का तान्त्रोक्त पूजन अवश्य करना चाहिए यह साधना तन्त्र की है अत: पूजन भी पूर्ण तान्त्रोक्त विधि से सम्पन्न होना चाहिए।

समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन गुरू से ही होता है, भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व के सभी मार्गों एवं सम्प्रदायों में गुरू का पद सर्वोच्च रूप से स्वीकार किया गया है, यों तो सभी ग्रन्थों में गुरू को प्रमुखता दी गई है, परन्तु तन्त्र में तो गुरू को समस्त महाविद्या साधनाओं एवं अन्य देव-साधनाओं से भी सर्वोच्चता प्रदान की गई है, उन्हें भगवान शिव का साक्षात् स्वरूप माना गया है।

ऊँ संविद्रुपाय शान्ताय शंभवे सर्वसाक्षिणे।
सोमनाथाय महते शिवाय गुरवे नमः।।

'यामल तन्त्र' में गुरू, देवता और मन्त्र में कोई भेद नहीं माना गया है-

गुरूरेकः शिवः प्रोक्तः सोहं देवि न संशयः। गुरूस्त्वमपि देवेशि! मन्त्रोपि गुरूरूच्यते।। अतो मन्त्रे गुरौ देवे, न हि भेदः प्रजायते।।

देवता-गुरू मन्त्राणामैक्यं, सम्भावनन् घिया। तदा सिद्ध भवेन्मन्त्रः।।

'मुण्ड माला तन्त्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जो साधक गुरू, देवता और मन्त्र में भेद नहीं समझता तथा इन तीनों को परस्पर एक दूसरे का पूरक समझता है वही जीवन में पूर्ण सिद्ध साधक बन सकता है।

मन्त्रे वा गुरू-देवे वा न भेदं यस्तु कल्पते। तस्य तुष्टा जगद्धात्रौ, किन्न दद्याद् दिने-दिन।।

भगवान शिव ने स्वयं कहा है, कि हे देवी। गुरू ही एक मात्र शिव कहे गये है और मै वही हूं, इसमें कोई संदेह नहीं, तुम जगत जननी अम्बिका स्वरूपा हो और तुम भी गुरू, मन्त्र और दुर्गा हो, अतः मन्त्र गुरू और देवता में कोई भेद नहीं होता, इन तीनों की एकता भावना बुद्धि द्वारा करते रहने से ही मन्त्र सिद्ध होता हैं, जो साधक मन्त्र, गुरू और देवता में कोई भेद नहीं करता, उस पर जगदम्बा प्रसन्न होकर सब कुछ दे देती हैं।'

यही नहीं अपितु 'सुन्दरी तापिनी तांत्रिक ग्रन्थ' में स्पष्ट कहा गया है -

यथा घटश्च कलश्चः कुम्भश्चैकार्य-वाचका।
तथा देवश्च मन्त्रो व गुरूश्चैकार्थ-वाचका।।

अर्थात जिस प्रकार घट, कलश और कुम्भ तीनों का एक ही अर्थ होता है, उसी प्रकार मन्त्र देवता और गुरू तीनों एक ही अर्थ वाले हैं।

कुण्डलिनी के मूलाधारादि घटचक्रों में सर्वोपरि स्थान श्री गुरूदेव का ही नियत किया गया है, अधोमुख सहस्र-दल-पद्म-कर्णिकान्तगर्त मुणाल रूपी चित्रिणी नाड़ी से भूषित गुरू मन्त्रात्मक द्वादश-वर्ण (ह स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं) रूपी द्वादश दल पद्म में अ-क-थ आदि त्रिरेखा और ह-ल-क्ष कोण से भूषित कामकला, त्रिकोण में नाद बिन्दु रूपी मणि पीठ अथवा हंस-पीठ पर शिव स्वरूप श्री गुरूदेव का स्थान है।

जो साधना में पूर्णता चाहते हैं, जो सही अर्थों में सिद्ध योगी बनने की इच्छा रखते हैं, जो सम्पूर्ण प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने की भावना रखते हैं, उनके लिए तन्त्र मार्ग ही श्रेष्ठ है, और तन्त्र में गुरू पूजा अत्यावश्यक मानी गई है, 'काली विलास तन्त्र' में स्पष्ट रूप से बताया गया है -

गुरू-पूजां बिना देवि, स्वेष्ट-पूजां करोति यः।

मन्त्रस्य तस्य तेजांसि हरते भैरवः स्वयम् ।।
पूजा-काले च चार्वंगिआगच्छेच्छिष्यमन्दिरम् ।
गुरूर्वा गुरूपुत्रो वा पत्नी वा वर वर्णिनि ।।
तदा पूजां परित्यज्य पूजयेत् स्वगुरू प्रिये ।
देवता-पूजनार्थ यद् गन्ध-पुष्पादिक चयत् ।।
तत्सर्व गुरवे दद्यात् पूजयेन्नग-नन्दिनि ।
तदैव सहसोदेवि! देवता-प्रीतिमाप्नुयात् ।।

अर्थात हे देवी! जो बिना गुरू पूजा किये अपने इष्ट या देवता का पूजन करता है, उसके मन्त्र का तेज भैरव हर लेते हैं, हे प्रिये! यदि इष्ट पूजन के समय में भी श्री गुरूदेव, गुरूपुत्र या गुरू-पत्नी शिष्य के घर आ जावें तो तत्काल इष्ट पूजन अथवा साधना क्रम उसी क्षण बीच में ही छोड़कर गुरूदेव की पूजा करें, देवता की पूजा के लिए जो भी सामग्री शास्त्रों में बताई गई है, उसी से गुरूदेव की पूजा करनी चाहिए और ऐसा करने पर ही इष्ट या देवता प्रसन्न होते है।

इस साधना में आगे जो सामग्री का विवरण आता है, उसी व्यवस्था साधक पहले कर ले - जल पात्र, गंगाजल, चन्दन, कुंकुम, केसर, अष्टगन्ध, अक्षत, पुष्प, बिल्व पत्र, दीप, मुख्य है, गुरू पूजा में अपने पूजा स्थान में हर समय गुरू चित्र अथवा मूर्ति अवश्य स्थापित करें, पच्चीस गुरू प्रसाद फल आवश्यक है, इनकी व्यवस्था भी कर लें।

अब नीचे दिये गये क्रमानुसार पूजा सम्पन्न करें, आवाहन के पश्चात् गुरूदेव को अपने शरीर के षटचक्रों में स्थापित करते समय कुण्डलिनी यन्त्र का पूजन करें।

तान्त्रोक्त विधि सबसे महत्वपूर्ण एवं एक विशेष क्रम से की जाने वाली विधि है, इस विधि में किसी प्रकार की सूक्ष्मता नहीं की जा सकती है, पूर्ण शास्त्रीय विधान आवश्यक है, सर्वप्रथम अपने सामने पूजा स्थान में एक अलग खण्ड बना लेना चाहिए जिसमें गुरू पूजा की सभी सामग्री रखी जा सके इस विशेष तांत्रोक्त सामग्री का बार-बार स्थान बदला नहीं जा सकता।

इस विशेष स्थान, जो विशेष ताक (आला या खण्ड) हो सकता है, में पूरे स्थान पर पीला वस्त्र बिछा दें इसकी दीवारों पर पीला वस्त्र अथवा कागज लगा दें, साधक साधिका के वस्त्र भी पीले हों, पूर्व दिशा को मुंह कर सम्पूर्ण पूजन करना है।

सर्वप्रथम तांत्रोक्त गुरू यन्त्र स्थापित करें, गुरू चित्र फ्रेम में मढ़वाकर लगा दें, गुरू के आगे षटचक्र कुण्डलिनी जागरण यन्त्र स्थापित करें, इस यन्त्र के नीचे अष्ट गन्ध से अपना नाम अवश्य लिख दें, अब गुरू ध्यान कर जिस क्रम में मन्त्र और सामग्री दी गई है उसी क्रम में पूजा करें।

गुरू ध्यान

द्विदल कमल मध्ये बद्धसंवित्समुद्रं ।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् ।।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति ।
शमिततिमिरशोकं श्रीगुरुं भावयामि ।।
हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्ति ।
ध्यायेद् गुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं सत्पुस्तिकाभीष्टवरं दधानम् ।।

आवाहन

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः ।
ॐ स्वच्छप्रकाश-विमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः ।
ॐ स्वात्माराम पंजरविलीन-तेजसे श्री परमेष्टि गुरवे नमः,
आवाहयामि पूजयामि ।।

षोडशी क्रम के अनुसार आवाहन के बाद गुरूदेव को अपने शरीर के षट् चक्रों में स्थापित करें।

श्री शिवानन्दनाथ परा-शक्त्यम्बा मूलाधारे स्थापयामि
श्री सदाशिवानंदनाथ चिच्छक्त्यम्बा स्वाधिष्ठान चक्रे स्थापयामि
श्री ईश्वरानंदनाथ आनन्द शक्त्यम्बा मणिपुर चक्रे स्थापयामि
श्री रूद्र-देवानंदनाथ इच्छा शक्त्यम्बा अनाहत चक्रे स्थापयामि
श्री विष्णु-देवानंदनाथ ज्ञान-शक्यम्बा विशुद्ध चक्रे स्थापयामि
श्री ब्रह्म-देवानंदनाथ क्रिया-शक्त्यम्बा सहस्त्रार चक्रे स्थापयामि

चन्दन अक्षत

निम्न नौं 'सिद्धोध' का उच्चारण करते हुए, गुरू के चरणों पर चन्दन अक्षत समर्पित करें।

ॐ उन्मानाकाशानन्दनाथ-जलं समर्पयामि
श्री समानाकाशानंदनाथ-गंगाजलं स्नान समर्पयामि
व्यापकानन्दनाथ-सिद्धयोगा जलं समर्पयामि
शक्त्याकाशानन्दनाथ-चन्दनं समर्पयामि
ध्वन्याकाशानन्दनाथ-कुंकुम समर्पयामि
अनाहताकाशानन्दनाथ-अष्टगन्धं समर्पयामि
विन्द्वाकाशानन्दनाथ-अक्षतं समर्पयामि
द्वन्द्वाकाशानन्दनाथ-सर्वोपचारार्थे समर्पयामि

पुष्प-बिल्व पत्र

अब गुरू यन्त्र, गुरू चित्र, एवं षट्चक्र जागरण यन्त्र पर पुष्प पर एवं बिल्व पत्र अर्पित करें।

दीप

श्री महादर्पनाम्बा सिद्ध ज्योति समर्पयामि
श्री सुन्दर्यम्बा सिद्ध प्रकाशं समर्पयामि
श्री करालाम्बिका सिद्ध दीपं समर्पयामि
श्री त्रिबाणाम्बा सिद्ध ज्ञान दीपं समर्पयामि
श्री भीमाम्बा सिद्ध हृदय दीपं समर्पयामि
श्री कराल्याम्बा सिद्ध सिद्ध दीपं समर्पयामि
श्री खराननाम्बा सिद्ध तिमिरनाश दीपं समर्पयामि
श्री विधीशालीनाम्बा पूर्ण दीपं समर्पयामि

नीराजन

इसके बाद ताम्र पात्र में जल, कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प लेकर गुरू चरणों में समर्पित करें -

श्री सोममण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री सूर्यमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री अग्निमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री ज्ञानमण्डल नीराजनं समर्पयामि
श्री ब्रह्मण्डल नीराजनं समर्पयामि

तत्पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प ले कर निम्न 'पंच पंचिका' उच्चारण करते हुए इन दिव्य महाविद्याओं की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें-

(१) **पंच लक्ष्म्यबा** : १. श्री विद्या-लक्ष्म्यम्बा, २. श्री एकाक्षर-लक्ष्मी लक्ष्म्यम्बा, ३. श्री महालक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, ४. श्री त्रिशक्ति-लक्ष्मी-लक्ष्म्यम्बा, ५. श्री सर्वसाम्राज्य लक्ष्मी लक्ष्म्यम्बा।

(२) **पंच कोशः** : १. श्री विद्या-कोशाम्बा, २. श्री परज्योति-कोशाम्बा, ३. श्री परि-निष्फल-शाम्भवी-कोशाम्बा, ४. श्री अजपा-कोशाम्बा, ५. श्री मातृका कोशाम्बा।

(३) **पंच कल्पलता** : १. श्री विद्या कल्पलताम्बा, २. श्री त्वरिता कल्पलताम्बा, ३. श्री परि-ज्ञातेश्वरी कल्पलताम्बा, ४. श्री त्रिपुटा. कल्पलताम्बा, ५. श्री पंचबाणेश्वरी कल्पलताम्बा।

(४) **पंच कामदुघः** : १. श्री विद्या-काम दुधाम्बा, २. श्री अमृतपीठेश्वरी कामदुधाम्बा, ३. श्री सुधांसु कामदुधाम्बा, ४ श्री अमृतेश्वरि-कामदुधाम्बा, ५. श्री अन्नपूर्णा कामदुधाम्बा।

(५) **पंच रत्नविद्या** : १. श्री विद्या-रत्नाम्बा २. श्री सिद्धलक्ष्मी-रत्नाम्बा, ३. श्री मातंगेश्वरी रत्नाम्बा, ४. श्री भुवनेश्वरी रत्नाम्बा, ५. श्री वाराही रत्नाम्बा।

उपरोक्त 'पंच-पंचिका' विश्व की श्रेष्ठ साधनाएं हैं और इन साधनाओं की प्राप्ति के लिए ही गुरूदेव से प्रार्थना की जाती है इसमें प्रत्येक साधना का उच्चारण कर 'प्राप्तिं प्रार्थयित्' बोलना चाहिए, उदारहण के लिये 'पंच लक्ष्म्य' में पहली साधना 'श्री विद्या लक्ष्म्यम्बा प्राप्तिं प्रार्थयित्' उच्चारण करना चाहिए, उसी प्रकार से अन्य स्थान पर भी उच्चारण करते हुए हर बार 'गुरू प्रसाद फल' अर्पित करना आवश्यक है।

श्री मन्मालिनी

अन्त में तीन बार श्री मन्मालिनी का उच्चारण करना चाहिए, जिसे कि गुरूदेव की शक्ति, तेज और सम्पूर्ण साधनाएं पूर्णता के साथ प्राप्त हो सकें।

ऊँ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोऽहं गुरूदेवाय नमः।

अन्त में हाथ जोड़कर गुरूदेव की प्रार्थना स्तुति करें -

लोक-वीरं महान्पूज्यं, सर्व-रक्षा-करं विभुम्।
शिष्य-हृदयानन्दं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्।।१।।
प्रि-पूज्यं विश्व-वन्द्यं विष्णु-शम्भोः प्रियं सुतम्।
क्षिप्र-प्रसाद-निरतं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्।।२।।
मत्त-मातंगं-गमनं कारूण्यामृत-पूरितम्।
सर्व-विघ्न-हरं देवं, शास्तारं प्रणमाम्यहम्।।३।।
अस्मत्-कुलेश्वरं देवं, अस्मच्छत्रु-विनाशनम्।
अस्मादिष्ट-प्रदातरं शास्तारं प्रणमाम्यहम्।।४।।
यस्य धन्वन्तरिर्माता, पिता रूद्रो भिषक्-तमः।
तं शास्तामहं वन्दे, महा-वैद्य दया-निधिम्।।५।।

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् गुरू आरती सम्पन्न करें और समर्पण करें, कि 'हे गुरूदेव! ये सब पूजन आपको ही समर्पित है अपनी कृपा बनाये रखें।'

आप, श्रेष्ठ साधक को महीने में कम से कम एक बार यह पूजन विधान अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

व्यक्ति को देवराज इन्द्र बना देती है राज्याभिषेक दीक्षा

चैत्र नवरात्रि १९९३ का पांचवा दिन। पूज्य गुरूदेव के मधुर सान्निध्य में चार दिन बीतने के बाद आश्वस्ति से और तृप्ति से भरे साधक अपने चेहरों के माध्यम से, नेत्रों के माध्यम से उल्लास छलकाते हुये। सभी लोग अपनी अपनी कल्पनाओं में खोये हुये कि देखें आज पूज्य गुरूदेव क्या कुछ घटित कर देंगे, पता नहीं क्या अप्रतिम दे डालेंगे।

दिन भर के मंत्र जप, गहन साधना के बाद तप की ऊर्जा, चेहरे पर भरे, गांभीर्य, और मधुरता में लबालब भरे साधक सांय कालीन सत्र में एकत्र हुए। पूज्य गुरूदेव अपने नियत समय पर पंडाल में पधारे। भाई शेर बहादुर सिंह एवं श्री भोला नाथ बाजपेयी ने अपने मधुर कंठों से उनकी अभ्यर्थना की। साधकों को इस अवसर पर संचालक श्री सुभाष सुहासरिया जी ने बताया कि आज पूज्य गुरूदेव ने निश्चय किया है कि वे अपने एक प्रिय शिष्य को राज्याभिषेक दीक्षा देंगे। राज्याभिषेक दीक्षा का नाम सुनकर सभी साधक चौंक से गये। जो नये थे उनके लिये तो यह प्रायः अपरिचित शब्द था औंर वरिष्ठ साधक आश्चर्य में डूब गये कि पूज्य गुरूदेव किस सहजता से इतनी उच्चकोटि की दीक्षा दे रहे हैं। वे अपने उस गुरूभाई से एक मीठी ईर्ष्या सी करने लगे कि उसने कौन सा ऐसा कार्य कर दिया जिससे पूज्य गुरूदेव उस पर रीझ उठे।

यह साधक हैं **लुधियाना के श्री रोजन जेम्स**। भिन्न मंतावलम्बी होने पर भी वे वर्षो से पूज्यगुरूदेव से जुड़े हैं, और केवल जुड़े ही नहीं अपितु सक्रिय भी रहे हैं। सेवा के क्षेत्र में भी, और साधना के क्षेत्र में भी। पूज्य गुरूदेव के समक्ष कभी भी जाति या मत को लेकर कोई अस्पष्टता रही ही नहीं। उनके इसी औदार्य की सुखद परिणति थी, **भाई रोजन जेम्स** की राज्याभिषेक दीक्षा।

मंगलाचरण एवं गुरूवंदन के पश्चात श्री जेम्स को पूज्यगुरूदेव के मंच के नीचे एक छोटा सा और

मंच बनाकर उस पर बैठाया गया। सचमुच ऐसी दीक्षा प्राप्त करने वाला वंदनीय तो होता ही है, और वह भी तब जब कि पूज्य गुरूदेव अपने प्राणों से उसे यह दीक्षा प्रदान कर रहे हों। भाई जेम्स को भी मंच पर आसीन कर उनका शास्त्रोक्त ढंग से पूजन आरम्भ हुआ, जिसे पूज्यगुरूदेव के वरिष्ठ सन्यासी शिष्य डॉ० राम चैतन्य शास्त्री जी ने प्रारम्भ किया। भाई जेम्स जी का पूजन, पवित्रीकरण करने के बाद दूसरा मुख्य चरण था, उनको विशिष्ट धर्म में अंगीकार करना, जिसके लिये उनको पंचगव्य सेवन कराया गया एवं अन्य शास्त्रोक्त क्रियायें संपन्न की गईं। पूज्यगुरूदेव ने अत्यन्त हर्षपूर्वक उन्हें इस अवसर पर नवीन नाम ''राजेन्द्र'' दिया एवं स्पष्ट किया कि वास्तव में वे भारद्वाज गोत्र के हैं। पूर्व जन्मों में वे भारद्वाज वंश के ही रहे हैं।

राज्याभिषेक दीक्षा

''राज्याभिषेक दीक्षा'' सम्पूर्ण जीवन का सौभाग्य है, हो सकता है आप गुरुदेव के साथ बीस साल रहे हों, उनके व्यक्तिगत् कार्यों में सहायक रहे हों, परन्तु यह अलग तथ्य है ... महत्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि आपने उनसे ''राज्याभिषेक'' या ''सम्राटाभिषेक'' दीक्षा ली है या नहीं ... और नहीं ली है तो आपके पास सब कुछ होते हुए भी आप दरिद्री है ... क्योंकि आपने धन-दौलत के रूप में कंकर-पत्थर तो इकट्ठे कर लिये, पर जगमगाता हुआ ''हीरा'' छोड़ दिया, राज्याभिषेक दीक्षा तो जीवन का ''हीरक खण्ड'' है।

-स्वामी चैतन्य तीर्थ

सभी उपस्थित साधक अपने एक बिछुड़े भाई को पुनः अपने मध्य पाकर उल्लसित थे जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने कई-कई बार ताली बजाकर एवं सम्पूर्ण वातावरण को पूज्य गुरूदेव एवं पूज्यनीया माता जी को जयजयकार से गुंजा कर की।

इन क्रमों के बाद महत्वपूर्ण अवसर आया जब पूज्य गुरूदेव ने दीक्षा का क्रम आरम्भ किया। समस्त साधक, शिष्य आंख फैलाये और सांसों को रोके हुए बैठ गये, उन अद्वितीय क्षणों को अपने अंदर उतारने के लिये, जो कुछ ही क्षणों बार साकार रूप लेने वाले थे। सर्व प्रथम पूज्य गुरूदेव ने विस्तार से गणपति पूजन वेदोक्त रीति से आरम्भ किया। सारा पंडाल दिव्य तेज से भर उठा। ऐसा लगने लगा कि हम सभी हजारों वर्ष पूर्व किसी सुरम्य स्थान पर चले गये हों। जैसे वेदव्यास बोल रहे हैं, और श्री गणपति ध्यान मग्न होकर लिख रहे हों, कुछ ऐसी ही दिव्यता और उदात्ता व्याप्त हो उठी थी। भाई जेम्स जो कि पूजन के समय ध्यानस्थ हो गये थे, उन्होंने बाद में बताया कि ठीक उन्हीं क्षणों में उनके अंदर इतना अधिक तेज भर गया कि लगा कि उनका शरीर शायद सह नहीं पायेगा, यद्यपि वह तेज पीड़ादायक भी नहीं था। इच्छा हो रही थी कि काश! उस तेज को शरीर की अंतिम सीमा तक जाकर ध ारण कर लूं। जब तेज का प्रवाह कुछ कम हुआ तो उन्होंने अपने सामने श्री गणपति जी को स्पष्ट रूप से मंद मंद मुस्कराते पाया। देवगण भी हर्षित हो उठते हैं जब कोई श्रेष्ठतम ऋषि उनका पूर्णता से आह्वाहन कर सकें और श्रेष्ठतम शिष्य हों जिनकी देह के माध्यम से वे अपना प्रकटीकरण कर सकें। सारा पंडाल आंख बंद कर निस्तब्ध था, प्रत्येक साधक और साधिका अपनी अपनी पात्रता के अनुसार व्यक्त या अव्यक्त रूप में किसी दिव्य तेज का पान कर ही रहा था। यह तेज अलौकिक था, अनूठा था। संसार के भोगे हुए सभी सुखों अलग था। इसमें उत्तेजना नहीं थी, वरन जीवन की एक आश्वस्ति थी, किसी उच्चता की ओर इंगित था तथा प्राणों का संगीत तो था ही।

श्री गणपति पूजन के उपरांत पूज्य गुरूदेव ने विभिन्न देवी देवताओं का आह्वाहन पूजन एवं उनका श्री राजेन्द्र भाई के देह में स्थापन किया। राज्याभिषेक का तात्पर्य बताने

की संभवत: आवश्यकता नहीं। आवश्यकता तो इस बात की थी कि कोई युग पुरूष उसे फिर से जीवित करें और यही क्रम घटित हुआ। राज्याभिषेक दीक्षा पाने के उपरांत व्यक्ति साधारण मानव रह ही नहीं सकता क्योंकि इस दीक्षा के माध्यम से न केवल उसे नया नाम, गोत्र मिलता है वरन आने वाले दिनों में उसका सम्पूर्ण स्वरूप, उसका कद, काठी, रंग, बोलचाल उठने-बैठने की अदा सभी कुछ बदल जाती है। उसका वैभव साधारण मनुष्य की श्रेणी से उठकर देवराज इन्द्र के समतुल्य हो जाता है।

शास्त्रोक्त ढंग से राज्याभिषेक दीक्षा देने के उपरांत पूज्य गुरूदेव ने कृपा पूर्वक भाई राजेन्द्र जी पर शक्ति पात भी किया। शक्तिपात का दृश्य अपने आप में अनूठा था। सैकड़ों साधकों के मध्य उन्होंने राजेन्द्र जी के आज्ञाचक्र पर अपने अंगूठे का स्पर्श किया, तथा लगभग पांच सेकण्ड के बाद भाई राजेन्द्र तेज की अधिकता सह न पाने के कारण अचेत से हो गये। कुछ क्षणों बाद जब वे सामान्य हुए तो अश्रु पात करने के अतिरिक्त उनके पास कोई दक्षिणा ही नहीं थी। उन्होंने सम्पूर्ण क्रम को अपने अंदर एक एक क्षण अनुभव किया था और इसी से वे समझ गये थे कि इस दीक्षा का कोई भी प्रतिदान दिया ही नहीं जा सकता, न कोई सेवा न कोई मूल्य। वे अपने को पुन: अपने ही परिवार में पाकर भावों में भीग गये थे।

उपस्थित सभी साधक तालियां बजाकर उनका स्वागत कर रहे थे उनका अभिनंदन कर रहे थे। पूज्यगुरूदेव ने अपने आर्शीवाद में उनके नूतन जन्म पर उन्हें बधाई दी उन्हें समाज में नेक कार्यों का सूत्र पात करने की आज्ञा दी। पूज्यगुरूदेव ने अपनी हार्दिक इच्छा प्रकट की कि काश कुछ ऐसे ही व्यक्ति सामने आएं जिनके अन्दर पात्रता हो, और जिन्हें वे इसी प्रकार की उच्चकोटि की दीक्षाएं देकर समाज में नवीन युग का सूत्रपात कर सकें।

फिर आये दिन वसंत के

आ ही गया फिर से यह पर्व जिसकी प्रतीक्षा थी। प्रतीक्षा तो पिछली आश्विन नवरात्रि के बाद से ही प्रारम्भ हो गई थी, और सच बताऊं इस चैत्र नवरात्रि के बाद आश्विन नवरात्रि की प्रतीक्षा शुरू हो जायेगी। यह तो एक अविछिन्न क्रम बन गया है, गुरुधाम आ चुके साधकों का, न तो वे थक रहे हैं, अमृत को पीते-पीते और गुरुदेव तो भला क्यों कर थकने लगे अमृत पिलाने में। साधना, सिद्धियां, मंत्र जप तो गौण हो चले। कहीं दूर क्षितिज में विलीन हो गये। अब तो सामने एक स्वच्छ आकाश फैला रह गया है, मस्ती का, आत्मीयता का, उच्चता का और हृदय की उमंगों के विस्तार का। अब तो पूज्यगुरुदेव के शिष्य हंस बन चुके हैं, अपने पंख फैला चुके हैं। जैसे छोटा बच्चा धूप में जब पालने में लिटा दिया जाता है तो वह कुनमुना-कुनमुना कर मुठ्ठियां भींचता है, पैर फेंकता है, अंगड़ाइयां लेता है, और आंखों को हौले से खोलता है, इस जग को निहारता है, उसे सब कुछ नया-नया लगता है। ऐसे ही अब साधक अंगड़ाइयां ले रहे हैं, उन्हें कोई भय-चिन्ता तो है ही नहीं। उन्हें हर बार आंख खोलने पर अपने सामने मुस्कराते पूज्य गुरुदेव दिखते जो हैं। माँ सदृश्य।

यह तो अब जीवन के किसी और क्रम पर निकल पड़े हैं। अब एक छोटे तालाब नहीं रह गये हैं, अब ये बाड़ों में बंधी लतायें नहीं रहीं। इनमे पुष्टता आ गई है। जैसे पुष्ट हो गई लताएं जमीन पर बिखर कर आगे बढ़ती हैं, जैसी उनमें कुछ कोमलता कुछ लचकता हो, वैसे ही पूज्य गुरुदेव के शिष्य बन गये हैं, और ये लताओं को तरह से रेंगते हुए सारी धरा पर बिखर से रहे हैं, यही तो पूज्य गुरुदेव ने इन्हें बनाना चाहा था।

छोटा सा संदेश लेकर के वे आये प्रेम का। उन्होंने कहा मेरी उपस्थिति का यही अर्थ है, मेरे होने का यही उत्स है। तुम इसी में डूबकर उत्सवमय बन जाओ। यह जीवन बहुत छोटा सा है, इसमें वेदनाओं के लिये स्थान न रहे, ऐसा मत करो कि तुम्हारा जीवन दिन-रात
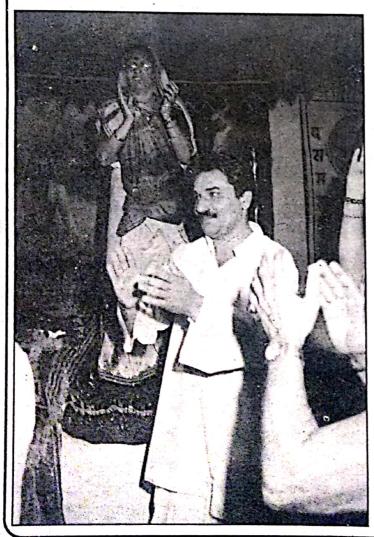
का संघर्ष बन कर ही रह जाय। तुम आओ मुझसे मिलो, और जीवन की लय को प्राप्त करो। पूज्य गुरुदेव ने ऐसी कोई जटिल बात कही ही नहीं कि मैं तुम्हें ब्रह्म का साक्षात्कार करा दूंगा, तुम्हें जीवन से मुक्ति दे दूंगा, उनके अनुसार ये तो फिर जीवन में बहुत आगे की

बातें हैं। पहले तो हम जो क्षण हमारे पास हैं उन्हें जीना सीख लें। यदि आज का ही क्षण हमारा व्यथा में गुजरा तो ब्रह्म पाकर भी हम क्या कर लेंगे? उनके संदेश में चुनौती है, दकियानूसी बातों पर आघात है, शास्त्रों को भी चुनौती है, समाज को झकझोरने की प्रक्रिया है। सर्वत्र एक प्रश्न है, और इन प्रश्नों के उत्तर तो जीवन के उत्तर हैं केवल गुरुदेव ही दे सकते हैं। वृक्ष के पास आ बैठें, वृक्ष कोई उपदेश नहीं देता, फूल कोई श्लोक नहीं उच्चरित करता, लेकिन हम आह्लादित हो उठते हैं, क्यों? क्योंकि उनमें लय है, यही लय पूज्य गुरुदेव में है, या यूं कहें कि उन्हीं की लय से इस प्रकृति में लय है। ये जो प्रकृति रंगो में सजी है न, यह उन्हीं परम पुरुष को तो रिझा रही है। सारा व्यापार उनको रिझाने का ही तो है।

पता नहीं इस जीवन में कौन किसको रिझा रहा है, गुरुदेव रिझा रहे हैं हम सभी को या हम सब रिझा रहे हैं उनको। यह नृत्य, यह संगीत, यह काव्य यह शब्द सब उनको रिझाना ही तो है। उधर वे रिझा रहे हैं हमको साधना देकर सिद्धियां देकर और जीवन की परिपूर्णता देकर। यही प्रेम का संसार है। इस जगत में "लेना" शब्द बना ही नहीं, यहां तो बस एक ही शब्द गढ़ा गया – "देना"। यही प्रक्रिया चल रही है इन साधना शिविरों मे। देना' केवल 'देना', और इतिहास के क्षण अंकित हो रहे हैं।

इस नवरात्रि के प्रथम दिन पूज्य गुरुदेव का आशीर्वचन हुआ। उन्होंने सम्पूर्ण नवरात्रि में क्या क्रम गतिशील रहेगा, इसको सभी साधकों को समझाया। दूसरा दिन रहा लक्ष्मी प्रयोग का जिसे पूज्यगुरुदेव ने नवीन व तांत्रोक्त ढंग से तांत्रोक्त नारियल पर संपन्न करवाया। प्रयोग साधकों के जीवन में उतर सके इस हेतु उन्होंने प्रारम्भ में लक्ष्मी दीक्षा भी प्रदान की। तृतीय दिवस पूज्य गुरुदेव शक्तिपात क्रिया के विषय में समझाते हुए पता नहीं किस बिन्दु की ओर जा ही रहे थे कि एक साधिका के व्यवधान से प्रवचन अधूरा रह गया। इस घटना का विवरण अन्यत्र दिया जा रहा है। चतुर्थ दिवस रहा महत्वपूर्ण और दुर्लभ **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** का। अनेक साधक इतनी तीव्र दीक्षा सहन सकने के कारण हल्के ज्वर से भी ग्रस्त हो गये किन्तु दूसरे ही दिन वे पुन: साधना की कर्मभूमि में थे। सभी साधक पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त **राज्याभिषेक** दीक्षा के साक्षीभूत बने और किन्हीं अंशों में उन्होंने भी इस दीक्षा के फल को प्राप्त किया, क्योंकि पूज्यगुरुदेव ने पहली बार रहस्योद्घाटन किया कि दीक्षा एकांत में दी जाने वाली प्रक्रिया ही नहीं। जब यह ऐकांतिक घटना नहीं है तो सभी इसके पुण्य के भागी स्वत: हो ही उठे। इसी पांचवें दिन प्रात: कालीन सत्र में **'महाकाली दीक्षा'** प्रदान कर पूज्यगुरुदेव ने उसका मानव जीवन में केवल आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता को रेखांकित किया।

लक्ष्मी साधनाएं या अन्य विविध

साधनाएं तो मात्र प्रक्रिया का स्वरूप हैं क्योंकि पूज्य गुरुदेव के हृदय में जो उत्कंठा है अपने शिष्यों को भौतिक अथवा आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से संपन्न करने की उसके लिये कोई प्रक्रिया तो अपनानी ही पड़ेगी। लम्बा मार्ग है साधना का, उससे छोटा है दीक्षा का, और सबसे छोटा है प्रेम का। यही बात समझ गये हैं पूज्य गुरुदेव के प्राण, उनके अलबेले-चतुर-चालाक शिष्य और ठोकर मारकर निकल गये हैं किसी विराट पथ पर। जहां फिर स्वच्छ प्रेम है, अपनत्व है, सभी को अपने हृदय से लगाने की चाह है, सभी की बाहों में खुद भी दुबक जाने की तड़फ है। ये व्यग्रता, ये तड़प, ये आत्मीयता पूज्यगुरुदेव की उपस्थिति का जीता जागता प्रमाण है। उन्होंने क्या प्रयोग संपन्न करवाये, उन्होंने कौन-सी दीक्षाएं दी, उनमें क्या सूक्ष्मता है, उनमें ज्ञान के कितने-कितने पहलू छुपे हैं, इसका विवेचन तो आने वाला युग करेगा। यह युग तो भीग गया है उनकी उपस्थिति से। जैसे कोई मतवाला पी ले तो फिर उसे होश किसका! किस मंत्र को ये युग समझे, जब गुरु का एक-एक शब्द मंत्र हो, किस तंत्र को समझे जब उनके गुरु की एक एक उठने-बैठने में कोई क्रिया होती हो।

किस अदा में बंध गये हैं गुरुदेव के शिष्य। कुछ तिरछे, कुछ तीखे, कुछ चुलबुले से हो उठे हैं उनके शिष्य। जो अपने गुरु की तरह ही सारे शरीर में हृदय ही हृदय भर उठे हैं। कभी कुछ कनखियों से कहते हैं कभी कुछ हौले-हौले इशारे हैं और कुछ दबी-दबी मुस्कराहट है। प्रेम का नशा ऐसे ही होता है। इसी नशे में पूरे जीवन को आसमान तक उछाल दिया जा सकता है। साधना भी तो इसी प्रेम में भीग कर पनपती है। नयनों के स्पर्श से जो हृदय सहलाये जाते हैं उसको तो कोई पूज्य गुरुदेव के पास आकर समझे। फिर तो कोई दवा चाहिए ही नहीं। किसके हृदय का कौन-सा तार कोमल है, किसका तार कहां से टूटा है, किसका तार कहां से ढीला है, वे सब जानते हैं। अनभिज्ञ रहकर वीणा को कसते है और बजने के लिये भेज देते हैं। उनकी ऐसी कई वीणाएं आज बज रही हैं जिनकी उपस्थिति से सारा वातावरण गुंजरित है, और परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी की जीवन्त उपस्थिति का ठोस प्रमाण हैं। अब वे एक नहीं रहे, सैकड़ों में बंट गये, हजारों में बंटने को आतुर हैं।

कामसूत्र की वह
रहस्यमयी साधिका

समूचा यूरोप पागल था उसकी एक झलक पाने की .... उत्तेजक नृत्य और रूप-सौन्दर्य के जादू से उसने अंगुलियों पर नचा रखा था पूरे विश्व को ....

और अपने मादक इन्द्रजाल में फंसाकर जो दोहरी जासूसी का रोमांचक खेल खेल रही थी, एक भीषण टकराव की स्थिति पैदा करने के लिये ....

आखिर कौन थी वह रूपसी? साक्षत विषकन्या की प्रतिरूप ....

पढ़िये भारतीय तंत्र रहस्यों को उजाकर करती एक रोमांचक दास्तान ....

पेरिस का प्रख्यात रंगमंच हॉल। दर्शकों की भयंकर भीड़, धक्का-मुक्की। समूचे पेरिस वासियों में तहलका सा मचा हुआ था। हर कोई उस रहस्य सुन्दरी की झलक का आकांक्षी था जो भारतीय तंत्र साधना का प्रदर्शन सर्वथा अनावृत होकर करने जा रही थी।

दक्षिण भारत की पृष्ठभूमि। रंगमंच पर चतुर्बाहु नटराज की भव्य, विशाल मूर्ति स्थापित थी। मोमबत्तियों की मध्यम रोशनियां, तीव्रतर होता वाद्य संगीत पूरे माहौल को रोमांचक और रहस्यमय बना रहा था। संगीत लहरियों के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते ही अंधेरे को चीरती हुई एक दैदीप्यमान रूपसी अपने सौन्दर्य का जादू बिखेरती हुई प्रकट हुई। एक पल तो दर्शकों की सांसे रूक सी गईं। भव्य श्रृंगार, दमकते मोतियों के आभूषण, लेकिन पूरा शरीर निवर्सन! वह देवदासियों सा नृत्य कर रही थी - लास्य और ताण्डव मुद्रा का मिश्रित स्वरूप। दर्शकगण मंत्र-मुग्ध से बैठे थे। नृत्य समाप्त होते ही पूरा हॉल करतल ध्वनियों और उत्तेजक चीख चिल्लाहटों से गूंज उठा।

लेकिन इससे भी पहले - ठीक अठ्ठाईस वर्ष पहले।

अभावग्रस्त बचपन

मार्गरिट नाम था उसका। हॉलैण्ड में जन्मी वह कन्या १३ वर्ष की उम्र में ही अनाथ हो गई थी। चाची के अत्याचारों से त्रस्त वह अक्सर भाग जाने की सोचती। १८ वर्ष की होते एक वैवाहिक विज्ञापन उसे रास आ गया और ३० मार्च १८९५ को उसने अपने से बीस वर्ष बड़े रूडोल्फ से प्रेम विवाह कर लिया।

शादी के बाद पति का अलग ही रूप देखने को मिला। शुरू-शुरू में तो उसके पशुवत् व्यवहार को मार्गरिट ने उसकी उद्दीप्त कामना के रूप में लिया पर बाद में उसे समझ में आया कि रूडोल्फ एक सैडिस्ट था - जिसे दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में असीम आनन्द मिलता था।

तभी रूडोल्फ का स्थानान्तरण जावा में हो गया। जावा पहंचते ही मार्गरिट का रूप और स्वास्थ्य भी निखर उठा, पर रूडोल्फ ने उसे लोगों की नजरों से छिपाने के लिये घर में कैद कर लिया। समय काटने के लिये उसने मलय भाषा सीखनी शुरू की। मलय भाषा का ही एक शब्द उसके जेहन में घर कर गया - यही शब्द भविष्य में उसकी पहचान बनने जा रहा था, समूचे विश्व को रोमांचित करने जा रहा था और वह रहस्यमय शब्द था - माताहारी अर्थात् सूर्योदय की आंखे।

रहस्यमय तंत्र साधना

भारतीय नृत्य और साधना से अत्याधिक लगाव हो गया था उसे। रूडोल्फ के घर से निकलते ही वह मन्दिरों में पहुंच जाती और शैव साधना पद्धति और हठयोग साधना का अध्ययन करती। उसके कुछ विशिष्ट गुरू भी

१. आज हर कोई उस रहस्यमयी सुन्दरी की झलक पाने को बेताब था जो सर्वथा अनावृत होकर भारतीय नृत्य का प्रदर्शन करने जा रही थी, जिसने जावा के मन्दिरों में रहकर तंत्र साधना सम्पन्न की थी और जिसका नाम फ्रांस के प्रत्येक व्यक्ति के होठों पर थिरक रहा था।

२. संगीत लहरियों के तीव्रतम होते ही अंधेरे को चीरती हुई वह सौन्दर्य साम्राज्ञी प्रकट हुई और एकदम से दर्शकों की सांसे रूक सी गई - उस धीमी रोशनी में भी उसके विभिन्न अंगों पर बेशकीमती मोती झिलमिला रहे थे, पर पूरा शरीर निर्वसन! उत्तेजक चीखों से वह विशाल हॉल गूंजने लगा।

३. भारतीय नगरवधुओं के व्यवसाय को अपना कर माताहारी ने हर प्रेमी का समय बांध रखा था। हर कोई समझता था कि माताहारी सिर्फ उसी की है। उसके दीवानों में जर्मनी के युवराज, फ्रांस के युद्ध मंत्री, गुप्तचर विभागाध्यक्ष, जर्मनी के विदेश मंत्री भी शामिल थे जिनको लम्बे अरसे तक बेवकूफ बनाकर वह उनकी अंकशायिनी बनी रही।

४. रहस्य, षडयन्त्र और गोपनीयता की जानकारी से संचित एक नगरवधु बन चुकी थी वह। अनजाने में ही उसे खतरों के ज्वालामुखी पर बिठा दिया गया था। किसी के भी रहस्य को उजागर करने का अर्थ था - मौत, कुत्ते से भी बदतर मौत।

थे जो उसे देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किये जाने वाले नृत्य, वात्स्यायनकृत कामसूत्र और कामकला का बकायदा प्रशिक्षण भी दे रहे थे। तंत्र साधनाओं और विशिष्ट धार्मिक क्रियाओं में खोई रहने वाली उस रूपसी का नाम अब माताहारी पड़ चुका था। तांत्रिक नृत्य में अद्वितीयता प्राप्त करने के उद्देश्य से माताहारी जिस मंत्र की साधना कर रही थी, वह मंत्र था -

मन्त्र

'ॐ इं ईं उं ऊं एं ऐं ह्लीं ह्लीं फट्।

अत्याधिक तेजस्वी मंत्र था यह। नित्य दस घण्टे नटराज के विग्रह के समक्ष बैठकर यह जप सम्पन्न करना था और साधना काल में अन्न ग्रहण करना भी वर्जित था, पर माताहारी पूरी क्षमता के साथ लगातार छ: माह तक इस कठिन तंत्र साधना को सम्पन्न करती रही। साधना समापित पर अनायास ही उसके कदम उठ पड़े और उसे स्पष्ट अनुभव हुआ कि भगवान शिव स्वयं उसके अंग प्रत्यंगों में समाहित हो कर लयबद्ध ताण्डव नृत्य सम्पन्न कर रहे हैं।

एक दिन वह भयंकर रूप से बीमार पड़ी। डाक्टरों के अथक प्रयास से उसे बचा तो लिया गया पर अब वह अत्यन्त कृशकाय हो चुकी थी। चौंकाने वाली बात तो यह थी कि भौतिक दृष्टि से कमजोर होने के बावजूद भी उसमें जैसे एक असीम शक्ति का संचार हो गया था। उसके एक धक्के से मजबूत से मजबूत पुरूष भी धड़ाम से गिर पड़ता था। उसके हाथों का एक थप्पड़ लोगों के होश गुम कर देता था। नाराज होते ही उसकी आंखें आग उगलने लगती और जब वह रणचण्डी का रूप धारण कर दहाड़ती थी तो रूडोल्फ भी कांप उठता था।

नृत्य का वह जादू

मार्गरिट के कायाकल्प से परेशान होकर रूडोल्फ ने अपना स्थानान्तरण यूरोप करवा लिया और यूरोप लौटते ही उसने न केवल पत्नी को तलाक दे दिया बल्कि उसकी बेटी को भी उससे छीन कर अलग रहने लगा। मार्गरिट को इससे गहरा सदमा लगा और असहाय अवस्था में वह पेरिस भाग आई।

पेरिस में तीन वर्ष की साधना के बाद उसने अपना प्रथम नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया और मात्र अगले ९ महीनों में ही पूरे फ्रांस में तहलका मचा दिया। इसके बाद तो उसके नृत्य का जादू पूरे यूरोप में व्याप्त हो गया। दूसरे देशों से उसके लिये निमंत्रण भी आने लगे।

लोगों की दीवानगी का आलम यह था कि फ्रांस के शहरों में सार्वजनिक स्थलों, फैशनेबल रेस्तराओं, रेसकोर्स और युवकों के शयनकक्ष में माताहारी की पेण्टिंग सजाई जाती। तस्वीर बनाने वालों की तो पांचों उंगलियां घी में थी। हर छोटा-बड़ा कलाकार उससे मिलने, उसकी फोटो बनाने के स्वप्न संजोता और उसके प्रशंसक तो रात दिन उसी की चर्चा में डूबे रहते।

दोहरी जासूसी का रोमांचक खेल

प्रशंसा के मायाजाल में आकण्ठ डूबी माताहारी ने रूप लोभी पुरूषों से अर्थ दोहन का एक नया मार्ग ढूंढ लिया था। वह कुछ गिने-चुने व्यक्तियों को अपने यहां मनोरंजन के भरपूर साधन उपलब्ध कराने लगी। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में तो उसका मनोरंजन केन्द्र सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्ध हो चुका था और

उसके मेहमानों में उच्च पदों पर आसीन सैन्य, पुलिस अधिकारी और राजनेता भी शामिल हो गये थे।

एक लम्बे अरसे तक वह प्रख्यात व्यक्तियों को बेवकूफ बनाकर उनकी अंकशायिनी बनी रही। सीधी-साधी माताहारी अब कितने ही महत्वपूर्ण व्यक्तियों के रहस्य और उनकी गोपनीय तथ्यों की जानकारी का भण्डार बन गई थी मगर अनजाने में ही वह खतरों के ज्वालामुखी पर चढ़ बैठी थी। किसी के भी रहस्य के पर्दाफाश करने का अर्थ था - मौत, कुत्ते से भी बदतर मौत।

इसी बीच जर्मनी के विदेशमंत्री ने उसे जासूसी के रोमांचक खेल के लिये उकसाया। प्रेमी की सलाह मानकर उसने हामी भर दी और बर्लिन पहुंच गई। वहां उसे जासूसी का विधिवत् प्रशिक्षण दिया गया और वह एक कुशल जासूस के रूप में सामने आ गई। अब उसका नाम सुनते ही बड़े-बड़ों के पसीने छूट जाते थे।

पेरिस लौटकर जब उसने दूसरी पार्टियों में जाने और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से सम्पर्क करना आरम्भ किया तो ब्रिटिश गुप्तचर चौंक उठे - 'एक नृत्यांगना का ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों से क्या काम?' उनके कान खड़े हुये और उन्होनें उसकी हर गतिविधि पर नजर रखना आरम्भ किया। पर इन सबसे अनजान माताहारी अपने प्रेमजाल में लोगों को फंसाकर उनकी गोपनीय सूचनायें बर्लिन मुख्यालय में भेजती जा रही थी।

एक लंबे खेल के बाद अंत में माताहरी को गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर संगीन जुर्म के आरोप की श्रृंखला दर्ज थी - जासूसी संस्था चलाने, शत्रु देशों के लिये जासूसी करने, दुश्मनों को गुप्त सूचनायें भेजने, उनके सैन्य संचालन में सहायता करने इत्यादि दर्जनों भयंकर आरोप।

पेरिस की ही सेंट लजारे जेल में उसे मृत्यु दण्ड दे दिया गया। यह तो होना ही था क्योंकि इतने संगीन अपराधों के बदले में यही एक दण्ड बचता था। पर प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि अन्तिम दिनों में भी सिर से पांव तक दमकते आभूषण, झिलमिलाते सिल्क और बेशकीमती चमड़े की पोशाक पहने हुये वह उस अंधेरी कोठरी में भी अपने सौन्दर्य का जादू बिखेर रही थी।

कुण्डलिनी तो जगती है
हठयोग
की
इन विधियों से

नमः शिवाय गुरूवे नाद बिन्दु कलात्मने।

निरन्जन पदं यातिनित्यम् यंत्र परायणः।।

अर्थात् जो मूल नाद बिन्दु कला है वह गुरूदेव ही हैं, वही शिव स्वरूप हैं। नित्य प्रति गुरू ध्यान से ही निरंजन पद प्राप्त हो सकता है।

हठ योग कुण्डलिनी जागरण की एक प्रसिद्ध विद्या है जिसके विषय में अनेक भ्रामक विचार हमारे समाज में व्याप्त हैं। सामान्यतः हठ पूर्वक की गयी कठिन योग क्रियाओं को ही 'हठ योग' की संज्ञा दी जाती है जबकि वास्तविकता इससे परे है। 'हठ' शब्द बीज वर्ण 'ह' एवं 'ठ' का सम्मिलित रूप है जिसमें 'ह' वर्ण सूर्य एवं 'ठ' वर्ण चन्द्रमा के लिए प्रयुक्त होता है। हमारे शरीर में पिंगला नाड़ी सूर्य शक्ति से सम्बन्धित है और इड़ा नाड़ी चन्द्रमा की शक्ति से युक्त है। इड़ा नाड़ी हमारे बायें स्वर (बायें नासाद्वार) में खुलती है एवं पिंगला नाड़ी दाहिने स्वर में। सुषुम्ना नाड़ी इन दोनों के मध्य में रहती है अतः इड़ा एवं पिंगला के योग से जो स्वर चले उसे सुषुम्ना कहते हैं। प्राणायाम के द्वारा हठ योगी अपने स्वर को सुषम्ना में चलाने का अभ्यास करते हैं। इस दृष्टि से प्राणायाम एवं हठ योग समानार्थक प्रक्रिया है जो कि सम्पूर्ण मानव शरीर में प्रवहित रक्त का शुद्धिकरण करके नाड़ी चक्रों को चैतन्य करती है, और मानस की विभिन्न शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है।

'हठ योग' के क्षेत्र में प्राणायाम, आसन, बन्ध एवं मुद्राएं इत्यादि का प्रचलन है परन्तु विषय विस्तार के भय से मैं यहां पर बन्ध एवं मुद्राओं का ही विवरण दे रहा हूं। ये हठ योग की उन्नत प्राविधियां हैं और मुख्यतः भावों के संस्करण के लिए प्रयुक्त होती हैं। अधिकांश ग्रंथ, बंध एवं मुद्राओं को एक ही इकाई मानते है।

कुण्डलिनी शक्ति के जागरण में कुछ विशिष्ट मुद्राएं अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं जिनका अभ्यास योग्य गुरू के निर्देशन में करना चाहिए। मुद्राओं का अभ्यास साधक को सूक्ष्म शरीर स्थित प्राण शक्ति की तरंगों के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाता है, इन शक्तियों पर चैतन्य रूप से नियंत्रण प्राप्त करता हुआ साधक अपने शरीर के किसी अंग में उसका प्रवाह ले जाने या अन्य व्यक्ति के शरीर में उसे पहुंचाने की क्षमता प्राप्त करता है। इन मुद्राओं का अभ्यास, त्रिबंध, आसन एवं प्राणायाम क्रिया को संयुक्त करते हुए किया जाए तो शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

इन विशिष्ट मुद्राओं के अभ्यास से साधक का बाह्य जगत से सम्बंध टूट जाता है, प्राणोत्थान क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, इन्द्रियां अन्तर्मुखी होकर प्रत्याहार की स्थिति निर्मित करती हैं, इसलिए इनका अभ्यास आध्यात्मिक साधकों के लिए तो अत्याधिक उपयोगी है। यहां पर कुण्डलिनी जागरण में सहायक मुद्राओं एवं बंधों का सारभूत विवेचन किया जा रहा है।

हठयोग के सात अंग हैं - कर्म, आशा, मुद्रा, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान और समाधि। ये सात क्रम शरीर शुद्धि, दृढ़ता, स्थिरता, धीरता, चैतन्यता, आत्म-ज्ञान, कुण्डलिनी जागरण एवं पूर्णता के स्वरूप हैं।

पासा फेंका प्रेम का सारी किया सरीर
सतगुरू दाँव बताइया, खेले दास कबीर

कुण्डलिनी

आज के युग में कुण्डलिनी जागरण आसान कार्य नहीं है, बाजार में सैकड़ों ऐसे पाखण्डी साधु व्यवसायी या प्रचारक पैदा हो गये हैं, जिन्होंने इसे व्यापार समझ लिया है।

उच्चकोटि का गुरु ही व्यक्ति या शिष्य की कुंडलिनी जाग्रत कर सकता है, कुण्डलिनी जाग्रत होते ही मंदबुद्धि, तेज-तर्रार और मेधावी बन जाता है, नई-नई युक्तियों से व्यापार वृद्धि करने लगता है तथा चेहरे व शरीर का सौन्दर्य हजारों-हजारों गुना बढ़ जाता है ... सही अर्थों में तो बुढ़ापे से यौवन की ओर कायाकल्प होने लग जाता है।

बन्ध

वास्तव में बंध कुम्भक (श्वास रोकने) के साथ प्रयोग किये जाने वाले सुरक्षा ताले हैं जिनके द्वारा हम अंदर की वायु का दबाव विभिन्न स्थलों पर बढ़ा कर उन्हें शक्ति कृत करते हैं। स्थिति के अनुसार ये कई प्रकार के होते हैं -

१. मूल बन्ध : मल-मूत्र विसर्जन संस्थान की वायु को स्तंभित करना ही मूल बंध है। गुदा व लिंग प्रदेश को दोनों एड़ियों से दबाकर दोनों के मार्ग को अवरूद्ध करें और इस क्षेत्र को ऊपर की ओर सिकोड़ें। इससे अपानवायु ऊपर उठती है और वह प्राण वायु से टकराती है फलस्वरूप सुषुम्ना जागरण में सहायता मिलती है।

२. जालंधर बन्ध : कंठ को सिकोड़ कर ठोड़ी को दृढ़ता पूर्वक कंठ कूप (गर्दन के ठीक नीचे) में जमाये। इससे पूरे शरीर की नाड़ियां उद्वेलित हो जाती हैं, फलस्वरूप इड़ा पिंगला नाड़ियां स्तंभित होकर प्राणवायु की ओर प्रवहित होती हैं। यह बंध अर्न्तश्वसन के पश्चात् सांस को कंठ द्वार के स्तर के नीचे रोकने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

३. उड्डीयन बन्ध : दोनों जंघाओं को मोड़कर पैरों के तलुए परस्पर मिला दें तथा पेट को अंदर की ओर इतना खींचे कि वह रीढ़ की हड्डी से सट जाए। यह क्रिया कुम्भक अवस्था में करें, इससे नाभि के ऊपर व नीचे दबाव पड़ेगा फलस्वरूप प्राणवायु सुषुम्ना की ओर प्रवाहित होगी।

४. महाबंध : बांयी एड़ी को गुदा एवं लिंग के मध्य भाग पर लगायें और दाहिने पैर को बांयी जंघा पर रख लें। अब पूरक करके जालंधर बन्ध लगा दें, यथाशक्ति कुम्भक करके धीरे-धीरे रेचक करें। ऐसा ही दांयें पार्श्व से भी करें। इससे प्राण का प्रवेश मूलाधार चक्र में होता है।

५. महा बंध : जालंधर व मूल बन्ध लगाकर कुम्भक करें। अब दोनों हथेली नितम्बों के पास भूमि पर टिका कर हाथों के बल नितम्ब भाग को उठा कर भूमि पर मारें। इस समय यह भावना प्रबल हो कि आपके प्राण सुषुम्ना में प्रविष्ट हो रहे हैं। तत्पश्चात् महाबंध के अनुसार रेचक कर दें।

मुद्रा

हठयोग में विद्युत शक्ति को जाग्रत करने हेतु विभिन्न मुद्राओं का प्रचलन है। कुण्डलिनी जागरण में मात्र सात मुद्राएं ही अधिक महत्वपूर्ण है -

१. शक्ति चालिनी मुद्रा : सिद्धासन अथवा पद्मासन में बैठकर दोनों एड़ियों को मूलाधार से लगायें तथा जालन्धर बन्ध लगाकर जोरों से श्वास-प्रश्वास करें। इससे मणिपुर चक्र पर दबाव बढ़ेगा। साथ ही कुम्भक लगाकर गुदा संकोचन खोलन करें फलस्वरूप मूलाधार की आपान वायु का मिलन प्राण वायु से होगा और सुषुम्ना जाग्रत होगी।

२. खेचरी मुद्रा : जीभ को लम्बी कर काफी बाहर निकालें फिर इसे मोड़कर मुंह के अंदर नासिका के निचले छिद्र को स्पर्श करें। साथ ही दोनों नेत्रों को भृकुटि के मध्य में स्थापित करें। यह मुद्रा सर्वाधिक कठिन व दुष्कर है।

३. षटमुखी मुद्रा : पद्मासन में बैठकर तर्जनी से आंखों को अंगूठे से कर्णछिद्रों को मध्यमा से नासाछिद्रों की तथा अनामिका व कनिष्ठिका से मुख को बंद करें। अब मात्र मध्यमा को मुक्त करके एक नथुने से सांस भरें व दूसरे से सांस छोड़ दें।

४. योनी मुद्रा : सिद्धासन में बैठकर षटमुखी मुद्रा लगा लें। अब कौवे की चोंच के

समान जीभ को गोल कर उसके द्वारा श्वास अन्दर खींचे तथा दोनों कनिष्ठिका से होंठों को बन्द करें। अब कुम्भक विरोचन कर षटचक्र में कुण्डलिनी ध्यान और 'हुं' मंत्र का मानसिक जप करें।

५. महामुद्रा : दोनों पांव सामने फैला कर बैठें और फिर बांया पैर मोड़ कर ऐड़ी को गुदा व लिंग के मध्य सीवन में लगा दें। अब आगे झुक कर दांये पैर के पंजे को दोनों हाथों की हथेलियों में जकड़ लें। फिर श्वास अन्दर भर कर मूल एवं जालंधर बंध लगा कर यथाशक्ति बैठें। रेचक के समय वायु को धीमें-धीमें बाहर निकालें। इसके पश्चात दाहिने पैर को मोड़ कर यही क्रिया करें।

६. योग मुद्रा : मूल बंध के साथ पद्मासन में बैठें तथा पूरक कर जालन्धर बंध लगा लें। अब दोनों हाथों को पीठ के पीछे कर मिला लें। फिर आगे की ओर झुक कर मस्तक पृथ्वी से लगा दें। इस स्थिति में यथाशक्ति रुके रहें, पूरक करने समय सिर को ऊपर उठा लें। कई बार इस क्रम को दोहरायें।

६. अश्विनी मुद्रा : पद्मासन में सीधे बैठकर सांस छोड़ें। फिर सांस रोक कर स्फिक्टर (गुदीय) पेशियों को संकुचित करके मलद्वार को ऊपर की ओर खींचे। लगभग दस सैकेण्ड इसी अवस्था में रहें, फिर श्वास भरें। तालबद्ध रूप से १०-२० बार इस क्रिया को दोहरायें।

यह मुद्रा निम्नतर केन्द्रों में सुषुम्ना व आध्यात्मिक शक्तियों के जागरण में उपयोगी है। यही मुद्रा पुरूष करें तो वज्रोली कहलाती है।

इन सभी मुद्राओं के माध्यम से नाड़ियों की शुद्धि तथा प्राण शक्ति में वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, ध्यान, धारणा व समाधि में सफलता मिलती है, अन्तःकरण पवित्र बनता है और चक्रों में प्राणोत्थान हो कुण्डलिनी शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाती है।

कुण्डलिनी जागरण सहज ही हो जाता है
शक्तिपात से

भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के साधक शक्तिपात को जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानते हैं। यह सोचना गलत भी नहीं है। जिसके भाग्य उदय होते हैं, जिस पर ईश्वर की कृपा होती है उसे ही जीवन में ऐसे योग्य गुरू मिलते हैं, जिनसे शक्तिपात मिल सके।

शक्तिपात

एक वरदान है जीवन का, कोई अद्वितीय व्यक्तित्व या गुरु मिले, जो शक्तिपात के द्वारा शरीर की जड़ता, आलस्य न्यूनता एवं दुर्भाग्य समाप्त कर दे, जो शरीर के रोगों को मिटाने की प्रक्रिया करे और शक्तिपात ... शक्तिपात से तो कुण्डलिनी जागरण होकर व्यक्ति अपने आप में ही अद्वितीय बन जाता है। वास्तव में ही अत्यधिक सौभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने गुरु से "शक्तिपात" सम्पन्न करवा कर कुण्डलिनी जागरण करवाने में सफल हो पाता है।

गुरू दीक्षा प्राप्त कर, आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होने वाले प्रत्येक साधक का प्रतिक्षण प्रयास यही रहता है कि वह शीघ्र से शीघ्र कुण्डलिनी जागरण में सफलता प्राप्त कर भोग व मोक्ष की पूर्णता प्राप्त कर सकें और अपने सद्गुरू का नाम रोशन कर अपना मानव जीवन सार्थक कर सके। अनेक विधाओं के माध्यम से साधनारत रहते हुए शिष्य इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा गुरू कृपा प्राप्त कर शक्तिपात के लिए चातक सा निर्निमिष बाट जोहता रहता है।

कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने के लिए भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक सम्प्रदाय भिन्न-भिन्न प्रकार की विधियां अपनाते हैं। विभिन्न शैलियों के अपनाने में कुछ विशेष सूत्र ध्यान में रखने पड़ते हैं। मूलतः निम्नलिखित विधायें कुण्डलिनी जागरण का सशक्त माध्यम मानी गयी हैं -

१. सक्षम गुरू के द्वारा शक्तिपात क्रिया

२. मांत्रिक साधना के द्वारा

३. तांत्रोक्त प्रणाली के द्वारा

४. लामा प्रणाली से ब्रह्मरंध्र भेदन क्रिया द्वारा

५. आसन, बन्ध एवं मुद्राओं द्वारा

६. ध्यान एवं नाद योग से चक्र भेदन द्वारा

७. नाड़ी शोधन एवं सुषुम्ना ताड़न विधि द्वारा

८. षट् कर्म एवं भस्रिका अभ्यास द्वारा

९. सतत 'हुं' हुंकार ध्वनि द्वारा

१०. विशिष्ट प्रणायाम प्रक्रिया द्वारा

ये सभी विधायें अपने आप में पूर्ण एवं प्रामाणिक हैं। ये सभी अनुभव-गम्य एवं साधकों की सफलता का आधारभूत माध्यम रही हैं। इनमें से किसी भी एक या अनेक पद्धतियों का आश्रय लेकर साधक अपनी सुषुप्त सुषुम्ना को मूलाधार से उठाकर षट् चक्र भेदन करता हुआ सहस्त्रार में प्रवेश कर सकता है।

शक्तिपात एवं कुण्डलिनी जागरण के अद्वितीय विद्वान डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी

बिखरी पड़ी हैं। मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में उन सबका उपयोग किया जा सकता है। लेकिन इसके लिए कोई माध्यम होना अत्यंत आवश्यक है और यह माध्यम एक समर्थ गुरू ही हो सकता है जो स्वयं उन दिव्य शक्तियों को स्वयं में समाहित किये हुए हो।

पर इस क्रिया के लिए समर्पित शिष्य बनना अनिवार्य है क्योंकि शक्तिपात मात्र गुरू कृपा से ही संभव है और सिद्धिदाता गुरू की कृपा उनकी अनन्य सेवा से ही संभव है। ऐसा ही महर्षि वशिष्ठ ने श्री राम को स्पष्ट शब्दों में कहा था -

'परिपक्वमलाये तानुत्सादन हेतु शक्तिपातेन।

यो जर्यात परे तत्वे स दोलयाचार्य मूर्तिस्थः।।'

शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी - उत्थान

भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के साधक, शक्तिपात को जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि मानते हैं। उनका सोचना मिथ्या नहीं है क्योंकि जिस व्यक्ति के भाग्य उदय होते हैं, जिस पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है, उसे ही अपने जीवन में योग्य गुरू के द्वारा शक्तिपात प्राप्त होता है।

प्रश्न यह उठता है कि शक्तिपात है क्या? इसका सबसे सरल उत्तर यह हो सकता है कि शक्ति की रूपान्तरण क्रिया को ही शक्तिपात कहते हैं। मानव के चारों ओर अनन्त शक्तियां

अक्सर एक शिष्य, अपनी पूर्ण क्षमता से साधना सम्पन्न करने पर भी सफलता नहीं प्राप्त कर पाता। इसका कारण पूर्वजन्म कृत दोष या साधनात्मक न्यूनता हो सकती है अथवा शिष्य में एकाग्रता की कमी भी उसकी असफलता का कारण बन सकती है। जब गुरू इस तथ्य को अनुभव करता है तो अत्याधिक कृपा करते हुए अपने शरीर में स्थित विशेष तपस्यात्मक और साधनात्मक शक्ति से कुछ विशेष शक्ति उस शिष्य को प्रदान कर देते हैं जिससे वह कुण्डलिनी जागरण साधना या अन्य साधना में सिद्धि प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

यह क्रिया इतनी सुगम नहीं है। गुरू भी साधनात्मक शक्ति को कठिनाई से प्राप्त करता है और अपने आत्म में संचय करता है। उस संचित दिव्य शक्ति का कुछ हिस्सा सही गुरू अपने शिष्य में प्रसारित कर सकता है जो सक्षम हो, जो परम सत्ता को प्राप्त कर चुका हो और जो अपने शिष्य को प्रत्येक दृष्टि से ऊंचा उठाने का अभिलाषी हो।

शक्तिपात में ऊर्जा का नियंत्रित अवतरण होता है। इस क्रिया में सद्गुरू अपनी करूणा के वशीभूत होकर अपनी साधना व सिद्धियों के समुद्र को शिष्य में उड़ेल देता है और शिष्य में ऐसी क्षमता उत्पन्न कर देता है कि उसमें उन सिद्धियों को समाहित करने को शक्ति आ जाये।

चाहे शिष्य निरक्षर हो, चाहे उसे आसन-प्राणायाम आदि का ज्ञान न हो, पर शक्तिपात के पश्चात् ये सब क्रियाएं अनायास ही होने लग जाती हैं। शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है और वह स्वयं गुरूवत बन जाता है।

शक्तिपात करते समय सद्गुरू शुद्ध चित्त शिष्य को अपने समक्ष बैठाते हैं। फिर वे अपने शरीर को पूरी तरह ओजयुक्त बना कर अपने दाहिने हाथ में शिव-शक्ति तथा बायें हाथ में गुरू-शक्ति को केन्द्रीभूत कर शिष्य के सिर पर वरद हस्त रखते हैं। ऐसा करते ही शक्तिपात हो जाता है।

शक्ति पात वास्तव में मानव के चारों ओर बिखरी अनन्त शक्ति को केन्द्रीय भूत कर मानव के शरीर में उतार देने की प्रक्रिया है। जो योग्य व सक्षम गुरू द्वारा मूर्त रूप ले पाती है।

शक्तिपात करते समय गुरू जब शिष्य को अपने गले लगाता है तब उसके शरीर में कम्पन होने लग जाता है, आनन्दातिरेक से अश्रु प्रवाहित होने लगते हैं, सारा शरीर रोमांचित हो उठता है, तथा शिष्य एक अनिवर्चनीय प्रकाश से भर जाता है -

देहपातस्तथा कम्पः परमानन्द हर्षणे।

स्वेदो रोमांच इत्येतच्छक्तिपातस्य लक्षणं।।'

शक्तिपात होते ही शिष्य की कुण्डलिनी जाग्रत होकर षट्चक्रों को पार कर लेती है फलस्वरूप उसका ध्यान लग जाता हैं। उसे ध्यान में विभिन्न देवताओं के साक्षात् दर्शन होने लगते हैं एवं अपने ब्रह्म स्वरूप को पहचान कर शिष्य अखण्ड आनन्द में लीन हो जाता है। उसका सम्पूर्ण शरीर गुलाब के पुष्प की भांति हल्का हो जाता है और वह भ्रमर की तरह नृत्य करने लग जाता है।

"शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण होते ही ऐसा लगा जैसे मेरा सारा व्यक्तित्व ही बदल गया है, जड़ता, प्रमाद और व्यसन सब कुछ एक बारगी ही समाप्त हो गये, और मैं दो-दो घण्टे ध्यानस्थ होने लगा, जीवन अपने आप में ही स्वर्णिम हो गया।

-मिश्रा
आचार्य एवं संचालक

जिस पर शक्तिपात हो जाता है उसे प्राणायाम, आसन, मुद्रा मंत्र जप कुछ भी नहीं करना पड़ता। उसकी कुण्डलिनी तो स्वयं प्रबुद्ध होकर ब्रह्मरन्ध्र तक जाने के लिए छटपटा ने लगती है और अपना मार्ग अपने आप ही बनाती जाती है।

शक्तिपात की अन्य उपलब्धियां

१. शिष्य का सम्पूर्ण शरीर रोगरहित, पवित्र, दिव्य व प्रभावयुक्त हो जाता है।
२. उसकी वाणी में अद्‌भुत क्षमता आ जाती है जिससे वह दूसरों को प्रभावित कर प्रशंसनीय बन जाता है।
३. उसका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक एवं सम्मोहक बन जाता है।
४. वह ध्यान प्रक्रिया में सिद्धहस्त हो जाता है।
५. उसे स्वयं के पूर्व जीवन का सही ज्ञान हो जाता है अतः उसके वर्तमान कष्टों व परिस्थिति का कारण भी उसके मानस में स्पष्ट हो जाता है।
६. किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका पूर्व जीवन तथा पूर्व जीवन के सम्बंध शिष्य की आंखों में साकार हो जाते हैं।
७. उसी क्षण शिष्य को हिमालय के विभिन्न दृश्य, योगियों और सिद्धाश्रम के दर्शन होने लगते हैं।
८. किसी भी पुरूष या स्त्री को देखते ही उसका अतीत एवं वर्तमान जीवन ज्ञात हो जाता है। निकट भविष्य में उसके जीवन में आने वाली दुर्घटनाओं का भी पता चल जाता है।
९. शक्तिपात से शिष्य तीव्रता के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढने में सफल हो पाता है और सभी साधनाओं में सिद्धि को हस्तगत कर लेता है।

वस्तुतः सद्‌गुरू शिष्य की सेवा व समर्पण से प्रसन्न हो, शक्तिपात के द्वारा उसे 'स्वयंवत्' बना लेते है और कुछ विशिष्ट योगी या सन्यासी गुरू ही ऐसी कृपा करने में समर्थ होते हैं।

फोटो द्वारा कुण्डलिनी - दीक्षा

यदि आप व्यक्तिगत रूप से पूज्य गुरुदेव के पास नहीं आ सकें, तो आप अपना फोटो भेज दें, फोटो के माध्यम से भी कुण्डलिनी दीक्षा संभव है।

स्थान-सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर - ३४२००१ (राज.)
टेलीफोन - ०२९१-३२२०९

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा ही जीवन की सभी दृष्टियों से पूर्णता है

शास्त्रों में, साहित्यों में और इसके अतिरिक्त भी "गुरु" शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में आता है और स्थान-स्थान पर इस शब्द का अर्थ अलग-अलग है, शास्त्रोक्त रूप से गुरु का तात्पर्य है, "सद्गुरु" जो ऐसे गुणों से युक्त हो जिसमें "सद्" भाव हो, निश्चय ही यह सद् भाव शिष्य के प्रति हो सकता है, क्योंकि शिष्य के बिना गुरु का आधार नहीं है।

शिष्यां गुरु पूर्णत्वं स यियासुः शिवेच्छया।
भुक्ति मुक्ति प्रसिध्यर्थं नीयते सदगुरुं प्रति।।

मालिनी विजय

अर्थात जो गुरु शिष्य को भोग तथा मोक्ष दोनों ही तत्वों से साक्षात्कार करा कर पूर्णता: प्रदान कराए वही सदगुरु है, क्योंकि जीवन का तात्पर्य भोग और मोक्ष दोनों ही है।

अधकचरे शास्त्र लिखते हैं, कि मनुष्य योनि चौरासी लाख योनियों बाद मिलती है, इसका मतलब तो यह हुआ कि युगों-युगों बाद मनुष्य जन्म मिलता है, और इस जन्म को भी प्रारम्भ से ही सन्यास के मार्ग पर धकेल दें, निग्रह के मार्ग में प्रवृत्त कर दें जीवन में कुछ कामना, इच्छा रखें ही नहीं, तो फिर चौरासी लाख योनियों के पश्चात मिले जीवन का अर्थ ही क्या है? शास्त्र इस प्रकार की झूठी बातें सिखा कर भ्रान्ति पैदा करते हैं।

जब तक जीवन में भोग नहीं है, कामना पूर्ति नहीं है, तब तक जीवन अधूरा है, इन सब में गुरु का क्या स्थान है, गुरु केवल पूजा-आराधना का प्रतीक नहीं है, गुरु तो उसका सखा है, मित्र है, मार्ग दर्शक है, उस राह पर चल कर आगे बढ़ा हुआ वह व्यक्तित्व है, जिसे जानकारी है कि मार्ग में क्या कांटे बिछे हैं, और किन स्थितियों में जीवन का विनाश हो सकता है, कौन से कार्य शिष्य को भटका सकते हैं, गुरु इन सब का ध्यान रखते हैं।

प्रत्येक मनुष्य की जीवन में यही इच्छा होती है कि वह अल्प समय में धनवान बन जाये, कम परिश्रम में ही उसे अधिक लाभ मिल जाये, उसका शरीर रोगों से मुक्त रहे, उसका परिवार भी संकटों-व्याधियों से मुक्त रहे और सभी लोग परस्पर मिल जुल कर मधुरता से रहें। ऐसा सोचना अनुचित भी नहीं। धन प्राप्त करना, पद-प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य प्राप्त करना अपने आप में कोई तुच्छता नहीं। सच तो यह है कि यह जीवन इतना अल्प होता है कि यदि इसमें समय रहते सब कुछ प्राप्त न कर लिया जाये तो जीवन का रस सूख जाता

है।
ईश्वर ने जीवन हमें इसलिए नहीं दिया कि हम रोते झींकते और तिल-तिल कर परिश्रम करते जीवन के मध्य भाग में जाकर कहीं कुछ अल्प सा एकत्र करें और तब तक उसका आनंद लेना ही विस्मृत कर चुके हों। जीवन में भौतिक अभाव के कारण ही आज समाज में परिपूर्णता दृष्टिगोचर नहीं होती। व्यक्ति अपने सामान्य जीवन की पूर्ति के लिए ही इतना अधिक व्यस्त एवं संतप्त हो चला है। उसके पास क्षण दो क्षण विश्राम नहीं कि वह आध्यात्मिक पक्ष का चिंतन कर सके।

सत्य

साधना-सिद्धि

एक बार या दो बार करने से साधना में सिद्धि नहीं भी मिल सकती, इसमें उतावली उचित नहीं है, यह तो सतत लम्बी प्रक्रिया है ... यदि १० या १५ वर्षो के बाद भी सिद्धि मिली तो पूरा जीवन ही सौभाग्यदायक, प्रसिद्धि से पूर्ण, उज्जवल बन जायगा।

गुरु-कृपा

और यदि गुरु कृपा से सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो फिर "गुरु आज्ञा ही केवलम्" जो गुरु कहें, वहीं करे ... सतत ... सचेष्ट ... निरन्तर ... तो कभी न कभी गुरुदेव प्रसन्न होकर सिद्धि प्रदान करेंगे ही।

पूर्णता

इस क्षेत्र में तो "घर फूंक तमाशा" देखने वाले ही आगे बढ़ सकते हैं, कबीर के शब्दों में "जो घर जारे आपनो चले हमारे साथ ...।"

जो 'रिस्क' ले सकता है, जो चेलेंज उठा सकता है, वो ... और वही अद्वितीय सिद्धि पुरुष बन सकता है।

वसंत

जब एक वृक्ष बंसत के आगमन से आनंद से भर जाता है तब उसमें फूल भर उठते हैं, और जब वह फूलों से भर उठता है तब ही वह दूसरों को आकर्षित करने में और दूसरों को आनंद देने में समर्थ हो पाता है। मानव जीवन की भी ठीक यही कथा है। इसमें विडम्बना यह हो गयी कि वह मुस्कराना भूल गया। उसका जीवन जो प्रभु ने उसे हंसने, नाचने-गाने और प्रभु में लीन हो उठने के लिए दिया था, वह जीवन की विसंगतियों में खो गया। हमारे शास्त्र अत्यंत श्रद्धा की विषय वस्तु हैं किंतु उनके प्रस्तुतीकरण कुछ इस रूप में हुए कि वे मानव में अपराध बोध और ग्लानि भर गये। एक-एक कदम पर अंकुश लग गया। एक-एक मनोवृति पर आवरण डाले गये और जिसका परिणाम रहा सड़ांध।

यह एक अवश्यंभावी प्रक्रिया है कि जब-जब सड़ांध का वातावरण बन जाता है तो उसके निराकरण की व्यवस्था भी प्रकृति स्वत: ही करती है। पवित्र सिद्धाश्रम, जिसका स्मरण ही दिव्य है, जिस शब्द का उच्चारण अलौकिक है, वह समय-समय पर अपने मध्य से अवश्य की कोई दिव्य अवतरण सम्भव कराता है कि ज्ञान की सड़ांध दूर हो सके। युग के अनरूप ज्ञान का प्रस्तुतीकरण करना सहज कार्य नहीं है। प्राचीन छोर को नये परिपेक्ष्य में व्याख्यित करना दुरुह प्रक्रिया है किंतु जो युग पुरुष होते हैं उनके सामने स्पष्ट लक्ष्य होता है, और वे बिना झिझक अपना कार्य संपादित करते ही जाते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव

सिद्धाश्रम ने इस हेतु इस युग में जिस दिव्य व्यक्तित्व का चयन किया वे हैं **परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** जो डॉ० नारायण दत्त श्री मालीजी के नाम से इस लोक में विख्यात हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने पहली बार इस गोपनीय तथ्य को समाज के सामने स्पष्ट किया है कि जीवन की, और इस जीवन की जो धीरे-धीरे, सिमटते-सिमटते आज औसत रूप से ६०-७० वर्ष की आयु तक सीमित हो गया है, की परिपूर्णता केवल **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** के माध्यम से ही संभव है। कुण्डलिनी जागरण अपने आप में योग की सर्वाधिक जटिल प्रक्रिया है। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ योगी भी पूरे जीवन स्व प्रयासों से मूलाधार से आगे बढ़ ही नहीं पाते। इस तथ्य को संभवत: सभी श्रेष्ठ साधु संत जानते ही हैं। और भले ही वे अहंमन्यता वश मुंह से कुछ न कहें, किंतु दबी जबान में यह तथ्य स्वीकार करते ही हैं।

कुण्डलिनी जागरण : जीवन की विशिष्ट शैली

कुण्डलिनी जागरण जो कि सुनने में सीधे-सीधे योग जगत की विषय वस्तु लगती है, एक सामान्य प्रश्न प्रस्तुत करती है कि साधारण गृहस्थ को इससे क्या कुछ लेना-देना? क्यों कि उसका लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति अथवा ब्रह्म का चिंतन न होकर अपने परिवार का पालन पोषण होता है, और इसी भ्रम का निराकरण करने का यहाँ प्रयास है। भारतीय जीवन पद्धति में जब से

यस्मान्महेश्वरः साक्षात कृत्वा मानुषविग्रहम्।
कृपया गुरु रुपेण मग्नाः प्रोद्धरति प्रजाः।।

(रूद्रयामल तंत्र)

एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का कल्याण नहीं कर सकता स्वयं महेश्वर ही गुरु रूप धारण कर कृपा पूर्वक माया संसार के जीवों का कुण्डलिनी जागरण दीक्षा द्वारा उद्धार करते हैं।

साधना पद्धति के प्रति उदासीनता आयी, जब से भक्ति मार्ग की प्रबलता बढ़ी तब से स्वतः ही जीवन के भौतिक पक्षों की उपेक्षा कर दी गयी। शरीर को कष्ट देना, सुखाना ही ईश्वर प्राप्ति का मार्ग मान लिया गया। यह योग नहीं था यह योग की एक शैली थी और शैली जीवन नहीं हो सकती। कुण्डलिनी जागरण अपने आप में सम्पूर्ण रूप से जीवन की ऐसी शैली थी जिसके माध्यम से जीवन स्पष्ट होता था। हमारे चिंतकों ने जीवन में धन, यश, मान, पद प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, शत्रु नाश सभी को समान महत्व दिया क्योंकि जीवन एक ऐसा कोमल ताना बाना है जिसमें कोई एक अभाव होने पर अथवा कोई एक दुखद उपस्थिति होने पर राग बिगड़ जाता है। कल्पना कीजिए उस स्थिति की कि जब घर में धन धान्य की कमी न हो लेकिन व्यक्ति डायबिटीज अथवा हाईब्लड प्रेशर के कारण खा न पा रहा हो या सभी सुख सुविधायें हो किंतु एक मुकदमें ने सारा जीवन व्यर्थ कर रखा हो। जीवन में ऐसी अनेक विसंगतियां आ ही जाती है और यदि हम एकएक विसंगति को लेकर उसका उपाय अथवा निराकरण ढूंढे तो यह जीवन अल्प पड़ जायेगा जब कि हमारा लक्ष्य है कि शीघ्रातिशीघ्र जीवन के भौतिक पक्षों की पूर्णता कर उसे परम तथ्य मोक्ष प्राप्ति की ओर, ईश्वर के चरणों में अनुरक्त होने की और बढ़ायें। कोई एक अभाव भी उसके अंदर चिड़चिड़ाहट भरे रहता है।

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा

इसका सरल व निश्चित उपाय है कुण्डलिनी जागरण दीक्षा। कुण्डलिनी जागरण दीक्षा अपने आप में शक्ति के पूर्ण विस्फोट की प्रक्रिया है। वह शक्ति जो मूलाधार में सुप्त पड़ी समाप्त हो जाती है गुरुदेव उसे अपने शिवत्व से जाग्रत कर व्यक्ति के अंतः स्थित शिव से सायुज्य कराने की प्रक्रिया में गतिशील कर देते हैं और जब व्यक्ति में शक्ति तत्व ही गतिशील हो उठे तो उसके लिए फिर असंभव क्या? शक्ति, ही तो इस जगत में मूल कत्री है। व्यक्ति के अंदर शक्ति जाग्रत होते ही बाह्य जगत में विस्तारित शक्ति उसकी एकाकारिता कर स्वत ही अनुकूल हो उठती है। यहं अनुकूल होने की क्रिया कभी ऋण मुक्ति के रूप में स्पष्ट होती है तो कभी रोग मुक्ति के रूप में। कभी अनायास धन प्राप्ति के रूप में प्रकट होती है तो कभी शत्रु नाश के रूप में। शक्ति तत्व व्यक्ति के अनुकूल होने पर वह दुर्गा के रूप में सिंह पर बैठ सामने नहीं आती वरन् जीवन की इन्हीं विसंगतियों के नाश के रूप में अपनी उपस्थिति का बोध करा जाती है। 'कुण्डलिनी जागरण' इसी शक्ति तत्व के जागरण का योग की भाषा में एक पारिभाषिक शब्द है।

शक्ति तत्व के स्फुरण के बिना साधना में सफलता प्राप्त करना तो दूर उसमें प्रविष्ट होने की बात करना भी बेमानी है क्यों कि जब आप में शक्ति तत्व ही नहीं सक्रिय है तो आप साधना किस बल से करेंगे। यह बात कुछ विरोधाभास सी लग सकती है कि साधना तो हम स्वयं शक्ति तत्व के जागरण के लिए करते है फिर प्रारम्भ में ही शक्ति की अपेक्षा कहां से करें? इस प्रराम्भिक शक्ति की ही पूर्ति गुरुदेव द्वारा प्रदत्त दीक्षा से होती है। इसीलिए दीक्षा का सर्वोपरि महत्व है। शक्ति का अंकुरण दीक्षा के माध्यम से होता है जिसे साधक अपने मंत्र जप ध्यान आदि से पोषित करता है।

ऐतिहासिक तथ्य

जहां भी जीवन में आमूलचूल परिवर्तन की बात सामने आयी वहां पर कुण्डलिनी जागरण दीक्षा अनिवार्य सी हुई है। कुण्डलिनी जागरण दीक्षा कोई नवीन तथ्य नहीं है। सतयुग में भगवान श्री राम ने विश्वामित्र से द्वापर युग में श्री कृष्ण ने अपने गुरु सांदीपन से, आद्य शंकराचार्य ने विश्रवते से एवं इस युग में भी स्वामी विवेकानंद ने परमहंस रामकृष्ण से यह दीक्षा प्राप्त कर जीवन में वह सब कुछ संभव कर दिखाया जिसके कारण वे वंदनीय हुये, क्यों कि अपने जीवन के प्रारंम्भ में वे भी शिष्य ही थे और उन्होंने अपने अपने गुरु से निःसृत शक्तिपात को ग्रहण कर उच्चता प्राप्त की। यह तथ्य इस कारण अस्पष्ट रहे क्यों कि प्राचीन

काल में गुरु अपने किसी एक विशेष शिष्य को ही यह दीक्षा प्रदान करते थे किंतु जो उच्च कोटि के योगी हैं अथवा ऐश्वर्य शाली गृहस्थ हैं वह भी सप्रयास इस दीक्षा को प्राप्त कर अपने जीवन को ऊंचाई तक पहुंचा सके।

कुण्डलिनी जागरण दीक्षा केवल एक दीक्षा नहीं है यह तो शक्तिपात का विशिष्ट स्वरूप है। इसके माध्यम से एक झटके से मूलाधार में सुप्त पड़ी कुण्डलिनी को चैतन्य कर सहस्रार तक पहुंचा देने की क्रिया है। और जब कुण्डलिनी सहस्रार तक भगवान शिव के स्थान तक पहुंच जाती है तो उसे स्वत: ही शिवत्व प्राप्त हो जाता है। शिवत्व प्राप्त होने का अर्थ है जीवन में निश्चिंतता, जीवन में उन्मुक्तता, जीवन में उदात्त भावों की परिपूर्णता, जीवन में सब कुछ लुटा देने की क्षमता प्राप्त करने की क्षमता, और कुबेरपति बनने की पात्रता प्राप्त करना। फिर तो व्यक्ति सदैव भगवान शिव की तरह अपनी ही दुनिया में मस्त रहने की कला सीख जाता है। इस आपाधापी और तनावों से भरे युग में यदि हम दो क्षण भी अपने में डूब सकें तो वही तृप्तिदायक होता है, फिर सदैव ही आनंद युक्त रहना कितना श्रेष्ठ होगा।

इस युग में यह अनुकूल नहीं रह गया कि व्यक्ति लम्बी साधनायें करें जब कि उसके समक्ष गुरुदेव साक्षात उपस्थित हो। प्रयास करके इस दीक्षा को प्राप्त करके जीवन में वह सब कुछ प्राप्त किया जाता सकता है जो कि व्यक्ति की इच्छा या अपेक्षा होती है।. फिर तो लम्बी-लम्बी साधनाओं में उलझना या पोथियों के पन्ने उलटना बुद्धिमता कदापि नहीं कही जा सकती।

अनूठी साधनाएं

छः साल पहले इस प्रकार की योजना प्रारंभ की थी, और उसमें अत्यधिक-अत्यधिक सफलता साधकों को प्राप्त हुई थी, काफी दिनों से साधकों के प्रबल आग्रह पर ये साधना-सुविधाएं पुन: प्रारंभ कर रहे है।

आप जो भी साधना चाहें, हमें लिख भेजें हम उससे संबंधित यंत्र, चित्र, या संबंधित सामग्री वी. पी. से भेज देंगे, साथ ही साधना-विधि भी। वी. पी. छुड़ाने से आपको संबंधित साधना विधि व सामग्री प्राप्त हो जायगी, फलस्वरूप आप अपनी मन पसंद साधना में पूर्ण सफलता पा सकें -

१.	लक्ष्मी! तुझे मेरे घर में आना ही होगा (लक्ष्मी - साधना यंत्र चित्र विधि सहित)	६६०/-
२.	गृह कलह निवारण साधना (यंत्र विधि सहित)	४५०/-
३.	पूर्ण आरोग्य साधना (यंत्र एवं विधि युक्त)	४००/-
४.	पति वशीकरण साधना	३००/-
५.	अनिष्ट निवारण साधना	३००/-
६.	पुष्प किन्नरी साधना (आकस्मिक धन प्राप्ति से संबंधित)	६००/-
७.	पुष्प देहा अप्सरा साधना (आकस्मिक धन प्राप्ति से संबंधित)	६००/-
८.	आकस्मिक धन प्राप्ति साधना - यंत्र सहित	३००/-
९.	गुरु सिद्धि साधना - यंत्र चित्र सहित	६००/-
१०.	व्यापार वृद्धि साधना - यंत्र चित्र सहित	३००/-

अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप हमें पत्र या टेलीफोन पर सूचना दे दें, हम संबंधित सामग्री एवं विधि डाक खर्च जोड़कर भेज देंगे।

सम्पर्क

मंत्र शक्ति केन्द्र

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

हंसा हंस मिले सुख होई

एक व्यक्ति जो कुण्डलिनी जागरण का इच्छुक हो उसे किस भावभूमि पर खड़ा होना पड़ता है और फिर वह जीवन की किन ऊँचाईयों को स्पर्श कर दुर्लभ ब्रह्म-रसमयता का आस्वादन कर लेता है, इसी का विवरण पूज्य गुरूदेव के एक प्रिय शिष्य द्वारा प्रस्तुत है।
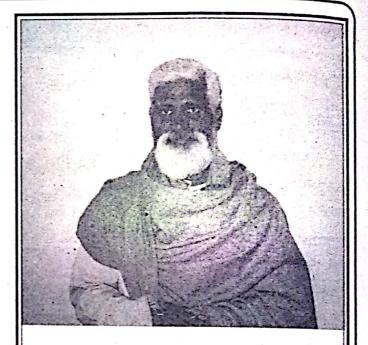
मेरे सम्पूर्ण जीवन का परमानन्द कुण्डलिनी जागरण है, एक तृप्ति, एक आनंद, एक पूर्णता ... जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता, उन्नति, श्रेष्ठता एवं अद्वितीयता ... ।

– शास्त्री

लगभग तीन वर्ष हुए, जब पूज्य गुरूदेव श्रीमाली जी से मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ था। गृहस्थ जीवन जीते हुए भी मेरा रूझान साधनात्मक था और विशेषकर कुण्डलिनी के विषय में मेरे मन में अत्याधिक जिज्ञासा थी।

जो सुख नित्य प्रकाश विभु
नाम रूप आधार।
मति न लखे जिंहीं मति लखे
तामे सुद्ध अपार – इस जड़ बुद्धि के प्रकाश से हम उस चैतन्य पुरूष को नहीं जान सकते यह बुद्धि तो स्वयं उस प्रकाश घन से प्रकाशित होने पर ही ज्ञान कराती है।

अतः दीक्षा लेते ही यही प्रश्न समक्ष रखा। पूज्य गुरूदेव हंस कर बोले, 'तुम स्वयं जाग्रत करके वास्तविकता जान लो ग्रन्थों में डूबने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा' मैं असमंजस में पड़ गया क्योंकि मुझे आसन, प्राणायाम या मुद्राओं का किंचित मात्र भी अभ्यास नहीं था। पूज्य गुरूदेव भांप गये, कहा 'इनकी कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु सर्वप्रथम तुम सवा लाख जप का गुरू मंत्र पुरश्चरण सम्पन्न कर लो।' इसके साथ ही उन्होंने मुझे **'गोपनीय कुण्डलिनी जागरण मंत्र'** भी बता दिया जो कि मेरे लिए एक सर्वथा नवीन बात थी। इस अद्भुत दिव्य व तेजस्वी मंत्र को पाकर मैं अत्यंत हर्षित हो उठा क्योंकि मुझे कठिन प्रक्रियाओं से गुजरने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

उनकी आज्ञानुसार घर लौटकर मैंने गुरू मंत्र का पुरश्चरण सम्पन्न किया जिससे मेरे शरीर में दिव्य चैतन्यता का संचार हुआ। अब शुभ मूहुर्त में मैने कुण्डलिनी जागरण साधना प्रारंभ की। प्रातःकाल गुरू पूजन सम्पन्न करके ही मैं कुण्डलिनी मंत्र की १०१ माला जप सम्पन्न करता था। तीन माह तक नियमित रूप से मैं इस साधना में संलग्न रहा परंतु कुण्डलिनी का मुझे कोई अनुभव नहीं हुआ। इतना अवश्य हुआ कि अब मैं चार घंटे पद्मासन में बैठने में समर्थ हो गया था।

मेरा मन अत्यंत उद्विग्न हो उठा। कुण्डलिनी जागरण की साध मैं वर्षों से मन में संजोए हुए था अतः मेरी विवशता स्वाभाविक ही थी। अवसर पाकर पुनः मैं गुरूदेव के चरणों में पहुंचा। प्रत्युत्तर में उन्होंने कहा 'तुम्हारा मंत्र जप व्यर्थ नहीं गया है। तुम्हारे शरीर के शुद्धिकरण एवं पूर्व जन्म कृत दोष निवारण के लिए इतना तो आवश्यक ही था।' अब उन्होंने मुझे दुर्लभ 'कुण्डलिनी जागरण दीक्षा' के विषय में बताया जिससे आधा मार्ग स्वतः ही पार हो जाता है। पूज्य गुरूदेव से याचना कर मैंने इस कुण्डलिनी जागरण दीक्षा को प्राप्त किया और आशीर्वाद लेकर घर लौट आया।

अब मैं दुगने उत्साह से साधना में संलग्न हो गया। एक सप्ताह जप करने पर ही एक दिन सर में भारीपन अनुभव हुआ। शाम को ज्वर भी चढ़ आया पर निर्देशानुसार मैंने किसी औषधि का सेवन नहीं किया। प्रातः काल तक ज्वर तो उतर गया परन्तु अब मैं बिना किसी बाह्य नशे के भी नशे जैसी हालत में था। मैं सदा एकान्त में रहना चाहता था जहां मुझे कोई छेड़े नहीं।

मेरी तो प्रत्येक क्षण इच्छा होती थी कि उड़ कर गुरूदेव के पास पहुंच जाऊं, उन्हे अपने भीतर समाहित कर लूं। मेरा सारा ध्यान, सारा चिन्तन गुरूदेव की ओर लग गया था। उनके चित्र से मैं घण्टों वार्तालाप करने लगा था। इसी में मुझे असीम शान्ति का बोध होता था।

मेरा मंत्र जप नियमित चल रहा था। अचानक एक दिन ऐसा अनुभव हुआ मूलाधार क्षेत्र में किसी ने अंगारा रख दिया हो, पूरे मेरूदण्ड में विद्युत धारा सी दौड़ गयी। मेरे सारे रोम खड़े हो गये। पर यह स्पर्श मुझे अत्यन्त सुखद प्रतीत हुआ। ऐसा लगा मानों मेरे मेरूदण्ड में कोई ऐसा केन्द्र है जो मेरे पूरे शरीर को चैतन्य कर रहा है, झकझोर रहा है।

अब मेरी विचित्र स्थिति थी। प्रारंभ से ही संयमित जीवन बिताने के बावजूद भी न जाने

गुरौ बापुरा कासी बसै,
सिष समुंदर तीर।
बिसरे नहीं बिसारया,
जो गुण मांही सरीर।।

कहां से कुविचार उदय हो रहे थे। गुरू मंत्र जप करके मैं स्वयं को शान्त करने का प्रयत्न करता था। कुछ दिनों तक संघर्ष के बाद ही मैं अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर सका। अब मैं अपने मेरूदण्ड में ऊष्ण जल प्रवाह सा सुषुम्ना स्पन्दन स्पष्ट अनुभव करता था। मेरी विकलता भी बढ गयी थी। क्षुधा का यह हाल था जैसे मैं कई वर्षों से भूखा हूं। हालांकि साधना काल में मैने मात्र दूध व फल के सेवन का निश्चय किया था परन्तु अब मैं खाद्य पदार्थों को उदरस्थ कर लेता था।

पूज्य गुरूदेव एवं पूज्यनीय माता जी : सुपरिचित वात्सल्यमय स्वरूप में

जप करते हुए एक दिन स्वतः मेरे अश्रु प्रवाहित होने लगे। हृदय गद्‌गद् हो उठा, ऐसा लगा जैसे मैं किसी अत्यंत प्रिय से बिछुड़ा हुआ हूँ जिससे मिलने को मेरी आत्मा तड़प रही है। और मेरे अन्तर में प्रेम व दया का सागर हिलोरें लेने लगा और उसी ध्यानावस्था में गुरूदेव से तादात्म्य स्थापित हुआ। उनके प्रेरणादायक शब्द गूंजते रहे और मैं उस अमृत सुधा का पान

चलना-फिरना, खाना-पीना, सोना-जागना, यह सब तो इस शरीर की गति है। जीव की गति तो तब होती है, जब वह अपने गुरूदेव या इष्ट का साक्षात जाज्वल्यमान दर्शन कर भींज जाता है और यह स्थिति तो व्यक्ति को 'चैतन्य दीक्षा' से ही मिल सकती है।

एक शिष्य में चार गुण होने चाहिए प्रथम तो वह गुरू के मन की इच्छा पलक झपकते जान ले और प्राण प्रण से पूरा करे। दूसरा उसके जीवन का बस एक ही प्रयत्न हो कि वह कैसे अपने गुरू का तनाव अपने ऊपर झेले, तीसरी गुरूदेव जो आज्ञा दें उसे बिना ना नुच किये स्वीकार कर ले तथा अन्तिम कि वह सदैव गुरूदेव के समक्ष जल की तरह निर्मल और वृक्ष की तरह विनीत बन कर रहे।

करके तृप्त होता रहा।

किसी के झकझोरने से मेरे नेत्र खुले। घर वाले मुझे घेर कर बैठे थे। मैने उन्हें एक नवीन दृष्टि से देखा। पता चला मैं छः घण्टों से निश्चल अवस्था में था। मैं मन ही मन हंसा क्योंकि मेरे लिए वह पांच मिनट ही था जब मैं अपने हृदय से अपने इष्ट का अवलोकन कर रहा था।

धीरे-धीरे एक अदभुत परिवर्तन अनुभव किया। भावों के उद्रेग में अनायास ही संस्कृत श्लोकों की पंक्तियां मेरे मुख से उच्चरित होती थी जबकि देववाणी संस्कृत का मुझे प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं था। पहली बार गुरूदेव की महिमा पर मैंने संस्कृत पद्य लिखा और उसे गुन गुनाकर आह्लादित होता रहा।

मेरी साधना के ६ मास व्यतीत हो चुके थे पर मैंने एक दिन भी व्यवधान नहीं आने दिया था। एक दिन मंत्र जप करते करते ही आंखें मुंद गयी और प्रतीत हुआ मानों मैं वायु में ऊपर उठ रहा हूं। दूर एक अद्भुत प्रकाश वलय है जिसकी ओर मैं गतिशील हूं। धीमे-धीमे वह प्रकाश पुंज मेरे समीप आ गया और मेरा पूरा अस्तित्व उस दिव्य ज्योति में नहा उठा। एक अवर्णनीय आनन्द की अनुभूति हुई और मंत्र जप समाप्त कर मैं वहीं लेट गया। तन्द्रावस्था में ही मैंने अपने शरीर से एक अन्य शरीर को निकलते हुए अनुभव किया जो दूसरे ही क्षण अज्ञात स्थानों पर पहुंच गया। मेरे सामने भव्य हिमालय स्पष्ट था जहां उच्चकोटि के योगी, सन्यासी तपस्या की रश्मियों से आपूरित शोभायमान थे। बाद में ज्ञात हुआ कि वह मेरा सूक्ष्म शरीर था जो स्वतंत्र होकर दिव्य लोकों में विचरण कर रहा था।

अब मुझे अपने सिर में चीटियों के रेंगने सी गति अनुभव होती थी। भ्रूमध्य पर आघात भी अनुभव होते थे मानों कोई अन्दर प्रवेश करने के लिए लगातार ठोकरें दे रहा हो। नेत्र बंद करते ही अन्दर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता था। सुषुम्ना पथ पर तारे जड़े हुए दृष्टिगोचर होते थे। इसी क्रम में पहली बार मुझे समाधि अवस्था का भी अनुभव हुआ जिसके बाद मेरे मन के सारे संकल्प-विकल्प, राग द्वेष एक झटके के साथ समाप्त हो गये।

इस अवस्था को प्राप्त करने में मुझे लगभग आठ माह लग गये। अब मैं एक नवीन व्यक्तित्व बन चुका था। संसार के प्रत्येक कार्य का घटना को मैं एक नवीन दृष्टि से देखने में अभ्यस्त हो चुका था ओर किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका भूत, भविष्य व वर्तमान मेरी आंखों में कौंध जाता था।

अब मैं पुनः गुरूदेव के चरणों में था। मेरे अश्रु उनके चरणों को प्रक्षालित कर रहे थे। भावविह्वलता की अवस्था में मैं कुछ भी बोलने में असमर्थ था। उनहोंने मेरे साथ घटी सभी घटनाओं का स्पष्टीकरण किया और स्नेह सिक्त वाणी में कहा, 'तेरी कुण्डलिनी शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत हो चुकी है। अपनी क्षमताओं का समाज. हित में उपयोग कर। मेरा आशीर्वाद प्रतिक्षण तेरे साथ है।'

वास्तव में ही मात्र एक समर्थ गुरू ही ऐसा माध्यम है जो हमें पशुजीवन से मानव जीवन, और आगे चलकर दिव्य ज़ीवन जीने की कला सिखाता है। वास्तव में ही वह सौभाग्यशाली है शिष्य है जिसे ऐसा गुरू प्राप्त होता है। जिसके सान्निध्य में कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत कर वह मानव जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

पूज्य गुरुदेव द्वारा ललाट पर स्थित आज्ञा चक्र को स्पर्श करते ही ऐसा लगा कि मैं पूरे ब्रह्माण्ड से एकाकार हो गया हूँ, मुझे पिछला जीवन साफ-साफ दिखाई देने लगा ... और देखने लगा आने वाला भविष्य कालीन जीवन ... स्पष्ट .. जैसे मैं टी. वी. के पर्दे पर देख रहा हूँ।

– डॉ० नरेश कुमार वर्मा

पूज्य गुरुदेव शक्तिपात करते हुए

*हंसा हंस मिले
सुख होई।
यहाँ तो पाँति बगुलन की
कदर न जाने कोई।।*

मन्त्र तन्त्र यन्त्र विज्ञान पत्रिका नहीं अपितु द्वापर युग की श्रीमद्भागवद् गीता है

लगभग पांच हजार वर्ष हुए उस द्वापर युग को जो एक दिव्य विभूति का साक्षीभूत बना, जब भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण हुआ, जिन्होंने सम्पूर्ण धरा को आलोकित किया, अपने ज्ञान से, चिन्तन से, नवीन विचार धारा से। और इन सब से बढ़कर उस षोडश कला पूर्ण व्यक्तित्व ने गीता जैसा उपहार दिया; वह भगवद्गीता जो मानव जाति के लिये वरदान साबित हुई, जिसकी विचारोत्तेजक, ज्ञान से भरपूर पंक्तियों ने विश्व के सभी धर्म ग्रन्थों को पीछे छोड़ दिया। गीता की टक्कर का ग्रन्थ पुनः नहीं रचा जा सका, रचा भी नहीं जा सकता क्योंकि वह तो स्वयं भगवान के मुँह से निःसृत वाणी है, उसके समकक्ष खड़ा होना अथवा उसकी तुलना करना मानव के लिये सम्भव ही नहीं है।

पर क्या उस युग में इस अमूल्य कृति का मूल्यांकन किया जा सका था। कदापि नहीं, क्योंकि मानव वृत्तियाँ तो उस काल में भी वही थीं जैसी वर्तमान युग में हैं। किसी जीवित, जाग्रत व्यक्तित्व या उसकी कृतियों का मूल्यांकन करना, उसका सम्मान करना कदाचित हमने सीखा ही नहीं, क्योंकि उनको मानने का अर्थ स्वयं को रूपान्तरित करना, बहुत कुछ दांव पर लगा देना, स्वयं को मिटा देना और हम इतना बड़ा जोखिम उठाने को तैयार नहीं होते। यही वजह थी कि द्वापर युग में न तो श्रीकृष्ण को समझा गया न ही उनकी अमूल्य गीता को। वे बार-बार पुकारते रहे, जीवन पर्यन्त कटिबद्ध रहे कि कोई उन्हें पहचान ले, उनकी विराटता की झलक देख ले, मानव जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर ले, पर हर बार उनकी पुकार को अनसुना कर दिया गया।

और आज जब वे सशरीर विद्यमान नहीं हैं, लोग उनके भव्य मंदिर बनाते हैं, घण्टे घड़ियाल बजाकर उनकी आरती करते हैं और उन्हें भगवान की श्रेणी में रखकर अहोभाग्य समझते हैं। वह विराट व्यक्तित्व जो जीवन भर दुख पाता रहा, गालियां सहन करता रहा, अब महापुरुष माना जाता है, उनकी गीता को अब वेदों से भी पवित्र और उच्चतम माना जाता है। और तो और उनके साथ रहे व्यक्तियों को भी दिव्यात्मा समझकर बार-बार स्मरण किया जाता है।

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

सच कहा जाए तो वर्तमान युग में इसकी सार्थकता गीता से भी अधिक है क्योंकि यह मात्र एक पत्रिका ही नहीं है यह तो एक ऐसा ध्वज है, ऐसा प्रकाश स्तम्भ है जिसके आलोक में मनुष्य अपने अब तक के संतप्त जीवन को त्याग कर एक श्रेष्ठ, नवीन पथ पर अग्रसर हो उठता है। यह तो पूज्य गुरुदेव की दिव्य वाणी है, ऐसे परम पूज्य गुरुदेव जो सिद्धाश्रम के प्राण हैं, जिनका लक्ष्य ही मानव के डगमगाते कदमों को सही दिशा देना है। उन्होनें ही स्वयं अपने हाथों से संजोकर यह अमूल्य धरोहर हमारे हाथों में सौंपी है।

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी प्रगति करने वाली इस पत्रिका के सम्बंध में जितना कहा जाए उतना ही कम है। विचारोत्तेजक, ज्ञान रस से सराबोर इस पत्रिका के प्रत्येक अंक में निहित पूज्य

गुरुदेव की वाणी का एक एक शब्द सीधा हृदय में उतरता है, प्राणों को स्पंदित कर देता है और फिर खोल देता है एक ऐसा द्वार जिसके लिए मानव अभी तक भटक रहा था। जो भी व्यक्ति पत्रिका के माध्यम से पूज्य गुरुदेव से जुड़े हैं, शिष्यत्व ग्रहण किया है, उन्होंने अपने जीवन में नई प्रक्रिया आरंभ की है, उन्हें नवीन ज्ञान शक्ति, विचार शक्ति, क्रिया शक्ति व आत्म शक्ति प्राप्त हुई है।

वस्तुतः ज्ञान की उपयोगिता तभी है जब वह समाज के केन्द्रीय बिन्दु का उत्थान कर सके। और यह बिन्दु एक सामान्य गृहस्थ व्यक्ति ही है जो सुख-दुख की धूप छांव तले अपनी जीवन यात्रा पार करता रहता है। सन्यस्त जीवन से लौटने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने यह अनुभव किया कि यदि हमारे महान ऋषि मुनियों, पूर्वजों के उच्चकोटि के ज्ञान को पुनः जीवित करना है तो क्लिष्ट संस्कृत भाषा से काम नहीं चलेगा। इसे जन सामान्य की भाषा में ही प्रस्तुत करना होगा जिससे कि वह स्वयं समझ सके, उसमें एक रुचि जाग्रत हो सके। जब तक वह अपनी इच्छा से किसी भी कार्य क्षेत्र में प्रवेश नहीं करेगा, तब तक उसे सफलता कैसे मिल सकेगी? और इसी पवित्र उद्देश्य के साथ इस पत्रिका का जन्म हुआ था ताकि हमारा प्राचीन ज्ञान जनसाधारण के काम आ सके, केवल कुछ पंडितों, महन्तों, सन्यासियों के पास कैद होकर ही न रह जाए।

सौ टंच खरी है एक एक पंक्ति

पर यह ज्ञान भी क्रियात्मक होना चाहिए, प्रामाणिक होना चाहिए। केवल पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर उपेदश देना उचित नहीं। इस सम्बन्ध में पूज्य गुरुदेव कहते है कि जब तक मैं स्वयं देख परख न लूं, अपने व्यक्तिगत अनुभव द्वारा सिद्ध न कर दूं, तब तक मैं वह ज्ञान अपने शिष्यों को दे ही नहीं सकता। मैं अपने शिष्यों को केवल वही कहता हूं जो अनुभवगम्य है, मेरे द्वारा सिद्ध किया हुआ है ताकि वह उसे अपने जीवन में उतार सके, अपनी बाधाएं, परेशानियां स्वयं सुलझा सकें, पंडे-पुरोहितों का चक्कर लगाने की उसे कोई आवश्कता ही नहीं रहे।

और उनकी इसी भावना का मूर्त रूप है यह **मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान** जिसे पढ़कर कोई भी विचारशील वयक्ति नकार नहीं सकता और एक बार साधना क्षेत्र में वह उतर जाए तो स्वयं अनुभव करेगा कि इस पत्रिका का एक एक अंक बहुमूल्य मोती है जो जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के लिए क्रियात्मक ज्ञान प्रस्तुत करता है, साधना जैसे दुरूह विषय को भी इतने सरल, सुगम व सामान्य रूप में वर्णित करता है कि एक बारगी तो विश्वास ही नहीं होता कि ऐसी दुर्लभ सिद्धियां सामान्य मानव को भी उपलब्ध हो सकती हैं।

लेकिन सत्य तो सत्य ही रहता है और पत्रिका प्रकाशन के पिछले बारह वर्ष इस तथ्य के साक्षी हैं कि जहाँ सिद्धान्तों की सत्यता है, उनका क्रिया रूप में प्रयोग है, वहाँ सफलता तो कदम चूमने को आतुर रहती ही है। आज यह कहते हुए अत्यन्त गर्व होता है कि पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद लिए **अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार** का जयघोष इस पत्रिका के माध्यम से हर गाँव, हर कस्बे, हर शहर में गूंज रहा है, पत्रिका का प्रत्येक सदस्य आज यह भली भांति जानता है कि साधना की क्या प्रक्रिया है, किस समय कौन सी साधना करनी चाहिए, मंत्रों का सही उच्चारण कैसे हो? और उनमें से प्रत्येक को अनुभूति अवश्य हुई, यह दिव्य अनुभूति उन्हें अपने जीवन के बारे में और भी अधिक चैतन्य करती है।

और ऐसा होना स्वाभाविक ही है क्योंकि पत्रिका का प्रत्येक अंक प्रामाणिक, दुर्लभ जानकारी से युक्त, नवीनता लिए हुए होता है —गोपनीय मंत्रों, दुर्लभ तंत्रों, शीघ्र सिद्धि प्रदायक मंत्रों, योग, प्राणायाम, रहस्यमय यात्राएं, आयुर्वेद, व्रत, पर्व, इत्यादि की महत्वपूर्ण जानकारी सभी वर्ग के व्यक्तियों के ज्ञानवर्धन व सर्वांगीण विकास के लिए दी जाती है। जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए समय समय पर विशिष्ट साधनाओं, यज्ञों व शिविरों की भी जानकारी प्रस्तुत की जाती है।

वास्तव में ही यह ज्ञान, यह अमृत वाणी लाखों-लाखों व्यक्तियों के अंधकारपूर्ण जीवन में जगमगाते सूर्य के समान है, जीवन का आधार है। इस पत्रिका के अध्ययन से उन्होने अपने जीवन को सजाया है, संवारा है और आज वे समाज में उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होकर सैकड़ों व्यक्तियों के आंसू

पोंछने में समर्थ हो सकें हैं।

यह निर्णय स्वयं करें

यदि वास्तव में जीवन का स्वरूप बदलना है तो प्रयत्न तो आपको करना ही पड़ेगा, चुनौतियां स्वीकार करनी ही पड़ेंगी। इस रूपान्तरण प्रक्रिया में पुराने संस्कार टूटेगें, कुछ बन्धन भी टूटेंगें, पर कुछ अद्वितीय बनने के लिए, कुछ नया करने के लिए, बहुत कुछ छोड़ना तो पड़ेगा ही। लेकिन एक बार साधना पथ पर अग्रसर होने के पश्चात् तो लक्ष्य प्राप्ति से कोई रोक नहीं सकता, आवश्यकताओं की पूर्ति में कोई बाधा आ ही नहीं सकती, क्योंकि पग-पग पर आपके पास सहारा है, हर क्षण गुरुदेव आपके साथ हैं, आपको तो मात्र इस पत्रिका परिवार से सम्बन्ध जोड़ लेना है, शेष तो वे स्वयं ही सम्हाल लेगें।

समय कम है और कठिन भी। कहीं ऐसा न हो कि भ्रम ही भ्रम में जीवन की सान्ध्य बेला आ पहुंचे और जीवन के सौभाग्य से आप वंचित रह जाएं। जरा सोचिए, यदि हम उस जीवन्त कृष्ण के पास बैठते तो कितना बड़ा लाभ उठा सकते थे, कितना अद्वितीय ज्ञान समाहित कर सकते थे, यदि उनके लिए मार्ग अनुकूल बनाते तो हम दो चार और "श्रीमद्‌भगवत् गीता'' जैसे ग्रन्थ प्राप्त कर पाते! समाज तो आज भी वही है। ऐसे अद्वितीय, श्रेष्ठ और जीवन्त सिद्धाश्रम के योगीराज हमारे मध्य हैं, और हम उनका सामीप्य प्राप्त न कर सकें, उनके चरणों में न बैठ सकें, उनसे लाभ न उठा सकें तो यह हमारी ही न्यूनता है, हमारा स्वयं को ही हानि पहुंचाना है।

इतिहास पुरूष बनना है आपको

यह स्थिति आने ही क्यों दी जाए? आपके लिए तो सभी मार्ग खुले है, पत्रिका के रूप में उस ज्ञान गंगा का निरन्तर प्रवाह आपके समक्ष है। पूज्य गुरुदेव का शिष्यों के नाम निरन्तर सन्देश प्रवाह है, बार-बार निर्देश है क्योंकि वे जानते है कि पत्रिका का प्रत्येक पाठक शिष्य ही है, जो अपने वास्तविक स्वरूप को विस्मृत किए हुए है। ज्यों ही वह पत्रिका से जुड़ेगा, अपने साधनात्मक सम्बंधी में विस्तार करने में संलग्न होगा, एक स्मृति जगेगी, फिर वह स्वयं को रोक नहीं सकता, वह अपने सद्‌गुरु को पहचान ही लेगा और उनके सन्निध्य का लाभ उठाकर पूर्णत्व को प्राप्त कर लेगा।

कैसे होगा यह बस? बड़ा सुगम सा उपाय है, मात्र नाता ही जोड़ना होगा 'उसे इस पत्रिका रूपी शाश्वत ज्ञान निधि से, अकेले नहीं अपने सभी इष्ट मित्रों, सगे सम्बन्धियों के साथ ताकि एक श्रेष्ठ, साधनात्मक, सुगन्धित वातावरण का निर्माण हो सके और फिर उसकी तुलना और किसी से की ही नहीं जा सकती। फिर आने वाली पीढ़ियाँ, आने वाला इतिहास ऐसे व्यक्तियों को स्मरण करता है कि समय रहते उनकी आंखें खुली थीं, उसमें पहचानने की क्षमता थी और उसके जीवन का कुछ हिस्सा ऐसे युगपुरुष के साथ व्यतीत हुआ था, और सौभाग्यशाली वे ही होते हैं जो ज्ञान की गरिमा को आत्मसात कर पाते हैं, जीवन्त व्यक्तित्व का मूल्यांकन कर लेते हैं और इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कर सदा के लिए अमर हो जाते हैं।

आप तो शिष्य है कई-कई जन्मों से

क्योंकि यह तो आत्मगत सम्बंध हैं, जो देह तत्व से परे हैं देह के बदल जाने से शिष्यता समाप्त नहीं हो जाती। यह तो एक अटूट श्रृंखला है जो कई जन्मों से चली आ रही है। पूज्य गुरुदेव की कृपा दृष्टि में भीगकर कई साधकों ने अपने पिछले जीवन को देखा है, और स्पष्ट अनुभव किया है कि गुरु-शिष्य का नाता तो शाश्वत होता है, और इसीलिए गुरु से प्रथम मिलन में ही इतनी प्रगाढ़ता, इतनी अन्तरंगता स्थापित हो जाती हैं कि शिष्य अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता है, विलग होने की कल्पना ही उसके लिए असहनीय हो जाती है। और फिर तो गुरुदेव के एक संकेत पर, एक आवाज पर शिष्य दौड़ उठता है, प्राणप्रण से आज्ञा पालन करने के लिए , गुरु अनुग्रह की शीतल छाया तले विश्राम करने के लिए।

और आप सभी पाठक भी तो शिष्य ही हैं

चाहे आप किसी कारणवश मिले न हों, इसीलिए पत्रिका से जुड़ते ही मन में एक तरंग सी उठती है, कुछ कर गुजरने की आकांक्षा उत्पन्न होती है, स्वयं को पहचानने की भी जिज्ञासा होती है, और

यह स्वाभाविक ही है क्योंकि प्रत्येक पाठक किसी न किसी जन्म में गुरुदेव के अत्यंत निकट रहा है, आत्मीय रहा है और उच्चकोटि की साधनाएं भी सम्पन्न कर चुका है, मात्र वह अपने स्वरूप को विस्मृत किये बैठा है, शिष्य रूपी अंगार पर राख की हल्की सी पर्त जम गई है, जिसे पूर्ण रूप से हटाने के लिए ही पूज्य गुरुदेव बार-बार आह्वान कर रहे है, इस पत्रिका के माध्यम से, साधना शिविरों के माध्यम से, ताकि वे सभी शिष्य सिद्धि पुरुष बन सके, जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकें।

गुरुदेव ने आप सभी शिष्यों व पाठकों को एक उत्तरदायित्व सौंपा है कि आप में से प्रत्येक १०-१० प्रतियाँ अपने पते से मंगाए और वितरित करें। भारत की प्राचीन थाती को जन-जन के हाथों में पहुंचाने का दृढ़ संकल्प लें। चाहे इसके लिये अतिरिक्त श्रम करना पड़े, चाहे अत्यधिक व्यस्त रहना पड़े पर अपने व्यक्तिगत जीवन की चिन्ता किए बिना अधिक से अधिक पत्रिका विभिन्न बुक स्टालों पर पहुंचाए और तूफान की गति से आगे बढ़ते हुए इसे आन्दोलन का रूप दें।

और यही आपकी गुरुदक्षिणा है, यही जीवन का सौभाग्य है जिसे प्राप्त कर आप उस पुण्य के भागी हो सकेंगे, जो अपने आप में अन्यतम है, पूर्वजों का आशीर्वाद है और पूज्य गुरुदेव की अमृत वर्षा तले जीवन को पूर्णता तक पहुंचाने का आधार है।

क्यों नहीं सखि उड़ि चल तहां

बहुरि उड़बो नांहि ....

मेरा तो पहला मिलन अनूठा ही रहा। आज मैं चाह कर भी लेखनी से उस आनन्द को व्यक्त नहीं कर पा रही जिसमें मैं लीन हो गयी थी...

शक्तिपात क्रिया तो अनूठी रही मैं झूम उठी मस्ती में आनन्द में, उमंग में और पूर्णता में।

मैं गृहस्थ के कार्यो को सम्पन्न करते हुए भी योग के अखण्डानन्द में लीन हूँ -

विद्युत्प्रभा।

मैं जीवन के प्रारम्भ से ही साधनामय रही हूं। मेरे जीवन की एकमात्र आकांक्षा थी कि मैं स्वयं को सद्गुरूदेव के चरणों में समर्पित कर साधना के द्वारा इतने ऊंचे धरातल को स्पर्श करूं जिससे मेरा मानव जीवन सार्थक हो सके।

और मानव जीवन की सार्थकता सिद्धाश्रम-प्रवेश में है। गृहस्थ लोगों को सिद्धाश्रम के विषय में कितनी जानकारी है, यह नहीं कहा जा सकता, परन्तु इतना अवश्य है कि उच्चकोटि के साधुओं, सन्यासियों और योगियों में सिद्धाश्रम प्रवेश की जितनी लगन, उत्कट इच्छा और तीव्र लालसा है, वह शब्दों से परे है। मैं भी इसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए कृत संकल्प थी, पर इसके लिए मुझे आवश्यकता थी एक तेजस्वी और योग्य गुरू की जो समस्त गूढ़ विद्याओं में पारंगत हो, जो मुझे पूर्णत्व प्रदान करने की क्षमता रखता हो और जो स्वयं सिद्धाश्रम-संस्पर्शित हो।

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से, मात्र २० वर्ष की अवस्था में, मुझे ऐसे गुरू भी प्राप्त हो गये। पूज्यवर श्रीमाली जी से मेरा प्रथम मिलन अनूठा ही रहा। योगी के चरर्ण-स्पर्श में कितनी दिव्यता भरी होती है यह उस दिन पहली बार अनुभव किया। एक ही झटके में मेरे अन्तर का सारा

पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी को मैंने जाना है, जब वे सन्यासी थे तब भी मैं उनके सम्पर्क में सन्यासिनी की तरह रही हूँ और आज भी ...

वे अद्वितीय हैं कुण्डलिनी जागरण में सहस्रार जागरण में और शक्तिपात के क्षेत्र में ... यह मेरा सौभाग्य है कि उनके सम्पर्क में हूँ उनसे शक्तिपात प्राप्त किया है, जीवन का सर्वोच्च ऐश्वर्य "अखण्डानन्द" में लीन रही हूँ।

- मां योग कर्त्री

लाली मेरे लाल की
जित देखूं तित लाल
लाली देखन मैं गई
मैं भी हो गयी लाल

राग-द्वेष, अज्ञान और न्यूनताएं समाप्त हो गयीं। उनकी वेग युक्त आवाज कानों में गुंजरित हुई, 'तुम्हारे चिन्तन को मैं समझ रहा हूं, पर उसके लिए कठोर प्रयत्न एवं साधनाओं की आवश्यकता है।' मेरी संकल्प शक्ति ऐसे सिद्धाश्रम-संस्पर्शित योगी को पाकर और बलवती हो उठी और उसी दिन विधिवत् दीक्षा लेकर मैंने स्वयं को उनके हाथों में सौंप दिया।

अब मैं गुरूदेव के सानिध्य में रहकर साधनात्मक धरातल पर आगे बढने के उपक्रम में थी। लगभग तीन वर्षों तक कठोर श्रम कर मैंने प्रारम्भिक स्तर की कई साधनाओं को हस्तगत भी किया परन्तु जो धरातल मेरा लक्ष्य था, वो मुझसे कोसों दूर था। उसे प्राप्त करने में मैं हर बार असफल साबित हो रही थी। बार-बार वही साधना करने के उपरान्त भी मुझे असफलता ही हाथ लग रही थी। अगली बार मैं दुगने उत्साह से साधना करती परन्तु किसी कारणवश सफलता मुझसे दूर रह जाती। शायद मेरी एकाग्रता में कमी थी। मेरा मन अत्यंत उद्विग्न हो उठा। पूरे प्रयत्नों के बावजूद भी मैं अपने शरीर में उतनी साधनात्मक शक्ति नहीं प्राप्त कर पा रही थी जो सिद्धि प्राप्ति के लिए अनिवार्य थी।

पर मैंने हिम्मत नहीं हारी थी। मैने सुना था कि शक्तिपात के माध्यम से मेरे पूर्व जन्म कृत दोषों का शमन हो सकता है जो मेरी सफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक था। अब मेरी एकमात्र इच्छा थी कि पूज्य गुरूदेव के द्वारा मुझे शक्तिपात का सौभाग्य प्राप्त हो। वे मेरी लगातार साधनात्मक असफलता को देखकर भी अनजान बने रहते। साहस बटोरकर एक दो दिन बाद मैने स्पष्ट शब्दों में याचना की पर वे टाल गये। 'शायद अभी उचित समय नहीं आया है' ऐसा सोचकर मैने स्वयं को पूर्ण रूप से गुरू सेवा में लीन कर दिया।

समय पंख लगाकर उड़ता रहा और एक दिन मेरे जीवन का स्वर्णिम प्रभात भी आ पहुंचा। प्रातःकाल ही पूज्य गुरूदेव अपने दिव्य, अद्भुत, वर्चस्वयुक्त स्वरूप में मेरे समक्ष दिखाई दिये। मैं उनके चरणों में लिपट गयी। उनकी स्नेहसिक्त वाणी सुनाई दी, 'अब तू शक्तिपात के योग्य है। जा स्नान करके आ।'

मैं हर्षातिरेक में विह्वल हो उठी। वर्षों की इच्छा आज पूर्ण होने जा रही थी। अब समझ आया क्यों पूज्य गुरूदेव ने तीन दिनों तक अन्न न ग्रहण करने की आज्ञा दी थी। पवित्र होकर मैं गुरूदेव के चरणों में पद्मासन मुद्रा में बैठ गयी।

पूज्य गुरूदेव मुझसे एक फीट की दूरी पर व्याघ्रचर्म पर विराजमान थे। उनकी आज्ञानुसार मैंने दो मिनट का कुम्भक करके गुरू ध्यान किया और ओंकार का उच्चारण प्रारम्भ किया। अब मैं गुरूदेव को सामने खड़ा हुआ देख रही थी। उन्होंने सर्वप्रथम भूतशुद्धि कर अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठा लिए। उनका पूरा शरीर ताम्रवर्ण हो गया। चेहरा सूर्य की भांति रक्तवर्ण होकर दमकने लगा। उनके दोनों हाथों में सभी दिशाओं से अलौकिक, अप्रतिम शक्ति केन्द्रीभूत हो रही थी। मैंने उन हाथों को विद्युत की तरह प्रकाशित होते देखा और दूसरे ही क्षण उन्होंने दोनों हाथ पूर्ण शक्ति के साथ मेरे सिर पर रख दिये।

कुण्डलिनी जागरण से कायाकल्प

धीरे-धीरे ही सही, पर कुण्डलिनी जागरण से ज्यों-ज्यों आन्तरिक चक्र जाग्रत होते है त्यों-त्यों रूप-सौन्दर्य में बेतहाशा वृद्धि होती रहती है .. एक प्रकार से सम्पूर्ण शरीर का काया कल्प हो जाता है, निखार और नूर आ जाता है चेहरे पर ... एक अद्वितीय आभा बरसने लगती है, पूरे शरीर पर

मन्नाथः श्री जगन्नाथः मद्गुरुः श्री जगद् गुरु

स्पर्श होते ही मेरा सम्पूर्ण शरीर झनझना उठा। ओंकार की तीव्र ध्वनि के साथ सम्पूर्ण आन्तरिक शरीर में एक विस्फोट उत्पन्न हुआ। ऐसा लगा भ्रूमध्य में सैकड़ों-सैकड़ों सूर्य एक साथ उग आये हों और मैं उस अद्भुत प्रकाश में निरन्तर गतिशील हूं। मन के सारे संकल्प-विकल्प समाप्त हो गये और ध्यान त्रिकुटी में स्थिर हो गया। एक अनंत लय में मैंने स्वयं को लीन अनुभव किया मानों मेरा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा हो। इस लय के कारण मैं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने भीतर स्पष्ट देख रही थी। मेरी स्थूल दृष्टि ने सर्वव्यापकता का रूप धारण कर लिया था जिसमें मैं बिल्कुल यथार्थ रूप में आकाश, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, उल्लकाएं, आकर्षण-विकर्षण अनुभव कर रही थी। अज्ञान का अंधकार पूर्णता नष्ट हो जाने से द्वैत भाव समाप्त हो गया था। प्रत्येक वस्तु में मैं अपना प्रतिबिम्ब स्पष्ट देख रही थी। अब मैं सम्पूर्ण विश्व की घटनाओं की साक्षीभूत थी।

कुछ क्षणों बाद हृदय में एक अत्यंत रमणीय तेज पुंज प्रकट हुआ। ऐसा अनुभव हुआ मानों मेरे प्राण चेतनता की अमृतधारा में डूब गये हों। मन में असीम शान्ति का सागर हिलोरें लेने लगा। ऐसा तरंग-फेन आदि से रहित शान्त महासागर जिसमें बाहर-भीतर, स्थूल-सूक्ष्म, आदि-अनादि का भेद नहीं किया जा सकता। मेरी भृकुटि से अमृत की धाराएं प्रवहित होने लगीं जिसमें पूरा अस्तित्व भीग उठा। मैं एक अनिवर्चनीय आनन्द में लीन हो गयी। मैं आज प्रयत्न करके भी उस आनन्द को लेखनी में माध्यम से व्यक्त नहीं कर पा रही हूं। वस्तुतः वह मेरे जीवन का सर्वोच्च आनन्द था जिसकी अनुभूति अवर्णनीय है।

कितने समय तक मैंने उस दिव्य अमृत सुधा का पान किया, इसका मुझे भान नहीं है। समय मेरे लिए ठहर सा गया था। जब मेरी विश्वरूपात्मकता समाप्त हुई, मैंने स्वयं को अपने आसन पर स्थिर पाया। सामने गुरूदेव के अधरों पर मधुर मुस्कुराहट थी। उनके चेहरे से संतुष्टि के भाव स्पष्ट थे।

आनन्द के अतिरेक मे मैं उनके चरणों में लेट गयी। मेरे अश्रु उनके चरणकमलों को प्रक्षालित कर रहे थे। मेरा सारा शरीर रोमांचित व आह्लादित था और पूज्य गुरूवर का वरद हस्त मेरी पींठ पर था।

इसके पश्चात् तो मेरा सारा जीवन क्रम ही परिवर्तित हो गया। मेरे मन का सारा भ्रम, सारा सन्देह, सारी समस्याएं, सारा दुख एकबारगी ही समाप्त हो गया। मैं अपने शरीर में एक अद्भुत बल, चुस्ती-स्फूर्ति व हल्कापन अनुभव कर रही थी।

अब मेरी सभी यौगिक क्रियाएं अन्तः स्फूर्ति से स्वतः होने लगी। प्राणायाम तो ऐसे करने लगी जैसे वर्षों का अभ्यास हो। मेरी कुण्डलिनी समस्त चक्रों का भेदन कर सहस्त्रार में पहुंच गयी थी। मेरे शरीर की जड़ता समाप्त हो चुकी थी और पूर्व जन्म कृत मेरे समस्त दोषों का परिहार हो चुका था। अब मैंने पुनः गुरूदेव के चरणों में बैठकर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न कीं और पहली बार में ही मुझे आश्चर्यजनक सफलता मिल गयी।

यह गुरूदेव के चरणों का ही प्रताप है कि मैं इस जीवन में ही उस परमसत्ता के दर्शन कर सकी हूं और उस ब्रह्मज्योति में स्वयं को लीन कर सकी हूं। मेरे जीवन का कण-कण उनके चरणों में समर्पित है।

चल री चकई चरन सरोवर जहां न प्रेम वियोग

सिद्धि–सफलता

जब गुरु देखता है, कि शिष्य प्रयत्न करने पर भी साधना में सफलता नहीं पा रहा है, तब "गुरु तांत्रोक्त पद्धति से कुण्डलिनी जागरण क्रिया" सम्पन्न करवाई जाती है।

और ऐसा होते ही शिष्य के शरीरस्थ समस्त चक्र जाग्रत हो जाते हैं और उसे किसी भी प्रकार की साधना में सिद्धि प्राप्त होने की क्रिया प्रारंभ हो जाती है।

योगीराज स्वामी चैतन्यानन्द ज्ञान के पूंजीभूत स्वरूप हैं और **स्वामी निखिलेश्वरानन्द** जी के प्रिय शिष्यों में से हैं। सहस्त्रार जागरण द्वारा वे साधना के उच्चतर आयामों को स्पर्श कर चुके हैं। उनका प्रत्येक शब्द अपने आप में प्रामाणिक और आप्त वाक्य है। हजारों वर्षों की आयु प्राप्त होने पर भी उनका शरीर यौवन-ऊष्मा से आपूरित है। प्राणोत्थान क्रिया से सम्बन्धित उनका चिन्तन शिष्यों व साधकों के लिए प्रस्तुत है सौगात के रूप में

छः वर्षों तक हठयोग व साधना के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण का अथक प्रयास करने के बाद मैं निराश सा हो गया था। जहां-जहां भी साहित्य मिला, उन सबको आज पाया भी, पर मूलाधार से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। अन्त में थक हार कर वरिष्ठ गुरू भाई योगीराज अरविन्द के पास पहुंचा और अपनी व्यथा सामने रखी, आखिर मेरी असफलता का क्या कारण है? इतने कठोर श्रम के बाद भी मेरी जीवनी शक्ति सुषुप्त क्यों है? मैं इन सिद्धियों को कैसे हस्तगत कर सकता हूं?

शिष्य वह होता है जो अपने गुरू के चरणों में मात्र चरण ही नहीं देखता बल्कि उसे वहां साक्षात् हिमालय पर्वत गंगा का उद्‌गम, भगवान शिव का विलास दिखाई दे जाये। ऐसा ही शिष्य त्रैलोक्य में वन्दनीय हो जाता है।

योगीराज, जिनका सहस्त्रार पूर्णतः चैतन्य है मेरी ओर देख मुस्कुराएं, पूछा 'क्या तुमने पूर्णता के साथ गुरू साधना सम्पन्न की?' अब मेरे चौंकने की बारी थी। 'पर कुण्डलिनी साधना का गुरू साधना से क्या सम्बंध?'

'अवश्य सम्बंध है।' योगीराज ने रहस्य खोला, 'जीवन की सर्वोत्तम साधना गुरु

साधना ही है जिसके द्वारा आत्मकल्याण तो होता ही है, कुण्डलिनी जागरण से सहस्रार भेदन भी किया जा सकता है। गुरु की तेजस्विता प्राप्त कर ही तुम अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकते हो।'

स्वामी जी ने अत्यंत कृपा करके वह तांत्रोक्त गुरु साधना मुझे समझाई और आज मैं यह कहते हुए अत्यंत भावविह्वल हूं कि इस गुरु साधना को सम्पन्न करते ही स्वतः मेरी कुण्डलिनी षट्चक्रों का भेदन करती हुई सहस्रार तक पहुंच गयी और मैं उस ब्रह्म रस का आस्वादन करने में समर्थ हो सका जिसे जीवन मुक्त स्थिति या विदेह कहा जाता है।

इस विलक्षण एवं अत्यंत गोपनीय साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'गुरु पादुका' की आवश्यकता होती है जो साक्षात् ब्रह्म गुरु की उपस्थिति का ही प्रतीक है। मात्र पादुका पूजन सम्पन्न करने से ही साधक की सोलह कलाएं विकसित होने लगती हैं तथा कुण्डलिनी शक्ति ऊर्ध्वगामी होती है।

साधक पवित्र अवस्था में श्वेत वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठे तथा सामने पीला वस्त्र बिछाकर गुरु पादुका स्थापन करे। उनकी संक्षिप्त पूजा करे तथा चारों ओर चावल के दानें फेंककर दस दिशा बन्धन करे।

शरीर गुरु स्थापन प्रयोग :-

दाहिने हाथ से संबधित अंगों को स्पर्श करते हुए गुरु को अपने पूर्ण शरीर में समाहित करें --

ॐ कूर्माय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ ६ ामार्थाय नमः। ॐ सर्व तत्वात्मकाय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ आनन्दकन्द कन्दाय नमः। ॐ सविन्नालाय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ विकारमय केशरेभ्यो नमः। ॐ प्रकृतमय पत्रेभयो नमः। ॐ पंचाशर्ण बीजाद्य कर्णिकायै नमः।
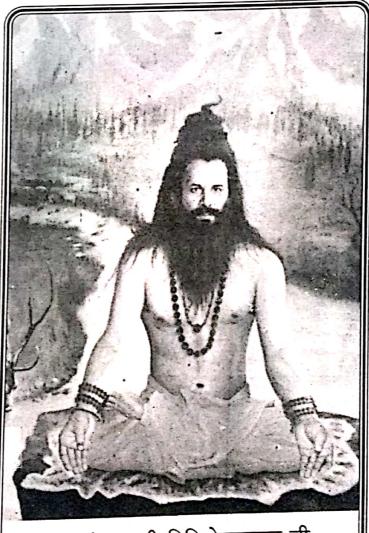
परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी

अपने सिर पर जल छिड़के, ललाट पर केसर की बिंदी लगायें और प्रसन्नता अनुभव करें कि मेरे रोम-रोम में पूज्य गुरुदेव स्थापित हुए हैं जिसमें कि मेरी कुण्डलिनी स्वतः जाग्रत होने लगी है।

इसके बाद खड़ाऊं में गुरुप्राण प्रतिष्ठा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

पादुका गुरु मंत्र ---

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वरूप निरूपणहेतवे श्री गुरवे नमः।'

इसके बाद साधक न्यास करें --

मंत्र	कर न्यास	षडंग न्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	कवचाय हूं
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ ह्रां	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्रः	करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

अब साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ, गुरु ध्यान करे -

'द्विदल कमल मध्ये बद्धसंवित् समुद्रं
धृत शिवमय गात्रं साधकानुग्रहार्थम्।
श्रुति शिर सिविभान्तं बोध मार्तण्ड मूर्तिम्
शमित तिमिर शोकं सद् गुरुं भावयामि।।

'हृद्यांबुजे कर्णिकमध्य संस्थं सिंहासने संस्थित दिव्य मूर्तिम्
ध्यायेद् गुरुं चन्द्रशिला प्रकाशं चित्पुस्तकाभीष्ट वरं दधानम्'।।

खड़ाऊं पर पुष्प समर्पित करते हुए निम्न

साधक की पूर्णता तब होती है जब वह शिष्य बनने का उपक्रम करता है और शिष्य तो वही होता है, जो पूज्य गुरुदेव के चरणों में बिना शर्त विसर्जित हो जाये। वास्तविक साधकत्व तो फिर इसके बाद ही प्रारम्भ होता है।

दीक्षा से मस्तिष्क उर्वरता

दीक्षा लेते ही मेरा सारा शरीर झनझना गया, ऐसा लगा कि जैसे पूरा संसार हिल रहा हो ... पर थोड़ी ही देर बाद सब शान्त हो गया और मैं समाधि में डूब गया ... मेरा मस्तिष्क उर्वर हो गया व्यापार में नवीन योजनाओं से बेतहाशा वृद्धि हो गई और आने वाला भविष्य पहले से ही साफ-साफ दिखाई देने लगा।

उच्चारण करें -

१. ॐ गुरवे नम: गुरुं आवाहयामि स्थापयामि

२. ॐ परम गुरवे नम: परम गुरुम् आवाहयामि स्थापयामि

३. ॐ परात्पर गुरवे नम: परात्पर गुरुम् आवाहयामि स्थापयामि

४. ॐ परमेष्ठि गुरवे नम: परमेष्ठि गुरुम् आवाहयामि स्थापयामि

५. ॐ परम गुरवे नम: परम गुरुम् आवाहयामि स्थापयामि।

इसके पश्चात् दोनों हाथों से पुष्प, अक्षत, कंकुंम, पुष्प माला समर्पित करते हुए उच्चारण करें ---

१. ॐ सर्वशास्त्रार्थ तत्वज्ञं निखिलेश्वरानन्दं आवाहयामि स्थापयामि

२. ॐ परमानन्द रूपेण स्वामी सच्चिदानन्दम् आवाहयामि स्थापयामि

३. ॐ ब्रह्मण्य रूपेण वेद व्यासं आवाहयामि स्थापयामि

४. ॐ पूर्णत्व प्रदाय चतुर्मुख ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि

सूक्ष्म गुरु तत्व मंत्र -

सर्वथा गुप्त और दुर्लभ द्वादशार्ण सरसी रूह के रूप में जो गुरु मंत्र के बारह वर्ण हैं, वे निम्न हैं, जो कि ब्रहमाण्ड के गुरुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। साधक को **स्फटिक माला** से इक्यावन माला निम्न ब्रह्माण्ड गुरु मंत्र की करना चाहिए 'स ह फ्रें ह स क्ष म ल व र यू मं'

इसमें प्रथम द्वादश वर्ण है, अंतिम म् 'वाग्भव' बीज है, इस प्रकार यह द्वादश वर्ण युक्त मंत्र कुण्डलिनी जागरण में पूर्ण रूप से सहायक है। साधना को नियमित रखते हुए आपको इस तेजस्वी मंत्र का कुल सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न करना है।

नित्य मंत्र जप के बाद, जप समर्पण गुरु के दायें हाथ में निम्न मंत्र के द्वारा करें- 'ॐ गुह्यति-गुह्य गोप्ता त्वं ग्रहणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव, त्वत् प्रसादान्महेश्वर।।'

इसके पश्चात् साधक कपूर से आरती सजाकर गुरु आरती सम्पन्न करे तथा परिवार के सदस्यों को प्रसाद वितरित करें

सहस्रार सिद्धि साधना

८ मई १९९३

दिल्ली

गुरुदेव तो पूर्ण चैतन्य स्वरूप है ज्ञान, बुद्धि, चेतना, भौतिक सुख, ऐश्वर्य एवं पूर्णता के द्यौतक हैं, उन्हें विशेष मंत्र जप एवं साधना विधि से ही सिद्ध किया जा सकता है, और आज "गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दिवस'' ही है।

एक अद्भुत आश्चर्य जनक साधना

सहस्रार सिद्धि साधना

स्थान

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली

सम्पर्क

०११-७१८२२४८

शिविर शुल्क

मात्र एक सौ पचास रुपये

समय

सायं छः बजे

जिज्ञासाएं

यद्यपि कुण्डलिनी जागरण कठिन विषय अवश्य है किंतु इसमें अटपटा या दुरूह जैसा कुछ भी नहीं। कुछ लोगों ने इसे भुनाने के लिए अस्पष्ट अवश्य कर डाला है, जिसका निराकरण होना आवश्यक है ....

१.प्रश्न. कुण्डलिनी का वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर. हमारे प्राणों में व्याप्त धन विद्युत् का जब देह की 'ऋण विद्युत्' के साथ तीव्र मनोबल द्वारा सम्मिश्रण होता है, तब उत्पन्न होने वाला दिव्य प्रकाश जो आत्म साक्षात्कार कराता है, वही कुण्डलिनी है। वस्तुत: यह ऐसी जीवन शक्ति है जिसे जाग्रत कर विभिन्न प्रकार के सात्विक, राजसिक और तामसिक कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। आधुनिक परिपेक्ष्य में हम इसे ब्रह्माण्ड में व्याप्त विद्युत् शक्ति का अंश मान सकते हैं, जो प्रत्येक मानव के अंदर सुषुप्त अवस्था में विद्यमान है।

२.प्रश्न. कुण्डलिनी जागरण की क्या उपयोगिता है?

उत्तर. कुण्डलिनी जागरण साधना में व्यक्तित्व की समस्त सम्भावनाओं का सर्वांगीण विकास होता है, एक के बाद एक नयी प्रतिभाओं का उदय होता है। मानव में सदवृत्तियों का विकास तीव्रता के साथ होता है। शरीर की समस्त व्याधियां योग अग्नि में जलकर भस्म हो जाती हैं और वृद्धावस्था पुन: यौवनावस्था में परिवर्तित होने लगती है। जीवन की सारी सीमाएं, निरोध, द्वन्द्व व पीड़ायें शान्त हो जाती है और दिव्य चेतना का प्रादुर्भाव होता है। संक्षेप में प्राणोत्थापन क्रिया से एक नये ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

३.प्रश्न. साधनात्मक दृष्टि से कुण्डलिनी जागरण क्यों आवश्यक है?

उत्तर. साधनात्क रूप से कुण्डलिनी जागरण क्रिया आत्मा को परमात्मा से मिलाने की क्रिया है जिसके द्वारा ही इष्ट के दर्शन संभव हैं। साधक इसके द्वारा दसों इन्द्रियों पर संयम कर सकता है और सहज ही ध्यानवस्था में जा सकता है। इस क्रिया से देह शुद्धि, मन शुद्धि व आत्म शुद्धि हो जाती है फलस्वरूप साधक शरीर स्थित ब्रहमाण्ड को भेदने की क्रिया प्राप्त कर लेता है व सूक्ष्म शरीर
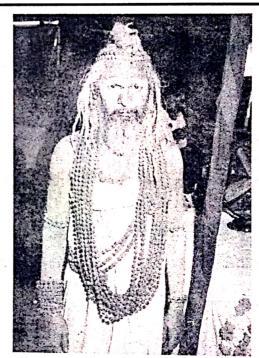
मैं कई स्थानों पर भटका, पर कोई मुझे सन्तुष्ट न कर सका, पहली बार जब पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के सम्पर्क में आया और उन्होंने ज्यों ही मेरे आज्ञा चक्र को जाग्रत किया, मुझे अपने कई पिछले जीवन दिखाई दिये और मैं कई वर्षों बाद पहली बार अखण्ड समाधि में लीन हो सका ...

योगीराज त्रिपाठी

इस साधना में गृहस्थ व्यक्ति के लिए कोई बाधा नहीं। उसका, अपने परिवार के प्रति व्यर्थ का मोह तो समाप्त हो जाता है किन्तु अपनत्व बढ़ जाता है। जिससे वह कर्तव्य पालन और प्रगाढ़ता से करने लगता है।

सामर्थ्य के अनेक स्रोत बहने लगते हैं। धीमे-धीमे हृदय में बेचैनी, तड़फ बढ़ जाती है और इष्ट के साथ एकाकार हो जाने की इच्छा होती है। कुछ साधकों में स्वाधिष्ठान चक्र भेदन के साथ ही काम भावना का उद्दीपन तीव्रता के साथ हो जाता है। मणिपुर चक्र तक भोजन व भोग की प्रवृति बढ़ जाती है एवं अनाहत चक्र भेदन पर हृदय में दया व स्नेह का सागर हिलोरें लेने लगता है। विशुद्ध चक्र जागरण पर साधक के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती विराजमान हो जाती है तथा शरीर पूर्णत: निरोग हो जाता है। कुण्डलिनी के आज्ञा चक्र में पहुंचने पर देव दर्शन व दिव्य प्रकाश दिखायी देता है। सहस्त्रार की ओर बढने पर साधक त्रिकालज्ञ हो जाता है, तथा समाधि प्रक्रिया में सिद्धहस्त होता है तथा अनेक सिद्धियों का स्वामी बन जाता है। इस प्रकार विभिन्न अनुभवों से कुण्डलिनी की जाग्रत अवस्था का भान किया जा सकता है।

६.प्रश्न. क्या गृहस्थ व्यक्ति कुण्डलिनी जागरण कर सकता है?

उत्तर. इस दिव्यावस्था को प्राप्त करने में गृहस्थ व्यक्ति के लिए कोई बाधा नहीं होती है। यह अवश्य है कि प्राणोत्थान क्रिया होने पर परिवार के प्रति मोह कुछ कम हो जाता है पर अपनत्व बढ़ता है। साधक एकांत में रहना चाहता है परन्तु उसके कर्तव्यों में कोई अन्तर नहीं आता। मेरे कई गृहस्थ शिष्यों में सभी उत्तरदायित्वों का पालन करते हुए कुण्डलिनी जाग्रत कर सहस्त्रार तक पहुंचायी है।

७.प्रश्न. क्या शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण सम्भव है?

उत्तर. शक्तिपात तो तीव्र और आमूलचूल परिवर्तन की प्रक्रिया है जो एक ही झटके में कुण्डलिनी को मूलाधार से उठा कर सहस्रार तक पहुंचा देती है और साधक को सिद्धों व योगियों के दर्शन होने लगते हैं, सिद्धाश्रम की दिव्य प्राण वायु को वह अपने अन्दर समाहित करने लगता है। अनन्य सेवा के द्वारा, नि:स्वार्थ समर्पण के द्वारा शिष्य अपने सद्गुरू के हृदय को स्पंदित कर उसके द्वारा

पूज्य गुरूदेव गृहस्थ जीवन का आनन्द लेते हुये

से कहीं पर भी विचरण कर सकता है। सही अर्थों में इस साधना के माध्यम से ही साधक आत्म साक्षात्कार कर ब्रह्ममय बन सकता है।

४.प्रश्न. कुण्डलिनी जागरण में गुरु की क्या भूमिका है?

उत्तर. बिना गुरू के कुण्डलिनी जागरण किस प्रकार से संभव है, हम कम से कम समय में उन्मनी अवस्था प्राप्त करें, कुण्डलिनी सही दिशा में अग्रसर होती रहे, इसका बोध मात्र गुरू ही करा सकता है। कुण्डलिनी जागरण होते ही स्वत: साधक के हृदय में गुरू के प्रति असीम स्नेह उमड़ पडता है और गुरू चरणों में पहुंचने पर ही उसे परम तृप्ति अनुभव होती है। गुरु कृपा से ही सुप्त कुण्डलिनी शक्ति प्रबुद्ध होकर ऊपर ब्रहमरन्ध्र की ओर जाने के लिए छटपटाने लगती है। साथ ही सद्गुरू शिष्य की आध्यात्मिक उन्नति पर भी बराबर दृष्टि रखता है और उसे उचित मार्ग दर्शन देता रहता है।

५.प्रश्न. कुण्डलिनी जाग्रत हुई या नहीं, इसे कैसे जाना जाये?

उत्तर. कुण्डलिनी जागरण होते ही व्यक्ति उन्मनी अवस्था में हो जाता है, उसका सारा चिन्तन गुरु की ओर लग जाता है। अंदर एक विशेष प्रकार का प्रकाश फूट पड़ता है और

वह शक्तिपात नि:सृत कर ग्रहण कर लेता है और इस प्रकार बिना योगाभ्यास व साधना के द्वारा भी वह चक्र भेदन कर सहस्रार में प्रवेश कर सकता है।

८.प्रश्न. कुण्डलिनी जागरण में कौन से खतरे हैं?

उत्तर. वह कुछ भ्रमित लोगों का ही विचार है। कुण्डलिनी जागरण में खतरे तो हैं ही नहीं, पाना ही पाना है। कभी-कभी कुछ अप्रिय घटनाएं घटित हो जांती हैं, जैसे भय से, कम्प, स्वेद, नसें खिंचना, प्राण सुषुम्ना में चढ़ने से कमर, वक्षस्थल या कण्ठ में बन्धन सा अनुभव होना इत्यादि। परन्तु ये क्षणिक होते हैं, इन्हें सह लेना चाहिए अन्यथा दो चार रेचक प्राणायाम करने से यह सब कुछ शान्त हो जाता है।

९.प्रश्न. कुण्डलिनी जागरण की कौन सी पद्धति सर्वाधिक अनुकूल है?

उत्तर. कुण्डलिनी जागरण की कई पद्धतियां है जैसे मंत्रात्मक पद्धति, तंत्रात्मक पद्धति, लामा प्रणाली, हठयोग क्रिया, ध्यान योग, प्राणायाम, मुद्राएं, इत्यादि। ये सभी पद्धतियां सम्पूर्ण एवं अनुभव गम्य हैं परन्तु एक योग्य गुरू ही बता सकता है कि अमुक शिष्य के लिए कौन सी पद्धति सर्वाधिक अनुकूल है। मेरी राय में तो मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण, प्रत्येक गृहस्थ के लिए सहज व सिद्धिदायक है इसके लिए यौगिक क्रियाओं या ध्यान प्रक्रिया में निष्णात होने की भी आवश्यकता नहीं है। पर यह मंत्र भी गुरू द्वारा ही प्रदत्त हो।

१०.प्रश्न. क्या स्त्रियां कुण्डलिनी जागरण कर सकती हैं?

उत्तर. कुण्डलिनी जागरण साधना यौन भेद से परे है। स्त्रियां पुरूषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं, अत: वे कुण्डलिनी जागरण में जल्दी सफल हो पाती है। भावनात्मक स्वभाव होने से शक्तिपात का प्रभाव भी उन्हें अधिक स्वीकार्य होता है। सामाजिक बन्धनों के कारण या रजोकाल में अनियमितता के कारण उनके अभ्यास में न्यूनता रह जाती है, परन्तु प्रयत्न करके वे इन बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकती हैं।

११.प्रश्न. सामाजिक दृष्टि से कुण्डलिनी जागरण का क्या महत्व है?

उत्तर. समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए कुण्डलिनी जागरण अत्यधिक उपयोगी है। इससे विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति व एकाग्रता विकसित होती है। अधिकारी वर्ग में प्रशासनिक सामर्थ्य वैज्ञानिक में आविष्कारक क्षमता, इत्यादि प्रत्येक प्रकार की गुणवत्ताएं इस साधना से बढ़ती हैं। यह मानव में छिपी हुई अनेक सृजनात्मक शक्तियों का उदय करती है। इन्द्रियों पर संयम रखने की शक्ति प्रदान कर यह मनुष्य को संतुष्ट रखती है, और इस प्रकार उसके अध:पतन को रोकती है। यह साधना व्यक्ति के निराशावादी दृष्टिकोण को परिवर्तित कर नवीन उत्साह का संचार करती है। एक प्रकार से यह प्रक्रिया पशु जीवन से मानव जीवन और उससे भी आगे देवतुल्य जीवन जीने की कला सिखाती है।

कुण्डलिनी जागरण से शरीर की जड़ता और आलस्य, मलिनता और न्यूनताएं समाप्त हो जाती हैं। वृद्धावस्था पुन: यौवनावस्था में परिवर्तित होने लग जाती है, शरीर के समस्त रोग तो इस योग-अग्नि में जल कर भस्म हो ही जाते हैं।

कुण्डलिनी-क्रिया

ज्यों ही मेरी कुण्डलिनी जागरण क्रिया हुई तो एक अजीब सी स्थिति बन गई .. मेरा आज्ञा चक्र जाग्रत सा हो गया, और किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका भूतकाल मेरी आंखों के सामने साकार होने लगा। यही नहीं अपितु मैं स्वयं अपना भविष्यकाल हू-ब-हू देखने लगा, कि कब, मेरे साथ क्या घटना घटित होने वाली है, और मैं तेजी के साथ सफलता के पथ पर अग्रसर होने लगा।

***सतगुरू की कृपा भयी
अंतर भया प्रकास
मुख कस्तूरी महा मही
निर्मल बन आकास***

निर्झर की उपासना और आनन्द पथ पर प्रयाण

राजयोग पद्धति के अनुसार मूलाधार में स्थित अपान प्राण के साथ मनोबल के द्वारा जब ब्रह्मरन्ध्र का सम्बन्ध स्थापित किया जाता है तो दोनों के मिलन से सुषुम्ना दण्ड में उत्पन्न होने वाला प्रकाश ही कुण्डलिनी है किन्तु इसके चक्रों का प्रत्यक्ष दृष्टिगत् स्वरूप मेरूदण्ड के बाहर निर्गत ज्ञानसूत्रों के गुच्छकों के रूप में दिखता है। जब इन नाड़ी गुच्छकों में ध्यान की विद्युत प्रवाहित होती है तभी ध्यानस्थ रश्मियों से भास्वर होकर वे एक विशेष कमलवत् चक्र के रूप में दिखाई देते हैं।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि कुण्डलिनी एक अपूर्व दिव्यज्योति है जिसकी सहायता से देह के आन्तरिक रहस्यमय सूक्ष्म पदार्थ एवं बाहय स्थूल तथा सूक्ष्म जगत के पदार्थ भी प्रत्यक्ष दर्शनीय हो जाते हैं। परन्तु ध्यान योग के अनुष्ठान के बिना साधारण मनुष्यों को यह नहीं दिखाई पड़ते। प्रकाश पाकर ही ये चक्र 'भावना' के कारण कमलाकार दिखते हैं अन्यथा तमसावृत रहने से इनका अस्तित्व नहीं मिलता।

अत: यह स्पष्ट है कि ध्यान योग का दिव्य दीपक लेकर ही आन्तरिक विज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। योगियों ने मानव के 'अन्नमय कोश' के ऐसे मार्मिक स्थलों का ध्यान योग के द्वारा अनुसन्धान किया जिन पर प्रभाव डालने से निश्चय ही दिव्य शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है। साथ ही साथ यदि प्राणायाम, आसन एवं मुद्राओं का अभ्यास किया जाए तो ध्यान योग का मार्ग अत्यंत सुगम बन जाता है।

चक्रों में प्राणो पासना ध्यान को धारणपूर्वक दृढ़ करने का एक सूक्ष्म प्रकार है जिससे चक्रों का यथार्थ दर्शन प्राप्त होता है। इन प्रक्रियाओं के निरन्तर अभ्यास करने से चक्र भेदन सरलता तथा शीघ्रता से सम्पन्न हो जाता है और अपान प्राण का साक्षात्कार, मूलाधार में ज्योति की उत्पत्ति और कुण्डलिनी जागरण हो जाता है। यह साधना आन्तरिक तम के आवरणों को क्षीण करते हुए सुषुप्त दिव्य कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर देती है।

यह अपने प्राणों को अपने ही हाथ में ले लेने की कला है, इस चंचल मन को भी आहिस्ते से ध्यान की डोरी लेकर बांध देना फिर यह भी तुम्हारे प्राणों के साथ आनंद यात्रा पर चल पड़ेगा।

प्राण साधना क्रम

१. सर्वप्रथम त्राटक के द्वारा धारणा को विकसित करने का अभ्यास करें ताकि चित्त को एकाग्रता के साथ ध्यान में प्रविष्ट किया जा सके।

२. षट क्रमों (नेति, धोति, वस्ति, नौलि, त्राटक, कपालभाति) के द्वारा शरीर का शुद्धि करण करें ताकि इन्द्रिय जनित विकारों का शमन हो सके।

३. मेरूदण्ड को सीधा रखते हुए आसन पर बैठे तथा ठोड़ी को सीने से लगा कर आंखें बन्द कर लें।

४. मूलाधार में धारणा करके ध्यान की विस्तृत दृष्टि से देखने का प्रयत्न करें कि यहां से उष्ण वाष्प रूपी कोई वस्तु सुषुम्ना पथ में सरकती हुई विशेष बिन्दुओं पर रूकती व स्पर्श करती हुई नासा द्वारों से बाहर निकल रही है।

५. इसके साथ ही भीतर जाती हुई प्राण

एक मधुर गुंजन मानो मंदिर में घंटा बजकर शान्त हो रहा हो, मेघ गरज कर वर्षा का आगमन बोल गया हो, वीणा की झंकार प्राणों को झंकृत कर गयी हो —यही तो अनहद है पर इसके भी और आगे दिव्य प्रकाश पर ही पूर्ण तृप्ति है।

वायु (श्वास) पर भी ध्यान रखें। इसे भावना बल से मूलाधार तक ले जाएं। स्वाभाविक, मंथर गति से चलते श्वास-प्रश्वास का अनुसरण करते हुए यह धारणा की प्रक्रिया की जानी है।

६. पूरक के समय भी श्वास को अधिकारपूर्वक मन्दगति से प्रविष्ट करें और ओंकार (ॐ) की मानसिक ध्वनि के साथ इस प्राण को मूलाधार में ले जाकर स्थिर करते रहें।

७. ध्यान के द्वारा ही इसके साथ मधुर भ्रमर गुंजरण को मिलाकर प्रश्वास के साथ बाहर आते हुए मकार के सानुनासिक उच्चारण जैसी ध्वनि को सुनने का प्रयत्न करते हुए मन को उसी में तन्मय कर दें।

८. प्रश्वास और नाद का तार यदि मार्ग में टूट जाये तो मूलाधार से ही पुनः प्रारम्भ करके सहस्रार तक ले जायें।

९. धैर्य और श्रद्धापूर्वक गुंजार सहित सुखद स्पर्श का आनन्द लेते हुए इस अभ्यास को नियमित रखें जब तक आपकी अनुभूति मूर्तरूप धारण न कर ले। जब तक आपको आन्तरिक संतुष्टि प्राप्त न हो इस प्रक्रिया से आगे न बढ़ें।

इस प्रक्रिया से प्राण की गति मन्द और अन्त में निरुद्ध सी पड़ जाएगी किन्तु भम्रर गुंजार और प्राण स्पर्श तीव्र हो जायेंगे। यह ध्यान रखें कि मन को भी ध्यान की डोरी से बांध कर प्राण के साथ चलाना है।

१०. अब अश्विनी मुद्रा अर्थात् गुदा संकोचन करते हुए भावना के द्वारा गुदा में निवास करने वाली अपान वायु को ऊपर नाभि की ओर गतिशील करें। इस प्रकार प्रश्वास (अपान) के द्वारा मूलाधार क्षेत्र की समस्त मलिनता को बाहर जाते हुए देखने का अनुभव करें। इस प्रश्वास रूप 'अपान' पर ध्यानपूर्वक संयम करने से प्राण निरोध की सूक्ष्मता एवं दीर्घता स्वयं बढ़ जायेगी। जितने समय में एक प्रश्वास पूर्ण हो उतने समय में 'ॐ भूः' की आवृत्ति भी पूरी हो जाए इतना अभ्यास होना चाहिए।

११. आषाढ़ तल से भूः के साथ प्रश्वास को उठाकर षट् चक्रों से होते हुए मस्तिष्क में भरे प्राण से मिलकर नासा द्वारों से निकलता हुआ अनुभव करें।

१२. पुनः देह के रिक्त स्थान को ॐ के गुंजार सहित नथुनों से प्राण को लेकर ऊपर से नीचे (आज्ञा चक्र से मूलाधार चक्र) इन स्थानों को शक्तिपूर्ण अनुभव करते हुए नीचे तक आएं।

इस क्रमिक अभ्यास से प्राण तथा अपान दोनों पर वशित्व प्राप्त होगा।

१३. यह ध्यान रखना है कि 'भूः' मिल कर प्रश्वास (अपान) के द्वारा समस्त मलिनताओं के बाहर जाने तथा 'ॐ' के साथ श्वास (प्राण) के द्वारा बाहर से आती

गणेश वट्टाणी, बम्बई

कुण्डलिनी जागरण

जीवन की भाग दौड़, जीवन की व्यस्तता, उथल पुथल, निराशा, हताशा कठिनाइयां, बाधाएं एवं अड़चने एक बारगी ही समाप्त हो जाती है, और जीवन इस कुण्डलिनी जागरण क्रिया से सरल सफल चहकता हुआ उत्फुल्ल हो जाता है ... ऐसा लगता है कि जैसे सारा जीवन ही बदल गया हो।

६ मई १९९३
भोपाल
पूज्य गुरुदेव का भोपाल में
दीक्षा कार्यक्रम

सम्पर्क
सुब्बाराव
टेलीफोन : ५४९२८२

नूतनशक्ति को अंदर जाते हुए अनुभव करने व देखने का प्रयत्न करना है।

जब तक कुछ सुनाई (गुंजरण) या दिखाई न दे तब तक तीव्र भावना से अभ्यासरत रहें। थोड़े ही दिनों में अनुभूतियां मिलनी प्रारम्भ हो जायेगीं और सुषुम्ना पथ पर एक प्रकार का तेज प्रकाश प्रकट हो जायेगा जिसकी दीप्ति में सभी षट् चक्र स्पष्ट दिखाई देगें। इसी प्रकार आगे स्वाधिष्ठान आदि चक्रों पर भी यही प्राण साधना करते रहें।

पूज्य गुरुदेव

पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी अद्वितीय अप्रतिम योगी है, निर्झर के उपासक हैं, शास्त्रों के ज्ञाता हैं, और कुण्डलिनी जागरण के सिद्धहस्त अध्येता हैं।

जीवन की ऐसी कोई समस्या ही नहीं है, जो इनके चरणों में बैठने से समाप्त न होती हो, सही अर्थों में गुरुदेव तो देवपुरुष हैं।

शक्तिपात के माध्यम से कुंठा, निराशा हताशा और गलत-सलत विचारों को समाप्त कर जीवन को गुलाब के ताजे पुष्प की तरह उत्फुल्ल करने में गुरुदेव सही अर्थों में समर्थ हैं।

दिव्यता सदैव एक प्रकाश पुंज के रूप में समक्ष आती है उसमें चकाचौंध नहीं, तीव्रता नहीं-एक निर्झर होता है तृप्ति का, और ध्यान योग उसी निर्झर में भीगने की यात्रा है।

इस शुद्धि करण प्रक्रिया के अन्त में मूलाधार में ज्योति की उत्पत्ति होती है। सर्वप्रथम ध्यान दृष्टि में एक त्रिकोण अग्नि कुंड मूलाधार में दिखाई देता है। यहां से शुभ्रवर्ण ज्वालाएं उठकर, मेरूदण्ड को प्रकाशित करती हुई ब्रह्मरन्ध्र (सहस्रार) के द्वार से बाहर जा रही होती है। यही कुण्डलिनी की उत्थापन क्रिया है। भम्रर गुंजरण साथ-साथ चलता रहता है। फिर पूरक द्वारा लिया गया श्वास अंदर प्रवेश कर मूलाधार से उठती ज्वालाओं को अधिक प्रदीप्त कर देता है। अत: जब तक मूलाधार से आज्ञा चक्र तक प्रकाश पुंज की उत्पत्ति न हो तब तक ध्यान माला फिराते रहना चाहिए।

कुण्डलिनी जागरण के भी वस्तुत: दो रूप हैं। एक तो प्राणोत्थान है दूसरा रूप प्रकाशमयी अवस्था की उत्पत्ति है।

प्राणोत्थान की स्थिति तब बनती है जब किसी प्रकार की प्राण साधना से आन्तरिक प्रकाश प्रकट नहीं होता किन्तु प्राण इन चक्रों में अपना कार्य प्रारम्भ कर देता है। इस समय मूलाधार में उपस्थित अपान प्राण ध्यान की लगातार चोटी से विक्षुब्ध होकर इस प्रदेश की नाड़ियों को मथित करता है तथा मूलाधार से सुषुम्ना शिखर तक चींटियों के रेंगने जैसी गति या उष्ण जल के बहने जैसी क्रिया उत्पन्न कर देता है। कभी-कभी इस स्पर्श के अति शीतल होने से समस्त देह रोमांचित हो उठती है। इसी का नाम प्राणोत्थान है। कई साधकों को घण्टे का महानाद, झींगुर की झंकार, मृदंग का घोष, वीणा की ध्वनियां और मेघ गर्जन का शब्द सुनाई देता है और वर्षों तक सुनाई देता रहता है। निरंतर अभ्यास करने से प्राणों के उर्ध्व गमन में प्रतिबन्ध हट जाने से यह प्राणधारा सुषुम्ना से प्रवाहित होकर मस्तिष्क में जाने व भरने लगती है परन्तु प्राणोत्थान हो जाने पर भी चक्र तमसावृत रहते है। इन चक्रों में स्पर्श जन्य अनुभव तो होते हैं परन्तु दर्शन कुछ नहीं होता।

अत एव साधक को केवल प्राणोत्थान या अनाहद नाद की उत्पत्ति पर ही संतुष्ट नहीं होना है क्योंकि प्रकाश रूपी कुण्डलिनी की दिव्य ज्योति के बिना आन्तरिक साक्षात्कार संभव नहीं है।

जब तपस्वी साधक की निष्ठा के साथ नि:स्वार्थ योग पारंगत सद्गुरु का स्नेह स्त्रोत मिल जाता है तब पूर्वोक्त दिव्य ज्योति प्रकट होकर क्रियाशील हो जाती है। तब यह दिव्य ज्योति सुषुम्ना में प्रविष्ट होकर इसे प्रदीप्त करती हुई, प्राणों का संचार करती हुई, स्थान-स्थान पर सूक्ष्म स्नायुजाल से बने चक्रों को प्रकाशित करती हुई ज्ञान एवं क्रिया के आवागमन की बाधाओं को हटाती हुई सहस्रार तक पहुंचती है। इस अपूर्व दिव्य दर्शन से साधक की जो आनन्दमयी अवस्था प्रकट होती है वह अकल्पनीय तथा अवर्णनीय होती है।

शक्तिपात साधना या सिद्धि द्वारा संभव ही नहीं यदि यह सम्भव होता तो मानव रूप में इस परम सत्ता को आने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। आत्मबोध कराने के लिए उस देवत्व को मनुष्य रूप धारण करना ही पड़ता है, जिसे हम गुरु कहते हैं।

जीवन की सफलता छिपी है पूज्य गुरूदेव के अनुग्रह में

शक्तिपात शिष्य के जीवन का परम सौभाग्यशाली क्षण होता है। परम कारुणिक गुरु द्वारा प्रदत्त पावन प्रसाद है। जब किसी शिष्य के जन्म जन्मान्तरों की पुण्यराशि, समुदित होती है, उसके जन्म-मरण के बन्धन की विच्छित्ति का क्षण आता है उस समय वह परम-तत्त्व ही मानव देह धारण करके गुरु रूप में अवतरित होकर शिष्य का कल्याण करता है। शिष्य तो बिल्कुल अबोध शिशुवत् होता है -- उसे किंचित् भी बोध नहीं होता कि वह पथ कैसा है? कहां है? जहां उसने जाना हैं घड़ा नहीं जानता कि कुम्हार ने उसे कैसे और किस उद्देश्य के लिए उसे बनाया है। साधना मार्ग में अनुकूल दिशा देने के लिए सुपात्र एवं जिज्ञासु शिष्य पर गुरु का प्रबल अनुग्रह ही शक्तिपात

कुण्डलिनी शक्ति की अधिष्ठात्री महामाया

जब हम पूज्य सद्गुरु देव का चरणस्पर्श करते हैं तो स्वतः ही उनका तपस्यांश हमें प्राप्त हो जाता है और हमारी न्यूनताएं, कष्ट उनमें समा जाते हैं। इसी से शास्त्रोक्त मर्यादा है कि शिष्य कभी भी खाली हाथ पूज्य गुरुदेव का चरण स्पर्श न करे।

दीक्षा-चेतना

साधक गुरुदेव की सेवा कर दीक्षा प्राप्त कर सकता है एक के बाद एक दीक्षा ले सकता है और ले सकता है "दीक्षा-चेतना" -

दीक्षा चेतना से मस्तिष्क का विकास तो होता ही है, "चेतना" लक्ष्मी का स्वरूप है फलस्वरूप घर में लक्ष्मी का विस्तार तथा व्यक्ति की उन्नति भी हो जाती है।

आर्थिक व्यापारिक उन्नति की दृष्टि से "दीक्षा-चेतना" एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, जिसका प्रभाव शत प्रतिशत रहा है।

कहलाता है। सेवा, समर्पण एवं श्रद्धा से आनत शिष्य के हृदय पटल पर अपनी तपस्यांश देकर, अपनी विशिष्ट शक्ति प्रदान करके शिष्य को गुरु नये रूप में संवारता है। क्योंकि पूर्व अवस्था में शिष्य दिशा हीन एवं दिग्भ्रान्त ही होता है। शक्तिपात के द्वारा गुरु उस लक्ष्य का उसे सांकेतिक बोध तो करा ही देता है। शक्तिपात साधना या सिद्धि द्वारा सम्भव ही नहीं हैं यदि यह सम्भव होता तो मानव रूप में उस परम-सत्ता को आने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। आत्मबोध की प्रक्रिया के लिए उस देवत्व को मनुष्य रूप धारण करना पड़ता है। जिसे हम गुरु कहते हैं। इस प्रकार साधना के उच्च रहस्य एवं शिष्य के सुप्त आभ्यन्तरीय शक्तियों को जाग्रत करने के लिए शक्तिपात की अवस्था आती ही है। शक्तिपात के साथ ही शिष्य के समस्त दोषों का परिहार होता है, तथा वह अपने चरम लक्ष्य की ओर त्वरित गति से अग्रसर होने लगता है। शक्तिपात स्पर्श द्वारा नेत्रों द्वारा तो होता ही है सदेह हजारों मील दूर स्थित शिष्य पर भी शक्तिपात करने में गुरु समर्थ होते है। गुरु के इस अनुग्रह को किसी भी नियम में आबद्ध नहीं किया जा सकता वे किसी प्रकार शक्तिपात कर सकते हैं। इसके लिए वे परम स्वतंत्र है। इसीलिए यथावसर गुरु चरणस्पर्श आदि करने के सुअवसर से चूकना नहीं चाहिए। जिस प्रकार बंजर भूमि में बोया हुआ बीज खाद और जल पाकर के भी व्यर्थ चला जाता है, उसी तरह अपनी शक्ति की अव्यर्थता के लिए गुरु पुरुषार्थ हीन, अविवेकी एवं अश्रद्धालु शिष्य पर शक्तिपात नहीं करता क्योंकि यह शास्त्र विरूद्ध है। शक्तिपात की क्रिया शिवत्व का प्रथम सोपान है।

जब पूज्य गुरुदेव की विशेष अनुकम्पा स्वरूप मुझ पर विशेष शक्तिपात हुआ उस समय मैं इससे बिल्कुल अनभिज्ञ था, शास्त्रों में पढ़ा जरूर था कि शक्तिपात की क्रिया गुरु अधिकारी जानकर शिष्य पर यथा अवसर करते अवश्य हैं, परन्तु अचानक यह सौभाग्य का पावन क्षण मुझ पर आएगा, नहीं जानता था। मैं चाहता जरूर था कि वैसी अनुकम्पा पूज्य गुरुदेव कभी करें, उस क्षण का मुझे इन्तजार था बेसब्री से, क्योंकि जब से मैं होश सम्भाला था तब से विचित्र प्रकार की पिपासा एवं संसार के प्रति वितृष्णा मन में अचानक घर कर गयी थी। ज्यों-ज्यों अवस्था बढ़ती गयी अनेक प्रकार के सांसारिक घटना कर्मों से मन और अधिक अशांत और उद्वेलित हो गया। जैसे संतप्त मछली को सदैव लबालब जल से पूर्ण सरोवर की तलाश रहती है, उस निर्मल सरोवर को प्राप्त कर उसकी खोज समाप्त हो जाती है। तथा वह तृप्त एवं निश्चिंत हो जाती है। उसी प्रकार अनुभव किया जब मुझपर प्रथम शक्ति पात हुआ। मैं मंत्र जप में खोया था अचानक सारे शरीर में झनझनाहट होने लगी, मैनें सोचा शायद मंत्र जप की ऊर्जा विशेष या साधना का कोई परिणाम होगा, ज्यों-ज्यों यह अधिक बढ़ने लगी, कुछ घबराहट-सी होने लगी, क्योंकि मन ऐसी क्रिया से पहले अनभिज्ञ था। माला एवं मंत्र जप को छोड़ दिया, कक्ष से बाहर आकर अपनी बुद्धि का सहारा लिया, किन्तु यह बुद्धि से परे की अवस्था थी। उसी समय एक सनसनाहट युक्त आग का गोला रीढ़ की हड्डी से होता हुआ दोनों भौंहो के बीच आकर टिक गया और तब से वही प्रभु प्रसाद मेरे जीवन के आनन्द का परम स्त्रोत है।

आज मैं अपने को धन्य-धन्य तथा परम सौभाग्यशाली समझता हुआ उनकी अनुकम्पा का जन्म-जन्मान्तरों तक ऋणी बना रहूंगा। मानसिक शांन्ति, जीवन की उन्नति एवं पूर्णता चाहने वाले साधक या शिष्यों के लिए शक्तिपात के अतिरिक्त उस लक्ष्य के लिए सुगम पथ और कोई नहीं है, ऐसे शक्ति सम्पन्न परम कृपालु

गुरु जब सौभाग्य से किसी मोड़ पर मिल जायं तो उनके चरण पकड़ कर उनके कृपा प्रसाद प्राप्त करने का सदैव प्रयास करना चाहिए।

जीव का स्वाभाविक स्वरूप तो आनन्दमय ही है। वह परम सत्ता का ही अंश है, जब से वह उस सूत्र से विच्छिन्न होकर जीव दशा को प्राप्त करता है, तब से वह भटका हुआ उस परमानन्द की प्राप्ति हेतु सदैव प्रयास करता रहता है, किन्तु अज्ञान से आबद्ध वह जीव उस तत्त्व को नहीं जान पाता। और जब तक उस ब्रह्म को अपने अन्दर स्थापित करके उसे प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह जन्म मरण के चक्र से नहीं छूट सकता तथा अनन्त जन्मों तक भटकता रहता है। सौभाग्यवश कोई गुरु जीवन के किसी क्षण में उसे मिल जाये तो अवश्य ही वह सौभाग्यवान् होता है। जब गुरु देखता है कि प्रयत्न करके भी शिष्य या साधक साधना मार्ग में आगे नहीं बढ़ पा रहा है, या उसे मंत्र-सिद्धि नहीं हो पा रही, अथवा उच्च साधना के लिए उसके शरीर में ऊर्जा नहीं है, तब गुरु शक्तिपात के द्वारा अपना तपस्यांश शिष्य को देता है, जिसे हम शक्तिपात कहते हैं। जब मुझ पर प्रथम शक्तिपात हुआ उस समय मैं इतना आत्मविभोर एवं उल्लसित हो गया जिसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। वह आनन्द ही अपने आप में अद्वितीय था।

परमानन्द से बोझिल आंखे स्वत: ही बन्द थीं, सारा वातावरण विचित्र एवं मधुरिम प्रकाश से आच्छादित था, उसी विशिष्ट अवस्था में ही पूरे हिमालय को एक छोर से दूसरे छोर तक देख रहा था। उसकी एक-एक वस्तु मुझे जानी पहचानी सी लग रही थी। सौभाग्य का दूसरा रहस्य तो और भी विस्मयकारी था, जहां कहीं भी विशेष स्थान देखा, वहां सर्वत्र पूज्य गुरुदेव को सशरीर उपस्थित पाया, जो मेरा परम पुण्य पुंज का साकार प्रतिरूप कहा जा सकता है। जैसे कि मैंने पढ़ा था कि पूज्य गुरूदेव हिमालय के चप्पे-चप्पे को नापे हुए हैं, उसका आंखों देखा

सतगुरु हमसूँ रीझ के कह्या एक प्रसंग।
बरसा बादल प्रेम का भीज गया सब अंग।।
बादल एक प्रेम का हम पर बरसा आये।
भीजी अन्तरात्मा निर्मल बन हरियाये।।

प्रमाण उपस्थित था। कालान्तर में कुछ सुअवसर पाकर उन स्थानों को जाग्रतावस्था में देखने के लिए उन स्थानों पर गया तो यह सब देखकर मैं अत्यधिक आश्चर्य से भर गया कि एक-एक वस्तु जो ध्यान की अवस्था में देखा था, पेड़ पौधे, विशेष शिला समूह, नदी, पहाड़ तथा उनके विभिन्न रंग सब कुछ वैसा ही पाया। मैं पूज्य गुरूदेव का परम कृतज्ञ हूं। जब भी वे दृश्य आंखों में उतरते हैं, तो आसुओं से भीगे हुए नयन स्वत: ही उनके चरणों में नमित हो जाते हैं।

मैं पूज्य गुरुदेव का बहुत पुराना दीक्षित शिष्य हूं, एक शिष्य के नाते गुरु पर जितनी श्रद्धा होनी चाहिए, उतनी कभी हो नहीं पायी। मैं चाहता था उनकी विशेष कृपा मुझ पर हो, समझता भी था कि पूज्य गुरुदेव कोई साधारण व्यक्तित्व नहीं है, बहुत अधिक सामीप्य एवं सेवा करते हुए भी उस रहस्य को छू नहीं पाया था। श्रद्धा की उतार चढ़ाव सदैव बनी रहती थी क्योंकि मानव मन सदैव से शंकालु और अश्रद्धालु रहा है। जब तक वह कोई दिव्यता न देखले तब तक बुद्धि उस पर हावी रहती है। विशेष कर के पूज्य गुरुदेव के सीधे-सादे और सरल व्यवहार से भ्रमित था। हमारी एक पुरानी आदत रही है, जो भी महापुरुष हो वह कोई न कोई चमत्कार दिखाए, तभी हम उसे महापुरुष कहते रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव अनन्त सिद्धियों के स्वामी होते हुए भी चमत्कार प्रदर्शन को रत्तीभर भी नहीं चाहते। किसी लाल वस्त्र धारी के पास कुछ भी थोड़ा सा टोना टोटका होने पर अहंकार से भरा हुआ सदैव क्रोध से ग्रसित रहता है। पूज्य गुरुदेव इतने सौम्य सरल तथा इतने शिशुवत् क्यों हैं? विद्वानों में विद्वान्, आयुर्वेद, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वेद वेदान्त मंत्र, तंत्र, यंत्र जीवन का कौन-सा क्षेत्र इनसे छूटा है जिसे ये छुए नहीं, सर्वथा परिपूर्ण फिर भी विचित्र दुविधाओं से मन भरा रहता था। मेरे अपने अनेक अति समीपस्थ स्वजन भी मुझे समझाने का बहुत

प्रयास करते किन्तु मैं अपने कुतर्कों से नहीं हटा। मेरी श्रद्धा बीच में ही झूलती रही क्यों कि कृष्ण जैसे व्यक्तित्व भी अर्जुन के गले में यह बात नहीं उतार पाये कि कृष्ण परम पुरुष है, ब्रह्म का अवतार हैं। अर्जुन ने कृष्ण को एक राजा, सखा, मित्र और हितैषी से आगे समझ ही नहीं सका क्यों कि उसका मानवोचित व्यवहार वैचित्र्य से भरा था। पूज्य गुरुदेव अपने को आच्छन्न रखने के लिए उसी प्रकार कई बार विचित्र व्यवहार करते हैं जिसे देखकर साधारण साधक भ्रमित हो ही जाते हैं। अन्त में अर्जुन को समझाने के लिए कृष्ण को अपना विराट् स्वरूप दिखाना ही पड़ा, तभी अर्जुन अपना अस्तित्व और कृष्ण के विराट् व्यक्तित्व को समझ पाया।

गुरु कृपा

गुरु कृपा का तात्पर्य गुरु को प्रसन्न करना नहीं है, अपितु प्रयत्न करके उनसे दीक्षा प्राप्त करनी है, जब प्रथम दीक्षा प्राप्त हो जाती है, तो उसका भाग्योदय प्रारंभ हो जाता है, दूसरी और तीसरी दीक्षा से वह साधना के पथ पर अग्रसर होने लगता है, और निरन्तर उन्नति की ओर बढ़ता हुआ सिद्धि-पथ पर गतिशील हो जाता है, ''गुरु कृपा'' का तात्पर्य ही तीनों दीक्षाएं शीघ्र से शीघ्र प्राप्त करना है।

बाइबिल में आया है - ''मैं और मेरे पिता एक ही हैं।'' जीवन में इसी स्थिति को प्राप्त करना आत्म दर्शन है। और तब सहज ही ज्ञात हो जाता है कि हमारा 'आत्म-तत्त्व' तो हमारे पूज्य गुरुदेव ही हैं।

साधना सिद्धि

पाठकों ने साधना और सिद्धि को अत्यधिक हल्की और मामूली बात समझ ली है, शास्त्रों में लिखा है कि अमुक साधना पांच दिनों में सिद्ध हो जाती है, तो मुझे यह लिखना ही पड़ता है, कि अमुक साधना में सिद्धि पांच दिनों में प्राप्त हो जायगी। और जब पांच दिनों में सिद्धि नहीं मिलती, तब वे निराश हो जाते हैं।

पर यह पांच दिनों में सिद्धि उनके लिये लिखी है, जो कई वर्षों से साधना कर रहे हैं, जो साधना के क्षेत्र में मंजे-तपे है, जिन्होंने कई-कई वर्ष लगाये है इस साधना-क्षेत्र में ... नवागन्तुक साधकों के लिये नहीं।

जो नये-नये साधना पथ पर अग्रसर हुए हैं, उन्हें तो एक-एक साधना कई-कई बार करनी पड़ेगी, तब जाकर सफलता मिलेगी।

और आप सोचें, कि यदि पन्द्रह वर्ष बाद भी यक्षिणी, लक्ष्मी या कोई भी सिद्धि मिल गई तो आगे का तो पूरा जीवन ही जगमगाहट से भर जायगा, और फिर ऐसा जगमगाता जीवन पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्धि का जीवन, पन्द्रह वर्ष बाद भी प्राप्त हो तो घाटे की बात कहां है, यह तो सौभाग्य है ... पूरी-पूरी सफलता है।

जिस दिन मुझ पर शक्तिपात हुआ मै प्रात: स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त हो अपनी पूजा कक्ष में ध्यान की मुद्रा में बैठा था उसी समय मेरा मन किसी गहरे भाव भूमि में हठात् उतर गया। पूरा मेरा मानस् असीम अभूतपूर्व प्रकाश से आलोकित हो गया सद्य: ही पूज्य गुरुदेव के विराट् स्वरूप को देखा, अनन्त मुख मण्डल, अनन्त बाहु, अनन्त नेत्र और उनके प्रत्येक अंगों में समाहित सभी देवी-देवताओं को देख रहा था। इतने दिव्य तेज को देख पाना मेरे लिए असम्भव सा हो रहा था, सारा शरीर पसीने से तर हो गया था - भय से। इस घटना के काफी समय बाद ही मैं अपनी सामान्य अवस्था में हो पाया। अब मुझे न किसी ज्ञान की, न किसी चेतना की, न ब्रह्मत्व की किंचित् भी आकांक्षा है। सिर्फ इतना ही चाहता हूं कि उनके चरणों का सदा ही पुजारी बना रहूं, मैं उनका हूं, यही असीम गर्व मेरे लिए काफी है।

परम पूज्य गुरूदेव की कृपा का मैं चिर ऋणी हूं। जब से मुझ पर शक्तिपात हुआ है जीवन अत्यधिक आनन्द मय, उल्लास तथा उमंगों से आपूरित हो गया है। अनेक वैचित्र्य भरे अनुभूतियों में खोया रहता हूं। मानव शरीर की उपस्थिति एवं उपादेयता और अधिक समझ आने लगी है। मनुष्य शरीर पाकर भी जीव किसी जीवन्त और चैतन्य गुरु के अभाव में सचमुच व्यर्थ एवं पशुवत् ही होता है। शक्तिपात के बाद मन के सभी उद्वेग बादलों की तरह छंट गए, निर्मल मन में ही प्रभु का प्रतिबिम्ब प्रतिभासित होता है। शक्तिपात होते ही मैं अपने अनेक पिछले जन्मों को तथा भविष्य से सम्बन्धित बहुत-सी घटनाओं को ऐसे देखने लगा, जैसे टी. वी. पर फिल्म देख रहा हूं। इसके बाद मैं आश्चर्य से अभिभूत तथा कृतज्ञता वश पूज्य गुरुदेव के चरणों में लिपट गया। आंसुओं से उनके चरणों को भिगो दिया। स्नेह और वात्सल्य पूरित उनके कर कमल मेरे सिर पर सांत्वना देते रहें। वह अवस्था कितनी सुखद एवं करुणामय होती है। गुरु के समान हितैषी संसार में कोई हो ही नहीं सकता। आज मैं जो कुछ भी हूं जैसा भी हूं, उनका हूं।

कुमुदिनी खिल उठती है मंत्रों के स्पर्श से

"मंत्र"-अक्षरों से भी आगे बढ़ मन को मुक्त कर देने की क्रिया है ....

कुण्डलिनी जागरण साधना

२९-५-९३

दिल्ली

इस एक दिवसीय साधना में कुण्डलिनी जागरण क्रिया सम्पन्न करवाई जायगी और उन विशेषताओं या क्रियाओं को समझाया जायगा, जिसके द्वारा कुण्डलिनी जागरण संभव है।

एक श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना सत्र

स्थान : ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली

टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

शुल्क : एक सौ पचास रुपये मात्र

समय : सायं ६ से ८ बजे तक

मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण एक सर्वथा गोपनीय विषय रहा है। योग के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण क्रिया तो सर्वविदित है परन्तु विरले योगियों को ही ज्ञात है कि कुण्डलिनी जागरण के कुछ विशिष्ट मंत्र भी होते हैं। यह एक ऐसी दुर्लभ एवं सर्वांगीण प्रक्रिया है जो सभी चक्रों को एक साथ जागृत करने में समर्थ है। वास्तव में ही वे शिष्य सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें सद्गुरु के मुखारबिन्द से **'कुण्डलिनी जागरण मंत्र'** प्राप्त होता है।

किसी भी प्रकार की साधना (मांत्रोक्त अथवा तांत्रोक्त) से पूर्व सदगुरु से विधिवत् दीक्षा प्राप्त करना एवं गुरु मंत्र का पुरश्चरण, 'सवा लाख जप' सम्पन्न करना अनिवार्य है, ताकि साधक पूर्ण रूप से पवित्र और चैतन्य हो सके। उसके पश्चात् ही गुरुदेव की अनुमति प्राप्त कर शिष्य को मंत्रात्मक कुण्डलिनी उत्थापन प्रक्रिया में संलग्न होना चाहिए।

मंत्रात्मक साधना में प्रवृत्त होने वाले साधक के लिए, कठिन यौगिक क्रियाओं में निष्णात होना आवश्यक नहीं है परन्तु उसे षट्कर्मो - 'नेति, धौति, वस्ति, नौलि, त्राटक व कपाल भांति' के द्वारा शरीर शुद्धि अवश्य कर लेनी चाहिए। इन्द्रिय जनित विकारों के शमन से साधक को शीघ्र ही साधना में अनुभूतियां प्राप्त होती हैं और दिव्य शक्ति के उत्थापन का मार्ग सुगम हो जाता है।

यह मंत्र साधना अनुष्ठान रूप में की जा सकती है जिसका प्रारंभ गुरु द्वारा बताए गये शुभ मुहूर्त में करना चाहिए। नित्य की साधना का समय निश्चित कर लेना चाहिए वैसे प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व का समय इस साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

साधक अपने साधना कक्ष में, पवित्र पीले वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह करके बैठे। सर्वप्रथम अपने इष्ट देवता के स्वरूप जैसे गुरुदेव का ध्यान करे और 'हूं' मंत्र के द्वारा गुरुदेव के ज्ञान को चैतन्य कर अपने अंदर प्राप्त करने की भावना करे। फिर अपने सामने पूज्य गुरुदेव का चित्र स्थापित कर मंत्र सिद्ध परम तेजस्वी **'कुण्डलिनी यंत्र'** की स्थापना करे। यह

मंत्रों द्वारा कुण्डिलनी जागरण के लिए प्रयासरत होना ही आज के व्यस्त वातावरण में अनुकूल है। इस माध्यम का अवलम्बन लेने से कठिन यौगिक क्रियाओं में निष्णात होना फिर आवश्यक नहीं।

यंत्र अत्यंत गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण है जो मात्र एक सक्षम गुरु से ही प्राप्त हो सकता है। अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग करें --

कुण्डलिनी जागरण विनियोग --

ॐ अस्य सर्व सिद्धद श्री कुण्डलिनी महामन्त्रस्य भगवान् महाकाल: ऋषि:, विश्व व्यापिनी महा-शक्ति श्री कुण्डलिनी देवता, त्रिष्टुप् छन्द:, माया 'ह्रीं' बीजे, सिद्धि: शक्ति: प्रणव 'ॐ' कीलकं, चतुर्वर्ग - प्राप्तये जपे विनियोग:।

ऋष्यादि न्यास

महाकाल ऋषये नम: शिरसि।

विश्व व्यापिनी महाशक्ति श्री कुण्डलिनी देवतायै नम: हृदि।

त्रिष्टुप् छन्दसे नम: मुखे, माया - बीजाय नम: लिंगे।

सिद्धि शक्तये नम: नाभौ। प्रणवकीलकाय नम: पादयो:।

चतुवर्ग प्राप्तये जपे विनियोग: नम: सर्वांगे।

इसके बाद साधक को निम्न प्रकार से षडंग न्यास करना चाहिए।

षडंग न्यास कर न्यास अंग न्यास

ह्रां अंगुष्ठाभ्यांस नम: हृदयाय नम:

ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा शिरसे स्वाहा

हूं मध्यमाभ्यां वषट् शिखायै वषट्

ह्रैं अनामिकाभ्यां हुं कवचाय हुं

ह्रां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् नेत्रत्रयाय वौषट्

ह्र: करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् अस्त्राय फट्

अब साधक दोनों हाथ जोड़कर पूर्ण मनोयोग पूर्वक कुण्डलिनी का ध्यान करे -

ध्यान -

'ॐ नील तोयद-मध्यस्थ-तड़िल्लेखेव भास्वरां,

नीवार-शूक-वत्-तन्वीं पीतां भास्वदनुपमां

तस्या- शिखायां माध्ये च परमोर्ध्व - व्यवस्थितां,

स ब्रहमा स शिव: सूर्य: शंकर: परम् - विराट्।

मानस पूजन -

साधक बिना किसी उपकरण के कुण्डलिनी का निम्न प्रकार से मानस पूजन करें -

१. "लं" पृथिव्या त्मकं गन्धं श्री महा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

२. "हं" आकाशात्मकं पुष्पं श्री महा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

३. "यं" वायव्वात्मकं धूपं श्रीमहा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

४. "रं" वन्हयात्मकं दीपं श्रीमहा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

५. "वं" अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

६. "शं" शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा कुण्डलिनी नम: अनुकल्पयामि।

इस प्रकार साधक नित्य करे और फिर निम्न लिखित गोपनीय कुण्डलिनी मंत्र का जप प्रारम्भ करें।

कुण्डलिनी मंत्र

१. त्र्याक्षर मंत्र -' ऐं ह्रीं श्रीं

२. छब्बीस अक्षरों का मंत्र -- ॐ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्र: कुल कुण्डलिनी जगन्मात सिद्धिं देहि-देहि स्वाहा।

३. बावन अक्षर वाला मंत्र -- ॐ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्र: जगन्मांत सिद्धि देहि-देहि स्वयम्भू-लिंगमाश्रितायै विद्युत्कोटि प्रभायै महा-बुद्धि-प्रदायै सहस्र-दल गामिन्यै स्वाहा।

यह मंत्र सूर्य के समान तेजस्वी है और जितना भी सम्भव हो सके मंत्र जप करते हुए कुल सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न करना है। इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु सवा लाख मंत्र जप होते ही साधक की कुण्डलिनी निश्चित रूप से जाग्रत हो जाती है और वह पूर्ण रूप से सिद्धि पुरुष बन जाता है।

नित्य जितना भी मंत्र जप हो, मंत्र जप के पश्चात् उस किये मंत्र जप को कुण्डलिनी को समर्पित कर दें --

जप समर्पण -

'गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।

त्वत्प्रसादान्मे देवि। सिद्धिर्भवति महेश्वरि।।'

आपके साधना कक्ष में गुरु पादुका होना तो सौभाग्य का प्रतीक है। यह तो संकेत है कि आज उनकी आगे-आगे पादुकाएं आयी हैं, कल वे सशरीर भी आएंगे।

मंत्र तो पुस्तकों से भी लिए जा सकते हैं, किन्तु जिसे पूज्य सदगुरूदेव अपने प्राणों से घर्षित कर श्री मुख से प्रदान करें वह तो देवताओं के लिए भी ईर्ष्या का विषय बन जाता है।

अन्त में कुण्डलिनी शक्ति को हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हुए उसकी स्तुति करें।

कुण्डलिनी स्तुति-

ॐ नमस्ते देव देवेशि। योगीश-प्राण वल्लभे।

सिद्धिदे। वर दे। मात:। स्वयम्भू लिंग-वेष्टिते।।

ॐ सुप्त-भुजगाकारे। सर्वदा कारण-प्रिये।

काम-कलान्विते। देवि। ममाभीष्टं कुरुष्व च।।

ॐ असारे घोर-संसारे भव रोगात् कुलेश्वरि।

सर्वदा रक्ष मां देवि। जन्म-संसार-सागरात्।।

वस्तुत: कुण्डलिनी साधना जीवन की सौभाग्यदायक साधना हैं, जिसे योग्य गुरु के सानिध्य में सम्पन्न कर साधक अखण्ड आनन्द में निमग्न हो सकता है और अपने इष्ट के जाज्वल्यमान दर्शन कर जीवन को पूर्णत्व दे सकता है।

एषो धम्मो सनातन:

कुण्डलिनी जागरण तो गुरू कृपा से ही सम्भव है

शक्तिपात जीवन का प्रारम्भ है, जिन पर शक्तिपात हो चुका है उन्हें स्वयं शास्त्र, वेद, तंत्र और चिन्तन का बोध होने लग जाता है। उसके हृदय में शिव कीं पूर्ण अनुभूति होने से वह स्वयं शिवमय बन जाता है।

मनुष्य शरीर ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान है और जो अपने शरीर को भली-भांति समझ लेता है वह पूरे संसार को समझ लेता है। संसार में जितनी शक्तियां हैं वे सारी शक्तियां व्यष्टि रूप से मनुष्य में जीवनी शक्ति है, शास्त्रों में प्राण शक्ति को ही जीवनी शक्ति कहा गया हैं और इन प्राण शक्तियों की केन्द्रीयभूत शक्ति को कुण्डलिनी शक्ति कहा गया हैं मनुष्य के शरीर की समस्त शक्ति गति और क्रिया-शक्ति का आधार यही कुण्डलिनी शक्ति है। शक्ति एक स्थान पर कुण्डली बना कर सांप के समान एकत्र होकर रहती हैं इसीलिए इसे कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है। मनुष्य आत्मकल्याण के लिए इस कुण्डलिनी शक्ति को सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा ऊर्ध्व गति करके कम से षट्चक्र भेदन करके सहस्रार में ले जाने के लिए प्रयत्नशील होता है। जब वह इस प्रकार करने में समर्थ-सफल हो जाता है, तब उसका दिव्य नेत्र खुल जाता है और इस दिव्य ज्ञान शक्ति के बल से वह अपने स्वरूप को देखकर कृतकृत्य हो जाता है, जन्म-मृत्यु के बन्धन से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है।

मनुष्य सही दृष्टि से तो अधूरा ही है, क्योंकि वह अपने शरीर के बाहरी रूप को सजाता संवारता है परन्तु उसके अन्दर के रूप का उसे ज्ञान नहीं है, उसे यह भी ज्ञान नहीं है कि शरीर के अन्दर क्या-क्या हलचल होती है, शरीर में जीव और ब्रह्म की स्थिति कहां पर है, किस प्रकार से जीव को ब्रह्म से मिलाया

जिस प्रकार से शिशु में वस्तुत: उसके पिता का ही तो विकास होता है उसी प्रकार मंत्र रूपी बीज द्वारा शिष्य के अन्दर पूज्य गुरुदेव ही स्थापित होकर उसका क्रमश: विकास करते हैं।

जा सकता है, और पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

इसके अलावा मानव शरीर जड़ है, उसका कुछ हिस्सा ही चैतन्य है, पश्चिम और भारतीय दर्शन का मूल भूत अन्तर यही है कि पश्चिम ने शरीर के बाहरी रूप को पहिचाना, सजाया संवारा और ज्यादा से ज्यादा सुन्दर दिखाने का प्रयत्न किया, इसके विपरीत भारतीय दर्शन अन्दर की ओर पहुंचने में सक्षम हो सका, उसने

आन्तरिक जीवन को पहिचानने की क्रिया की, बाहरी दृष्टि से उसने कपडे का मोह नहीं किया, सस्वादु भोजन की ओर उसकी प्रवृत्ति नहीं बढ़ी, देह को सुन्दर बनाने के लिए साधनों का उपयोग और प्रयोग नहीं किया, अपितु शान्त नदी के किनारे या एकान्त स्थान में बैठ कर मनन चिन्तन और स्वाध्याय किया, उसने अनुभव किया कि अन्दर की ओर प्रवेश करने से सारा जड़ शरीर अपने आप में ही चैतन्य हो जाता है और इस शरीर को चैतन्य होने पर अदभुत् दृश्य दिखाई देने लगते हैं ।, उसका हृदय शुद्ध परिष्कृत और व्यापकं हो जाता है, वह सारे संसार को परिवार की तरह मानने लगता है, उसे पूर्ण रूप से काल-ज्ञान हो जाता है और वह भूत और भविष्य को पूर्णता के साथ देखने में समर्थ हो जाता है। जब तक मानव शरीर स्थित कुण्डलिनी के चक्रों का जागरण नहीं होता तब तक वह सिद्धयोगी नहीं बन सकता, तब तक जीवन में पूर्णता भी नहीं आती।

कुण्डलिनी जागृत होने से मानव सही अर्थों में साधक बनता है और वह उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है। कुण्डलिनी जागृत होने से साधक में यह विशेषता आ जाती है, कि वह अपने शरीर के अन्दर प्राणों को पहचानने की क्रिया सम्पन्न कर पाता है, और प्राणों को और आत्मा को पहिचान पाता है। कुण्डलिनी जागरण से मन: शक्ति पर उसका नियंत्रण हो जाता है, और दसों इन्द्रियों पर वह काबू रख सकता है। कुण्डलिनी जागरण से साधक सहज ही ध्यानावस्था में जा सकता है, और उसकी सहज समाधि लग जाती है, और उसका शरीर चैतन्य, स्फूर्तिवान् और वेगवान् हो जाता है। कुण्डलिनी जागरण द्वारा वह शरीर स्थित ब्रह्माण्ड को भेदन करने की क्रिया प्राप्त कर लेता है और जिसके फलस्वरूप संसार में और ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी कोई घटना घटित होती है तो वह आसानी से उसे जान लेता है। कुण्डलिनी जागरण से राजयोग की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और देह शुद्धि, मन: शुद्धि हो जाती है। कुण्डलिनी जागरण से षट्चक्र भेदन की मानसिक क्रियाऐं भली प्रकार से सपन्न हो जाती है। इस साधना से साधक सहज ही पूरे विश्व में सशरीर या सूक्ष्म शरीर से कहीं पर भी विचरण कर सकता हैं, और उसके लिए कुछ भी अगम नहीं होता।

कुण्डलिनी जागरण से सहस्रार भेदन हो जाता है, और वह स्वयं पूर्ण रूप से शिवमय हो जाता है।

कुण्डलिनी जागरण आत्मा को परमात्मा से मिलाने की क्रिया है और इसके द्वारा ही सहज ही अपने इष्ट के दर्शन हो जाते है। कुण्डलिनी जागरण प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है जिसके द्वारा वह जीवन में सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम हो पाता हैं, जो अन्य साधनाओं के माध्यम से संभव नहीं है।

कुण्डलिनी जागरण के दो प्रकार हैं एक तो योग द्वारा अपने चक्रों का जागरण करते हुए कुण्डलिनी को जागृत करना, जो कि बहुत कठिन कार्य है, दूसरा प्रकार मंत्रात्मक कुण्डलिनी जागरण है, परन्तु दोनों ही प्रक्रियाओं में साधक को कुण्डलिनी शक्ति जगाने का अभ्यास स्वयं नहीं करना चाहिए। यह क्रिया गुरु कृपा साध्य है, क्योंकि यह शक्ति जब जागृत होती है तो कई बार प्रतिकूल दिशा भी ग्रहण कर लेती है। और साधक का बहुत कुछ नुकसान हो जाता है। गुरु को पता होता है कि शिष्य की कुण्डलिनी सही दिशा की ओर गतिशील है या नहीं। अत: कभी भी भूल कर बिना गुरु के इस प्रकार का अभ्यास नहीं करना चाहिए। शास्त्रों में या बहुत से योगियों ने कुण्डलिनी जागरण के विचित्र-विचित्र प्रकार बताए हैं, वे और अत्यधिक कष्ट साध्य एवं सर्वगम्य नहीं कहे जा सकते; किन्तु ज्यों ही गुरु शिष्य की सेवा से प्रसन्न हो जाता है, तब स्वत: कुण्डलिनी जागरण आरम्भ हो जाता है। अत: सर्वप्रथम इसके लिए गुरु कृपा को ही प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन भर बावरी सी भटकती रही कसूर
इतना ही था कि मैंने तुझे प्यार किया था
- अनाम

आरम्भ हो चुका है युग परिवर्तन का क्रम

चैत्र नवरात्रि १९९३ की अविस्मरणीय घटना

इस वर्ष की यह चैत्र नवरात्रि अवश्य ही कुछ विशेष संयोगों से निर्मित हुई थी, सिद्धाश्रम के अलबेले योगी पूज्य पाद गुरुदेव ने जो हठ ठान ली थी कि मैं इस सम्पूर्ण धरा को ही सिद्धाश्रम बना दूंगा, लग रहा था रहा था उसकी परिणति होना आरम्भ हो गई है। कभी युगों पूर्व ब्रह्मा के सवार्धिक तेजस्वी पुत्र महर्षि विश्वामित्र ने ऐसा ही हठ ठाना था, जब उन्होंने एक नवीन ब्रह्माण्ड की रचना कर दिखा दिया था कि योगी जन यदि हठ ठान ही लें तो वे प्रकृति को किस तरह से और कहां तक जाकर परिवर्तित कर सकते हैं।

इस युग में ऐसा ही हठ ठाना है पूज्य गुरुदेव ने। जहां एक क्षेत्र, एक प्रदेश, या एक देश का परिवर्तन करना कठिन हो रहा है। नित्य नई-नई परिस्थितियां सामने आकर सारे माप दन्डों, सारे मूल्यों को नष्ट सा कर दे रहीं हो, वहां नवीन सरंचना कौन करे? प्राचीन मूल्य ही नहीं संभल रहे। किंतु पूज्य गुरुदेव ने निश्चय कर लिया है कि वे असम्भव को सम्भव कर दिखा ही देंगे। निश्चय ही यह साधारण कार्य नहीं है और इसमें सैकड़ों-सैकड़ों हाथों की आवश्यकता होगी। कई ऐसे चाहिए जो उनके हाथ बनें, उनके मुख बनें, उनके पाद बनें, उनके हृदय और मस्तिष्क बनें।

पूज्यपाद गुरुदेव के चिन्तनों से एकरस उनके शिष्य कुछ समय से अनुभव कर रहे थे कि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में उन पर अत्यधिक बोझ आ पड़ा है। पत्रिका संरक्षकत्व, नित्य सैकड़ों-हजारों व्यक्तियों से मिलना उनकी समस्याओं का निदान बताना, साधकों को मार्ग दर्शन देना, शिष्यों को उपाय सुझाना, शिविर, लेखन, यात्रायें और नित्य प्रति सूक्ष्म रूप से सिद्धाश्रम जाकर वहां स्थित योगियों के

मध्य प्रवचन एवं मार्ग दर्शन करना, संस्था की गतिविधियों पर नियंत्रण रखना। ऐसे कार्यों के मध्य वे मूल चिन्तन को मूर्त, रूप नहीं दे पा रहे। उनकी इसी व्यस्तता को ध्यान में रख कर उनके साथ वर्षों से जुडे शिष्य एवं साधक अनुरोध कर रहे थे कि अब वे अपनी शक्तियों को इस प्रकार विभाजित कर दें कि वह कुछ दायित्वों से तो मुक्त हों और अपने चिन्तनों को पूर्णता दे सकें।

सम्भवत: मां भगवती जगदम्बा ने भी मौन स्वीकृति दे दी और काल तो पहले ही हार मान चुका था, पूज्य गुरुदेव की प्रखरता को समझ कर। नवरात्रि के दिवस आ गये। शक्तिमयता के अमृत से छलछलाते हुये दिन योगियों ओर साधकों के पुनर्जन्म के दिन और जिस दुग्ध पान से उनके ओंठ सिक्त हो उठते हैं वह होता है शक्ति का अमृत मय दुग्ध। इससे मधुर संसार में कोई पदार्थ ही नहीं।

जोधपुर गुरुधाम में साधना अपने पूरे वेग से परन्तु मौन होकर चल रही थी किसी को भान ही नहीं था कि क्या कुछ घटित होने वाला है ओर उन्हें बताता भी कौन? जो काल बोध कराता है वह तो पहले ही सहम कर दुबक चुका था। तीसरे दिन पूज्य गुरुदेव प्रात: कालीन सत्र में सदैव की भांति साधना एवं दर्शन देने पधारे। अचानक उनके पुराने शिष्य गुरु सेवक ने खड़े होकर निवेदन कर ही दिया कि अब वे अपने आप को और अधिक पीड़ित न करें। अपनी शक्तियों का विभाजन कर ही दें उन्होनें इस हेतु जिन सुयोग्य पात्रों के नाम सुझाये उसको सुनकर उपस्थित साधक समूह एक दम उल्लास से भर गया। उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट, पूज्य गुरुदेव व पूज्यनीय माता जी की जय से सारा पन्डाल गुंजरित कर दिया यह नाम थे पूज्य गुरुदेव के सुपुत्रों –**श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी, श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली जी, श्री अरविन्द श्रीमाली जी के।** पूज्यपाद गुरुदेव के सुयोग्य पुत्रों ने तो वर्षों से उनके विभिन्न कार्यो को संस्था के विभिन्न दायित्वों को, सम्भाल ही रखा था। उनके पुत्र से अधिक वे उनके योग्य शिष्य बनकर, सेवारत अन्य शिष्यों के साथ गुरुभाई बनकर सक्रिय थे ही। **श्री नन्द किशोर श्रीमाली जी** जहां हंसमुख एवं अत्याधिक मिलनसार है वही **श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली जी** गांभीर्य युक्त तथा सबसे छोटे सुपुत्र **श्री अरविन्द श्रीमाली जी** अभी अल्प अवस्था के होते हुये भी जिस तत्परता से संस्था के मामलों की देखभाल कर रहे हैं इससे घोर आश्चर्य होता है। मानो पूज्य गुरुदेव की कलायें ही उनके तीनों पुत्रों में बिखरी हैं गुरु सेवक जी तो एक दम उल्लास में भरे थे उन्होंने तो संभवत: गुरुदेव को अधिक से अधिक एक ही रूप में और विभजित होने की बात सोची होगी, किन्तु पूज्य गुरुदेव ने विचार कर अपने तीनों पुत्रों के मध्य अपने को विस्तारित करने की बात निश्चित कर डाली। और यह भी सत्य है कि इतनी विशाल संस्था का कार्य पूज्य गुरुदेव के अनेक रूपों में विभक्त होने से ही सम्भव होगा।

इस शुभ निश्चय की सूचना तुरन्त पूज्य गुरुदेव के आवास पर जाकर दी गई एवं कुछ ही देर बाद उनके तीनों पुत्र पारम्परिक वेश भूषा में सज्जित हो भव्यता से पधारे तीनों ही साधारण मानव के स्थान पर देव तुल्य लग रहे थे तीनों पुत्रों का स्वागत उपस्थित समुदाय ने खड़े होकर तालियों की गड़गड़ाहट से किया। उन्होने पूज्य गुरुदेव की अभ्यर्थना पिता के स्थान पर गुरु रूप में की। इसके पश्चात् वे भव्यता के साथ पूज्य गुरुदेव के साथ ही उसी मंच पर आसीन हुये पूज्य गुरुदेव ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में अपने साधकों को बताया कि किस प्रकार से वे अब अपनी शक्तियों को अपने पुत्रों में विभाजित कर स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर उन कार्यों का संपादन करेंगे जिसके लिये उनका दिव्य अवतरण सम्भव हुआ।
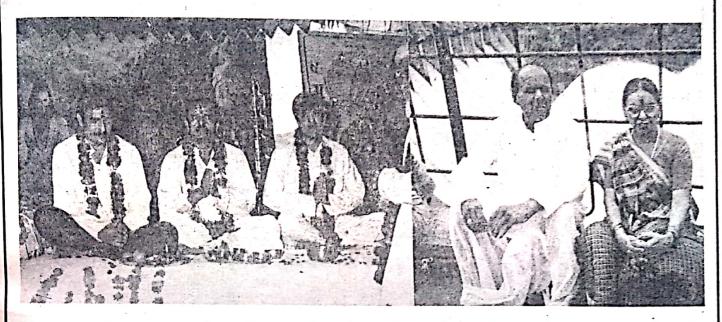
पूज्य गुरुदेव ने इस तथ्य को भी उजागर किया कि ये सामान्य संस्थाओं की तरह गद्दी का परिवर्तन नहीं है अपितु पूर्ण शास्त्रोक्त विधि से युग के मांग की परिपालना है एवं इसका अनुमोदन शास्त्रों में भी किया गया है कि गुरु के पश्चात् उसके पुत्र ही गुरु पद के सर्वोच्च सुपात्र है। इस पूजन क्रम की व्यवस्था सहयोगी रूप में संभाली पूज्य गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य डॉ० रामचैतन्य शास्त्री ने, जो पूर्व में एक प्रतिष्ठित संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर वर्षों तक रहे। पूज्य गुरुदेव ने वेदोक्त मंत्रो की ध्वनि प्रारम्भ की और संपूर्ण वातावरण तैरकर आज से कई हजार वर्षों पूर्व के युग में चला गया जब यज्ञों की, मंत्रों की, तप और चिन्तन की गरिमा से सारा भारत वर्ष ओत प्रोत था उन दिव्य क्षणों में ही साधक समझ सके कि पूज्य गुरुदेव किस व्यापकता और उदात्त की पुनर्प्रतिष्ठा के लिये सतर्क सचेष्ट हैं।

तीनों वन्दनीय पुत्रों का संक्षिप्त वेदोक्त पूजन करने के बाद, दीक्षा क्रम का क्रम पूर्ण करने के बाद क्षण थे पूज्य गुरुदेव द्वारा अपने को विभक्त करने के एवं विभक्त कर स्थापित करने के। यह कार्य केवल और केवल शक्तिपात के माध्यम से ही सम्भव है, और शक्तिपात भी साधारण नहीं, विशिष्टतम रूप से। इस हेतु पूज्य गुरुदेव ने सर्वप्रथम कुछ क्षणों तक ध्यान करके अपने पूज्यपाद गुरुदेव, सिद्धाश्रम स्थित वहां की सर्वोच्च विभूति,प्रातः स्मरणीय का स्मरण किया कि वे **परम हंस स्वामी सच्चिदानंद जी** सूक्ष्म रूप में कृपा पूर्वक पधारें। अम्बाला के वरिष्ठ साधक ने उनके साक्षात दर्शन प्राप्त किये। इसी तरह भिलाई की बहन ने सिद्धाश्रम से पधारे कुछ सिद्ध योगियों के दर्शन करे क्यों कि यह इतिहास के क्षण थे, क्यों कि जिनके साक्षीभूत बनने के लिये देव गण और सिद्धाश्रम स्थित योगीजन भी व्यग्र हो उठे, और उपस्थित भी हुये।

पूज्यपाद गुरुदेव ने शक्तिपात से पूर्व अपने तीनों पुत्रों को स्पष्ट किया कि इस क्षण के पश्चात् से वे उनके गुरु रूप में प्रतिष्ठित हो रहे है और अब वे उनका चिन्तन एक दिव्य ज्योति के रूप में करें जो उनके अन्तः स्थित होकर उन्हें सद्पथ पर निरन्तर गतिशील रखेगी। पूज्यपाद गुरुदेव ने ये भी आज्ञा दी कि आज से वे उनके शिष्यों का पालन, निर्देशन एवं मार्ग-दर्शन उसी भांति सजगता पूर्वक करेंगे, जिस प्रकार से पूज्य गुरु देव ने वर्षों तक किया।

इसके पश्चात् पूज्य गुरुदेव उठ खड़े हुये और सर्व प्रथम **श्री नन्द-किशोर श्रीमाली** जी को अपने सामने खड़ा कर कुछ क्षण गोपनीय मंत्रों का उच्चारण कर अपनी आंखों को शून्य में कहीं स्थित किया, मानों वे एक क्षण रुक कर सम्पूर्ण युग को साक्षीभूत बना रहे हैं तथा काल को दिखा रहे है कि किस तरह से उसकी छाती पर पैर रख कर उसे कुचला भी जा सकता है। मानों शून्य से उन्होंने बिखरी हुयी किन्हीं दिव्यताओं को अपने नेत्रो में समाहित किया और **श्री नन्दकिशोर जी** के आंखों में तीव्रता से देखते हुये अपने दाहिने हाथ के अंगूठे से उनके आज्ञा चक्र को बल पूर्वक दबाया लगभग दो मिनट के बाद **श्री नन्द किशोर जी** तेज की अधिकता सहन सकने के कारण अचेत से हो गये। पास खड़े शिष्यों ने उन्हें संभाल कर मंच पर आसीन किया इसके बाद **श्री कैलाशचन्द्र जी** के साथ एवं श्री

अरविन्द **श्रीमाली** जी के साथ भी इसी प्रकार शक्तिपात की क्रियाएं सम्पन्न कीं और वे दोनों भी तेज की अधिकता सहन सकने के कारण अचेत हो गये। इस सम्पूर्ण घटना क्रम का **भाई बृजेन्द्र पाल सिंह चौहान एवं भाई चेतन चौहान** ने कुशलता से वीडियो में अंकन कर उसे इतिहास की धरोहर बना दिया। बाद में डॉ० शास्त्री जी ने, जो वहीं पर पूज्य गुरुदेव को समीप से देख रहे थे, उन्होने बताया कि उन क्षणों में पूज्य गुरुदेव के नेत्रों में इतना अधिक तेज उतर आया था कि देखने मात्र से ही आंखें मुंदी जा रही थी। वे तो पूज्य गुरुदेव के पुत्र थे जो उस गुरु-तेज को सह गये, अन्यथा सामान्य मनुष्य का शरीर तो सम्भवत: फट ही जाता।

दिव्यता के इन क्षणों की समाप्ति के बाद जब सभी साधकों की रूकी हुयी सांसें वापिस आई तो सारा वातावरण फिर से जय-जयकार से गूंज उठा। ठीक उसी समय तेज हवायें चलने लगीं लगने लगा कि सारा पन्डाल उखड़ जायेगा। लेकिन यह तो संकेत था प्रकृति का कि वह भी झूम उठी है। **श्री भोला नाथ वाजपेयी जी** ने गुरुपद पर आसीन तीनों पुत्रों की एवं पूज्य गुरुदेव की अभ्यर्थना में सुन्दर पदों को अपने मधुर कण्ठ से गुजंरित किया, जिससे अतिरिक्त सुमधुरता दी बहन दिव्योत्तमा ने अपने कोकिल कण्ठ से, बहिन प्रीति एवं रूपाली ने भाव पूर्ण नृत्य करके ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया जैसा सिद्धाश्रम में मांगलिक अवसरों पर श्रेष्ठ नृत्य के कार्यक्रम सम्पन्न होते ही हैं। वातावरण देवत्व पूर्ण हो गया था, और होता भी क्यों नहीं पूज्य गुरुदेव एक के स्थान पर चार रूपों में जो विराजमान हो गये थे।

शास्त्रोक्त क्रियायें तब पूर्ण हुईं जब पूज्य गरुदेव ने अपना अंग वस्त्र **श्री नन्दकिशोर जी** के कन्धे पर रखा एवं उन्हें आशीर्वचन करने की आज्ञा दी। पूज्य गुरुदेव के तीनों पुत्रों के मुख मण्डलों पर अपूर्व तेज दमक रहा था और तीनों साक्षात् पूज्य गुरुदेव की प्रतिकृति ही लग रहे थे, **श्री नन्द किशोर जी,** पूज्य गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त कर ठीक उसी प्रकार से एक क्षण के लिए ध्यानस्थ हो गये जैसे कि पूज्य गुरुदेव प्रवचन से पूर्व होते हैं, ठीक उसी भांति उनके श्रीमुख से संस्कृत का श्लोक फूट उठा। उनके स्वर में अतिरिक्त ओज, अतिरिक्त मधुरता भर उठी थी। जन समुदाय ठक् सा होकर उन्हें निहार रहा था और उनके अमृत वचनों को ग्रहण कर रहा था। उन्होंने अपने संक्षिप्त प्रवचन में, आशीर्वचन के उपरान्त संस्था की भावी योजनाओं को बताया तथा सभी को सक्रिय होने की आज्ञा दी। **श्री कैलाश चन्द्र जी** अपने संक्षिप्त प्रवचन में स्पष्ट किया कि किस प्रकार से वह भविष्य में पत्रिका के प्रचार प्रसार की योजना को नवीन रूप देने जा रहे हैं। **श्री अरविन्द श्रीमाली जी** ने अपने मधुर स्मित से केवल 'आशीर्वाद' शब्द का उच्चारण किया और उसी से सारा वातावरण आह्लादित हो उठा। तीनों पुत्रों ने पूज्य गुरुदेव के चरण स्पर्श कर विशेष बल की कामना की कि वे उनकी इच्छा के अनुरूप उनके अथक परिश्रम की छवि अपने मानस में निरंतर रख उनके कार्यों को पूर्णता दे सकें।

यह समारोह यह घटना अपने आप में इतिहास का एक अविस्मरणीय क्षण तो है ही साथ ही साथ आज जो पद की छीना झपटी में धार्मिक संस्थायें जकड़ी हैं उनके मुंह पर तमाचा हैं कि एक ऐसी भी संस्था हैं जहां शास्त्रों की रीति का पालन है, वेदों के काल का वातावरण है, उपनिषद युग की शिष्यता है, बौद्ध काल का बंधुत्व है, और शंकराचार्य के युग की भांति इस सम्पूर्ण भारत से कुरीतियों को उखाड़ फेंक कर सनातन धर्म की पुर्न स्थापना है।

आँखों देखी घटना पूर्वजन्म की

अवसर था इस वर्ष की चैत्र नवरात्रि का, जो कि जोधपुर गुरूधाम में संपन्न हो रही थी। सैकड़ों लोगों की उपस्थिति थी, और सम्पूर्ण वातावरण तप की गरिमा से भरा हुआ था। प्रत्येक साधक गम्भीरता से पूज्य गुरूदेव द्वारा प्रदत्त विशिष्ट मंत्रों के जप से प्राप्त ऊर्जा के तेज से छलक रहा था। उसका प्रभाव उनके चेहरे पर छा गई ललिमा से स्पष्ट दिख ही रहा था। सर्वत्र एक अनुशासन और मर्यादा में बंधे साधक-साधिकाएं दृष्टिगोचर हो रहे थे। जो अपने पीले वस्त्रों में और गुरूनाम की चादर ओढ़े पता नहीं कितने युगों पूर्व भारत में रहे साधनात्मक वातावरण की पुनरावृत्ति कर रहे थे।

तीसरे दिन का समय था। साधक अपने प्रातः कालीन मंत्र जप को संपन्न कर प्रतीक्षा में थे कि कब पूज्य गुरूदेव उपस्थित हों और अपने अमृत वचनों से उन्हें तृप्ति दें। साथ ही उस दिन के मंत्र जप की पूर्णता भी तो उनके ही आशीर्वादों से प्राप्त होनी थी। प्रत्येक साधक और साधिका इसी तरह से चिन्तनों में लीन होकर प्रतीक्षारत था। लगभग ११.३० बजे पूज्य गुरूदेव का पण्डाल में आगमन हुआ। सारा वातावरण उल्लास और उमंग से भर गया। सभी ओर उनकी जय-जयकार गूंज उठी। संक्षिप्त भजन आदि के क्रम के बाद सभी साधक सजग हो गये कि आज के प्रवचन में पूज्य गुरूदेव किन सूत्रों को स्पष्ट करते हैं। उनके एक-एक वाक्य में जीवन की धारणायें छिपी होती हैं, जिनके सम्यक विवेचन की आवश्यकता है। पूज्य गुरूदेव ने अपना प्रवचन आरम्भ किया।

आज का विषय था जीवन में जब साधना से परिपूर्णता नहीं मिल रही हो तो गुरूदेव किस क्रम को अपनाते हैं, जीवन में परिपूर्णता पाने के लिये क्या-क्या उपाय संभव हैं? वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप क्या है? समय की आवश्यकता के अनुसार किस पद्धति को अपनाना श्रेष्ठ रहेगा, क्योंकि आज का मानव शारीरिक रूप से इतना सुदृढ़ नहीं है

और न ही उसके पास इतना समय है कि वह प्राचीन पद्धतियों का पूर्ण रूपेण पालन कर सके। पूज्य गुरूदेव इन्हीं तथ्यों का क्रमवार विवेचन करते हुए अपने विचारों को स्पष्ट कर रहे थे, और उपस्थित जन समुदाय एकदम शांत होकर एक-एक शब्द को आत्मसात कर रहा था। उनके वाक्यों में छिपी गम्भीरता को समझ रहा था और उसी अनुरूप आत्म विवेचन करता चल रहा था। अपने को टटोल रहा था कि किस स्थान पर हम गलत हैं, हमारे अन्दर क्या न्यूनताएं हैं, कैसे उनका निराकरण संभव है, जिससे कि हम विशद ज्ञान को अपने अन्दर समाहित कर सकें।

ठीक इसी मध्य एक २०-२२ वर्ष की लड़की सहसा उठ खड़ी हुई और भीड़ को चीरती हुई पूज्य गुरूदेव के सामने आकर खड़ी हो गई। सारा जन समुदाय उसकी इस अभद्रता से स्तब्ध रह गया। पूज्यगुरूदेव एक लय में अपने प्रवचन को पता नहीं किस दिशा में ले जा रहे थे, कौन से गोपनीय तथ्य उजागर करने जा रहे थे, किन्तु इस अभद्रता से वे भी रूक गये। उससे पूछा तुम कौन हो और क्या चाहती हो? उस लड़की ने उत्तर दिया– मैं भी साधना में भाग ले रही हूँ, इसके पूर्व में आबू, सूरत, बड़ौदा में कई गुरूओं से मिल चुकी हूँ, किन्तु मुझे कोई अनुभूति नहीं हुई, ना ही मैं अपना पूर्व जन्म देख पाई हूँ। इसके स्वर में स्पष्ट झलक रहा था कि उसे वेदना है कि वह अपने साधनात्मक जीवन को समझ नहीं पा रही है, और इसीलिये छटपटा रही है। पूज्य गुरूदेव उसकी मनःस्थिति समझकर शांत थे उन्होंने उसे पूछा, पूर्व जन्म देखने से क्या हो जायेगा? यदि तुम्हारा पूर्व जन्म बहुत श्रेष्ठ नहीं हुआ तो? किन्तु वह तो हठ ठान ही चुकी थी। नारी हठ यूं भी प्रसिद्ध है। पूज्य गुरूदेव ने उसको अनेक भाँति समझाया कि ये इतनी सरल प्रक्रिया नहीं है, जितना तुम समझ रही हो। इस घटना के एक दिन पूर्व ही पूज्यगुरूदेव लगभग १६ विशिष्ट दीक्षाएं और कम से कम ७-८ शक्तिपात संपन्न कर चुके थे। स्पष्ट है इतने विशिष्ट क्रम के बाद तुरन्त कोई गुरू शक्तिपात नहीं करना चाहेंगा। साथ ही प्रत्येक साधक का शरीर इस अवस्था में नहीं होता कि वह शक्तिपात झेल सके। उस साधिका के साथ भी यही स्थिति थी, किन्तु वह किसी भांति भी कुछ सुनने को तैयार नहीं हो रही थी। उल्टे हो यह रहा था कि उसे ज्यों-ज्यों समझाया जा रहा था, ज्यो-त्यों वह और अधिक असंयमित सी हो रही थी। पूज्य गुरूदेव ने उसको भांति-भांति समझाया कि तुम आज नहीं दो दिन बाद इस क्रिया को संपन्न करवा लो, किन्तु कदाचित उसको किसी ने पूज्य गुरूदेव के विरुद्ध भड़का कर भी भेजा था। पूज्य गुरूदेव के सन्यासी शिष्य सांस रोके घटना क्रम को देख रहे थे, क्योंकि वे उनके सन्यस्त रूप के गुस्से से परिचित हैं, और वे हतप्रभ थे कि कैसे परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी अपने आपको इन गृहस्थ शिष्यों के मध्य न केवल झोंके है बल्कि हँसकर सह रहे हैं।
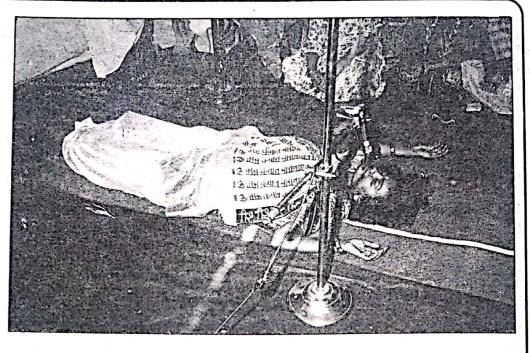
स्थिति जब यहां तक आ गई कि वह साधिका चुनौती के स्वर में बोलने लगी, पूज्य गुरूदेव के ज्ञान को ही मिथ्या बताने लगी, शक्तिपात की क्रिया को ही ढकोसला कहने लगी, तब तो स्थिति असह्य हो गई, पूज्यगुरूदेव की उच्चता पर तो कोई आघात करे उससे उनके ऊपर कोई अन्तर नहीं पड़ता। किन्तु जब वह

शक्तिपात की क्रिया, गुरु परम्परा को ही व्यर्थ बताने लगी तो देखते-ही देखते पूज्यगुरूदेव की मुख मुद्रा दृढ़ हो उठी। स्पष्ट हो गया कि वे कुछ मानस बना चुके हैं उन्होंने उसे एक बार पुनः चेतावनी दी, सावधान किया, और अचानक मंच पर से उठे और केवल एक हुंकारा भरा, हुंकारा भरना था कि वह साधिका अचेत होकर गिर पड़ी। सारा पंडाल धक् से रह गया। लगभग ५ मिनिट बाद जब स्थिति थोड़ी बदली, पूज्य गुरूदेव की मुख मुद्रा सामान्य हुई तब वे उठे और कुछ गोपनीय क्रियायें संपन्न कीं। इसके पश्चात् वे उसके अन्तर्मन को जागृत कर उसे पिछले जीवन में ले गये, और उससे प्रश्न पूछने आरम्भ किये, कि वह क्या देख रही है? पूज्य गुरूदेव ने उसके ही मुंह से उसके समस्त जीवन का विवरण कहलवाना आरम्भ कर दिया उसे बताया कि किस प्रकार से वह कहां पैदा हुई, किस प्रकार से बड़ी हुई कब विवाह हुआ, कब उसे पूज्य गुरूदेव मिले, उनके साथ उसने साधनाएं की, उनके साथ वह और उनका पति हिमालय के क्षेत्रों में गये, किस प्रकार से उसके साधनात्मक जीवन का स्खलन हुआ, कैसे वह अलग हुई, और कैसे फिर उसने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर ली।

पूज्य गुरूदेव के प्रश्नों और उसके उत्तरों को वहीं पर एक सजग साधक ने अपने टेप रिकार्डर में टेप कर दिया, तथा वीडियो फिल्म भी बनी, जिसमें इस पूरे प्रश्नोत्तर का विस्तार से वर्णन है, इससे यह स्पष्ट होता है कि पूर्व जन्म तो होता ही है, भारतीय ज्ञान विज्ञान की परम्पराएं, शक्तिपात, दीक्षा, मंत्र जप, सभी अपने स्थान पर सत्य हैं, प्रामाणिक हैं, आवश्यकता है कि सक्षम व्यक्तित्व के माध्यम से हम इन्हें अपने जीवन में स्पष्ट कर सकें। ये सामान्य क्रियाएं नहीं है, सम्पूर्ण प्राणों को मथ कर चिनगारी उत्पन्न कर देने की क्रिया है। किन्तु फिर यही चिनगारी जीवन में आग बनकर प्रकाशवान कर जाती है।

बाद में पूज्यगुरूदेव ने उपस्थित जन समुदाय को बताया कि उनकी कतई इच्छा नहीं थी कि वे इस प्रकार का प्रदर्शन करे, क्योंकि उनके जीवन का चिन्तन, उनका लक्ष्य सर्वथा कुछ और करना है। चमत्कार प्रदर्शन उनके व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं, किन्तु यह भी ऐसी स्थिति आ गई थी कि उन्हें बाध्य होकर प्रत्युतर देना पड़ा। यह कोई मामूली बात नहीं है। ४० साल के जीवन को ५ मिनिट में बांध देना-ये वही कर सकते हैं, जो इस ब्रह्मण्ड में बिखरे प्राणों को अपनी मुठठी में दबोच सकते हों, और काल के क्षणों से खेल सकते हों। इस सम्पूर्ण घटना का अंकन और रिकार्डिंग तो अब अपने आप में इतिहास की एक धरोहर बन गई है।

मई मास के शेयर व राजनीतिक भविष्य

मई मास में सूर्य १३ मई तक तो मेष राशि में स्थित रहेगा तत्पश्चात् १४ मई को दिन में दो बजे वृष राशि में प्रवेश कर जायेगा। बुध पूरे मास मेष राशि में रहेगा। गुरु कन्या में शुक्र मीन में, शनि कुंभ में, राहू वृश्चिक में और केतु वृषभ में भ्रमण करेगा। मंगल कर्क में तथा चंद्रमा मकर राशि में विचरण करेंगे।

राजनीतिक भविष्य -

मई मास में शनि ग्रह जो कि भारत का प्रतिनिधि और राशि स्वामी है। कई प्रकार प्रतियोगों से ग्रस्त है। भारत की राजनीति को प्रभावित करने वाला यह ग्रह मई मास में कुंभ राशि में स्थित रहेगा। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा भी शनि की राशि कुंभ के प्रतिनिधि है। अतः ऐसे अनुभवी तथा विद्वान् राजनैतिज्ञ के कार्यकाल में भारत के अग्रणी हस्ती के रूप में उभरने की पूरी संभावना है। परन्तु उनके शपथ काल के दौरान बुध की कमजोर स्थिति एवं राज्य स्थान में केतु की उपस्थिति के कारण स्वास्थ्य विकार अथवा आकस्मिक दुर्घटना के भी योग बनते हैं।

ग्रह मंडल का सेनापति मंगल १४ अप्रैल से पुनः अपनी नीच राशि कर्क में प्रवेश कर जायेगा और आठवीं दृष्टि से कुंभस्थ शनि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। मंगल शनि का यह अशुभ योग भारतीय राजनीति व भारी उलटफेर कर सकता है। कर्क राशि का नीच मंगल प्रधानमंत्री नरसिंहा राव की पद प्रतिष्ठा को दूषित तो नहीं करेगा परन्तु विपक्षी विवादों के कारण उन्हें कई बार स्पष्टीकरण देना पड़ेगा। उनकी कांग्रेस पार्टी में भी बिखराव आयेगा और कई असंतुष्ट नेता पार्टी विभाजन का प्रयास करेंगे। परन्तु चूंकि प्रधानमंत्री ने कन्या लग्न तुला राशि में शपथ ग्रहण की थी. अतः वे अपने विवेकपूर्ण निर्णय से स्थिति को सम्भाल सकेंगे।

यह क्रूर मंगल राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पुनः खड़ा कर देगा और मई में पुनः निर्माणकार्य भी आरम्भ होगा, परन्तु वह दस एक दिनों में ही स्थगित हो जायेगा, और साथ ही मध्यावधि चुनावों की संभावना भी उत्पन्न कर देगा।

मई मास में बृहस्पति ग्रह कन्या राशि में भ्रमण करेगा अतः किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद व जीवन प्रभावित होगा। सात राज्यों के प्रमुख राजनीतिक पदों में परिवर्तन की संभावना है। कांग्रेस पार्टी में परस्पर विवादों की वजह से केन्द्रीय मंत्रिमंडल में भी कई अप्रत्याशित फेर बदल होंगे।

कन्या राशि में बृहस्पति होने के कारण सम्पूर्ण विश्व में उथल पुथल का वातावरण रहेगा। अनेक देशों में सत्ता परिवर्तन इसी दौरान होगी। कुंभस्थ शनि के कारण अमेरिकी प्रभुत्व संसार के लिये भयानक साबित होगा। मुस्लिम राष्ट्रों के लिये यह समय उत्तम नहीं कहा जा सकता। उनमें आपसी मतभेद तथा कलह की स्थिति उत्पन्न होगी।

इसी कुंभस्थ शनि के कारण वाणिज्य मंत्रालय में केबीनेट मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी का भाग्य अत्यन्त प्रबंल होगा। ज्योतिष की दृष्टि से उनका भविष्य सुनहरा है, तथा वह अल्प समय में ही इससे भी उच्च व महत्वपूर्ण पद पर विराजमान होंगें। भाग्यदेवी के संकेत के अनुसार उनकी उत्तरोत्तर प्रगति सर्वत्र दृष्टिगोचर होगी।

शेयर बाज़ार -

मई मास के मंगल के कर्क राशि में प्रवेश करने के कारण शनि से षडाष्टक योग बनेगा जिससे स्टील, केमीकल, कपड़ा, पेट्रोलियम, आदि से संबंधित कंपनियों के शेयरों एवं उपरोक्त वस्तुओं के दामों पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। माजदा इण्डस्ट्रीज, गुजरात लीज, कोटक महिन्द्रा, टिस्को, ए सी सी सिटीकॉर्प, इत्यादि कम्पनियों के शेयरों में लगातार गिरावट आयेगी। पर मंदी का यह दौर तीसरे सप्ताह तक ही रहेगा। ग्रह योगों के अनुसार मंगल व शनि से प्रभावित व्यक्ति और इन वस्तुओं से संबंधित व्यापार, उद्योग तथा इससे संबंधित वस्तुओं जैसे, फ्रीज, टी० वी० अनेक प्रकार के वाहन आदि के उत्पादन से जुड़ी कम्पनियों के शेयर विशेष रूप से प्रभावित होंगे। उल्लेखनीय यह है कि पूरे मास में शेयर बाजार में स्थिरता का अभाव रहेगा।

बाजार भावों में कपास, रूई, सूत, पहले तो घटेंगे पर दूसरे सप्ताह में तेजी से उछलकर पुनः मंदों में गिर जायेगें। चांदी, सोना, जस्ता में पहले तो तेजी आयेगी पर १५ मई से पुनः मंदी में आ जायेगें। तिल तेल के बढ़े हुए भाव गिर जायेंगे। गेंहू, जौ, चना, अलसी, अरहर, मटर के भाव बढ़ेंगे। सोना घटा, बढ़ी में तेज रहेगा। ५ मई में चावल के भाव प्रभावित होगें। कोयले के भाव में आई मंदी अधिक समय तक नहीं रहेगी। नरम भावों में मूंगफली और कपास खरीदना उचित होगा। धान्यभाव घटा बढ़ी में प्रायः तेज रहेगा। मास मध्य में गेहूं, चना, अरहर तथा मटर में १२ से १५ रूपये की तेजी हो कर भाव कुछ गिरेंगे। ज्वार, बाजरा, मोठ, उरद, मूंग के गिरे भाव भी बढ़ेंगे। सुपारी, मिर्च, राई, हींग, कपूर, खजूर भी घटाबढ़ी में प्रायः तेज ही रहेगा। छींट के वस्त्र मंहगाई छोड़ देंगे। जौ, हीरा, मणि, मोती, जवाहरात में मंदी का भाव रहेगा। रूई के शेयर भी मंदे होंगे। मासांत में चांदी, तांबा, सोना तेज होगा, और चावल के भावों में पर्याप्त सुधार होगा।

मई माह : ज्योतिष प्रश्नोत्तर

संजय शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : क्या प्रशासनिक सेवा में जाने का योग है? रत्न बतायें।

उत्तर : अभी दो वर्ष की देरी है, गोमेद धारण करें।

उषा भारती, पटना

प्रश्न : मेरा विवाह कब होगा।

उत्तर : आप कड़ी मंगली हैं, विवाह २५ वें वर्ष में होगा।

श्याम वर्मा, इंदौर

प्रश्न : सुख सौभाग्य का समय कब आयेगा, रत्न बतायें?

उत्तर : पांच वर्ष बाद भाग्योदय होगा, मूंगा धारण करें।

शोभा जोशी, बम्बई

प्रश्न : पुत्र सुख है या नहीं?

उत्तर : अगले वर्ष संतान का योग है।

रश्मी गुप्ता, जबलपुर

प्रश्न : रोग से मुक्ति कब तक होगी?

उत्तर : अभी मंगल की महादशा चल रही है, दो वर्ष बाद स्वास्थ्य उत्तम होगा।

राजकिशोर अग्रवाल, हैदराबाद

प्रश्न : गृहस्थ जीवन सुखमय कब होगा, कोई रत्न बतायें?

उत्तर : पत्नी–सुख जीवन भर मध्यम ही रहेगा, स्फटिक की माला धारण करें।

अविनाश गोयल, गोरखपुर

प्रश्न : प्री मेडिकल टेस्ट में सफलता मिलेगी या नहीं, रत्न बतायें?

उत्तर : कठोर श्रम की आवश्यकता है, आठ रत्ती का नीलम धारण करें।

उमेश पाण्डे, जयपुर

प्रश्न : पदोन्नति कब तक होगी?

उत्तर : दो वर्ष इन्तजार करें। मूंगा धारण करना हितकारी होगा।

सुरेश माथुर, पूना

प्रश्न : मुकदमें में सफलता मिलेगी या नहीं?

उत्तर : मिलेगी पर पांच वर्ष बाद।

अनिल चन्द्रा, बम्बई

प्रश्न : मुझे किस वस्तु का व्यापार करना चाहिये?

उत्तर : आप केमिकल का व्यापार करें तो सफलता मिलेगी।

सतीश जैन, धनबाद

प्रश्न : अपना मकान कब तक बनेगा, रत्न बतायें?

उत्तर : दो वर्ष बाद शनि की महादशा समाप्त होते ही अपना मकान होगा। पुखराज धारण करें।

नीलम सिंह, कलकत्ता

प्रश्न : विदेश यात्रा का योग है या नहीं?

उत्तर : विदेश यात्रा का योग नहीं है।

अरुण कुमार, लखनऊ

प्रश्न : नौकरी कब और किस क्षेत्र में लगेगी?

उत्तर : अगले वर्ष तक प्रशासनिक परीक्षाओं के लिये प्रयास करें।

मंजू देवी, अहमदाबाद

प्रश्न : संतान सुख की क्या संभावना है?

उत्तर : संतान भाव का मालिक सूर्य है, राहु का ग्रहण होने से संतान सुख नहीं है।

प्रवीण भटनागर, मनाली

प्रश्न : मैं अधिकारी बनूंगा या व्यवसायी?

उत्तर : कर्मेश के उच्च बली होने से आपका अधिकारी बनने का पूर्ण योग है।

गोपाल दास वैष्णव, चित्तौड़गढ़

प्रश्न : सम्पत्ति समस्या का समाधान कब होगा?

उत्तर : वर्ष १९९४ के पूर्व ही हो जायेगा, हीरा धारण करें।

आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें दिल्ली के पते पर लिख भेजें। हम संबंधित प्रश्न का उत्तर प्रकाशित करेंगे, साथ में जन्म पत्रिका या हाथ का फोटो आना आवश्यक है।

मई मास का राशि फल

मेष : कार्यों की अधिकता रहेगी, आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा, परन्तु सम्पत्ति संबंधित विवादों का समाधान होगा। आकस्मिक धनागम से समस्याओं का समाधान होगा। यात्रा का अवसर भी आयेगा। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता चिन्ता जनक होगी। पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी।

वृषभ : राजकीय कार्यों में अनपेक्षित सफलता मिलेगी। यात्रा पीड़ादायी, किन्तु उपलब्धिपूर्ण होगी। व्यर्थ दौड़धूप तथा कार्यों की अधिकता रहेगी। आर्थिक उन्नति होगी। तनाव के कारण शारीरिक पीड़ा हो सकती है। प्रतियोगी परीक्षाओं में वांछित परिणाम प्राप्त होंगें।

मिथुन : नवीन योजनाओं से भाग्योदय होगा। उच्चराज्याधिकारी से अनुकूल सहयोग से आर्थिक लाभ होगा। परन्तु शत्रु पक्ष से सावधानी रखें। व्यर्थ के विवाद टालें। महिलाओं के मान-सम्मान में वृद्धि होगी। रक्त संबंधित विकार उत्पन्न हो सकते हैं। विद्यार्थियों को अनुकूल परिणाम प्राप्त होगें।

कर्क : मास में आध्यात्मिक रुचि बढ़ेगी, परिवार का सहयोग मिलेगा। आकस्मिक यात्रा लाभप्रद होगी। महिलाओं को आर्थिक नियंत्रण रखना चाहिये। नवीन वस्तु के क्रय का योग है। पुत्र की ओर से सुखद समाचार मिलेगें। सामाजिक कार्यों में क्रियाशीलता बढ़ेगी, तथा कार्य क्षेत्र में विस्तार होगा।

सिंह : मास विषमतापूर्ण होगा परन्तु साहस एवं परिश्रम से प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण होगा। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। श्रम की अधिकता से अस्वस्थता होगी। शत्रु पक्ष गुप्त रूप से छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। विद्यार्थियों के समस्त प्रयास सार्थक होंगे। जोड़ों में दर्द उत्पन्न हो सकता है।

कन्या : भावुकता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ेगा। कार्यों में विलम्ब से तनाव होगा। अज्ञात भय से ग्रस्त हो सकते हैं। प्रियजन के व्यवहार से चिन्ता होगी। धैर्य से कार्य करना हितकर होगा। आर्थिक प्रवास सफल होगें। रचनात्मक कार्यों में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विद्यार्थी वर्ग को कठोर श्रम करना चाहिये।

तुला : संघर्ष पूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विरोधाभास से बचे, आत्म विश्वास खोने से असफलता मिल सकती है। रक्त संबंधियों से तनाव हो सकता है। मास के मध्य में आकस्मिक धन लाभ होगा। अपूर्ण योजनाओं में प्रगति होगी। जोखिम पूर्ण सौदे करना उचित होगा।

वृश्चिक : पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी, लेखन एवं कलात्मक कार्यों में रुझान बढ़ेगा। शत्रु पक्ष से सुलह होगी। औद्योगिक कार्यों में विशेष सफलता मिलेगी। प्रियजनों से भेंट होगी। विद्यार्थियों को कठोर श्रम करना पड़ेगा। नवीन वस्तु का क्रय आर्थिक विषमता उत्पन्न कर सकता है। वायु विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

धनु : मास अभीष्ट फलदायी होगा। शारीरिक अस्वस्थता हो सकती है। रोजगार संबंधित प्रयास सार्थक होंगे। इच्छित कार्य पूरे होगें। सामाजिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्रों से उत्साह वर्धक सहयोग मिलेगा। धार्मिक कार्य संपन्न होंगे, तथा सृजनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी। मासांत में शत्रु पक्ष से सतर्क रहें।

मकर : पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा। सामाजिक जीवन उन्नत होगा। मन प्रसन्न रहेगा, व्यर्थ के तनाव दूर होंगे। आकस्मिक धन लाभ हो सकता है। परीक्षा में अनुकूल परिणाम प्राप्त होंगे। उत्साह बना रहेगा।

कुंभ : साहस तथा मनोबल से कार्य करें, स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता हो सकती है। कार्यों में अवरोध उत्पन्न होगें, परन्तु परिवार के संयोग से रुके हुए कार्य पूरे होगें। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अधिकारियों से सहयोग भी मिलेगा, उदर विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

मीन : मास उपलब्धिपूर्ण होगा, मानसिक सक्षमता के कारण प्रगति बढ़ेगी। जीवन साथी के सहयोग से रुके कार्य पूरे होगें। स्वजनों से भेंट होगी, आर्थिक लाभ हो सकता है, शुभ कार्यों की सम्पन्नता से यश मिलेगा। आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। मासान्त में आकस्मिक यात्रा का योग है। नवीन वस्तु का क्रय हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी।

आयुर्वेद और आपका स्वास्थ्य

पिछले अंक में कुछ प्रामाणिक अनुभूत आयुर्वेदिक नुस्खे दिये थे जिनका पाठकों ने उपयोग किया है और सराहना की है, उनका आग्रह है कि प्रत्येक मास कुछ मौलिक नुस्खे प्रकाशित किये जाय जिससे कि सामान्य जन उनसे लाभ उठा सकें।

इस बार मैं विभिन्न सन्यासियों से प्राप्त गोपनीय नुस्खे प्रकाशनार्थ दे रहा हूं, जो कि सभी मेरे परीक्षित है और अचूक प्रभाव डालते हैं। आप भी इन्हें अपनाकर लाभान्वित हो सकते हैं।

फिर भी आप इन औषधियों का सेवन अपने डॉक्टर, वैद्य या विश्वसनीय व्यक्ति की सलाह पर ही करें।

दमा निरोधक बटी

यह प्रयोग मुझे बद्रीनाथ के आगे नरनारायण पहाड़ में रहने वाले सन्यासी त्रिगुणानन्द जी से प्राप्त हुआ था जो कि अपने आप में आश्चर्यजनक प्रभाव देने वाला है, इसे मैंने आजमाया है और इससे किसी भी प्रकार का पुराना दमा या श्वास रोग समाप्त हो जाता है।

थूहर की गीली लकड़ी को ले कर उसको बीच में से थोथी कर दें और फिर उसमें पच्चीस लौंग भर कर ऊपर से बन्द कर दें, बाद में इस लकड़ी को अंगारों पर सेक कर लौंग को बाहर निकाल लें और इसमें ढाई तोला जवखार तथा दो तोला हल्दी डाल कर महीन घोट कर पीलू के रस में भिगोकर गोलियां बना दें, इसका आकार चने की तरह का हो।

नित्य एक गोली सेवन करने से किसी भी प्रकार का दमा समाप्त हो जाता है।

आधा सिर दर्द निरोधक बटी

यह नुस्खा भी मुझे एक उच्चकोटि के योगी से प्राप्त हुआ था, चाहे किसी भी प्रकार का सिर दर्द हो या आधा सिर दर्द हो यह रोग हमेशा-हमेशा के लिये इससे समाप्त हो जाता है।

यदि किसी ने जहर खा लिया हो, तो यह गोली देने से तुरन्त वमन (उल्टी) हो जाती है और सारा जहर पेट में से बाहर निकल जाता है।

सिका हुआ मोर थोथा, संचण या सेन्धा नमक बराबर मात्रा में लेकर इसको खरल में पीस कर पाउडर की तरह बना ले और फिर अदरक के रस में घोट कर चने के आकार की गोलियां बना, नित्य एक गोली का सेवन करने से पुराना सिर दर्द हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

अतिसार नाशक बटी

काली मिर्च एक तोला, पीपर एक तोला, जवखार आधा तोला तथा दाडिम की सूखी छाल दो तोला लेकर सब को चूर्ण कर आठ तोला गुड़ में एक रस कर चने के आकार की गोलियां बना कर रख दें, नित्य एक गोली का सेवन करने से किसी भी प्रकार का अतिसार समाप्त हो जाता है।

गैस निरोधक बटी

अजमा, छोटी पीपर, विरियाली, नागर, मोथा, काली मिर्च एवं सेन्धा नमक एक-एक तोला पांच तोला हरड़, दस तोला सूंठ तथा पैंतीस तोला सारंग मूल ले कर सबको कूट पीस कर एक रस कर दें, और उनकी गोलियां बना ले, नित्य एक गोली लेने से पुराने से पुराना वायु रोग अथवा गैस्टिक ट्रबल समाप्त हो जाता है।

मूर्च्छा निरोधक बटी

कुछ व्यक्ति चलते-चलते या काम करते करते कुछ मिनटों के लिए बेहोश से हो जाते है, उस समय उन्हें शरीर का भी भान नहीं रहता, उनके लिए ये गोलियां रामबाण है, इसके अलावा इन गोलियों से बुखार, श्वास रोग, हिचकी, पसलियों का दर्द आदि बीमारियां भी दूर होती है।

इलायची दाना, तमाल पत्र, तज, दाख और छोटी पीपर प्रत्येक दो-दो तोला, शक्कर, खारक, चार-चार तोला तथा आठ तोला शहद में कूट पीस कर घोट कर चने के आकार की गोलियां बना लेनी चाहिए।

नित्य एक गोली का सेवन करने से उपरोक्त रोगों में तुरन्त आराम मिलता है।

कफ निरोधक बटी

पापड़ खार (फुला कर) जवखार, छोटी पीपर तथा हरड़ बराबर मात्रा में ले कर इससे दुगुना गुड़ इसमें मिलाकर गोलियां बना लेनी चाहिए और सुबह शाम दो-दो घण्टे से एक-एक गोली मुंह में चूसने से पुराने से पुराना कफ भी दूर हो जाता है।

वीर्य स्तम्भन बटी

जायफल, सेन्धा नमक, कोड़ी भस्म, सूंठ, छोटी पीपर, ये सभी बराबर मात्रा में ले कर नींबू के रस में खरल करनी चाहिए और बाद में एक एक रत्ती की गोलियां बना लेनी चाहिए, नित्य सुबह शाम एक गोली का सेवन करने से शरीर के समस्त रोग दूर होते हैं, तथा वीर्य वृद्धि हो कर स्वास्थ्य में निखार आता है।

कोढ़ निवारक बटी

शुद्ध पारा, बछनाग, सूंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, गन्धक और त्रिफला इन सब को बराबर मात्रा में ले कर भांगरे के रस में घोट कर एक एक रत्ती में प्रमाण की गोलियां बना लेनी चाहिए।

नित्य सुबह शाम इस गोली के सेवन से किसी भी प्रकार के शरीर पर स्थित सफेद दाग और कुष्ट अथवा कोढ़ समाप्त हो जाता है।

संग्रहणी निरोधक बटी

कलई की भस्म तीन भाग, काली मिर्च पांच भाग तथ बछनाग सात भाग लेकर सबको कूट पीस कर पाउडर बना ले और फिर अदरक के रस में खरल करके एक एक रत्ती के प्रमाण की गोलियां बना देनी चाहिए, नित्य सुबह शाम एक एक गोली लेने से सभी प्रकार के वात रोग, कफ और संग्रहणी समाप्त हो जाती है।

नागार्जुन बटी

पुरुष या स्त्रियों के पेट कई कारणों से फूल जाते है, और यह बढ़ा हुआ पेट असुन्दर एवं अशोभनीय दिखाई देता है इसके लिए ये गोलियां आश्चर्यजनक रूप से प्रभावोत्पादक है।

पारा (शुद्ध किया हुआ), बछनाग, गंधक, शीशे की भस्म, बराबर मात्रा में लेकर तीन भाग काली मिर्च का पाउडर मिलाकर अदरक के रस में चार घण्टे घोटना चाहिए, फिर इसकी एक एक रत्ती की गोलियां बना लेनी चाहिए।

भोजन करने के बाद और नित्य सुबह शाम एक-एक गोली का सेवन करने से बढ़ा हुआ पेट पिचक जाता है, और सारा शरीर सुन्दर एवं दर्शनीय बन जाता है।

अंकों के अनुसार मई मास का भविष्य

(१) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि १, १०, १९ या २८ है

शरीर में पराक्रम वृद्धि होगी, धन लाभ के श्रोत बढ़ेगें, मित्रों का सहयोग मिलेगा। उदर विकार से बैचेनी होगी, किसी मित्र के कारण अपव्यय होगा। मादक पदार्थों से बचे।

यात्रा : ३, १२, १०

प्रेम प्रसंग : ८, १२, २०

विपरीत तिथियां : १, ७, १६

अनुकूल तिथियां : १०, १९, २७, २६

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न - पिलंग

(२) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि २, ११, २० या २९ है

व्यापार सामान्य रहेगा, रुके हुए कार्य पूरे होगें, धन लाभ होगा, परन्तु खर्च भी बढ़ेगें, संतान की चिन्ता हो सकती है। मित्र सहयोग प्रदान करेंगे।

यात्रा : ७, ९, १०

प्रेम प्रसंग : ४, १३, २०

विपरीत तिथियां : २२, २६, २९

अनुकूल तिथियां : १०, १५, १९, २५

वर्ष १९९३ के लिये अनुकूल रत्न : एलंग

(३) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ३, १२, २१, ३० है

परीक्षाओं में अनुकूल परिणाम मिलेंगे, आकस्मिक यात्रा की संभावना है। सम्मान में वृद्धि होगी, शंका समाधान होगा, परन्तु शत्रु पक्ष तनाव उत्पन्न कर सकता है।

यात्रा : ३, ९, १०

प्रेम प्रसंग : १०, १७, १९

विपरीत तिथियां : ८, १६, २६

अनुकूल तिथियां : १४, २१, २७, ३०

वर्ष १९९३ के लिए अनुकूल रत्न : चिवलेन

(४) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ४, १३, २२ या ३१ है

कार्यों में परिवर्तन होंगे, संतान से विवाद हो सकता है, कोई गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। स्वजनों से लाभ होगा। सम्मान में आशातीत वृद्धि होगी।

यात्रा : २, ९, १०

प्रेम प्रसंग : ३, १०, १५

विपरीत तिथियां : ११, २०, २९

अनुकूल तिथियां : १९, २७, ३०

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : केवलोन

(५) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ५, १४ या २३ है

उत्तरोत्तर प्रगति होगी, रोगों का शमन होगा, पर मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। किसी स्त्री द्वारा धन लाभ होगा। संतान पक्ष से सुखद समाचार मिलेंगें।

यात्रा : ५, ९, १५

प्रेम प्रसंग : ३, १०, १५

विपरीत तिथियां : ११, २९, २०

अनुकूल तिथियां : १९, १८, २७, ३०

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : प्रियंकू

(६) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ६, १५ या २४ हैं

निर्णय लेने में कठिनाई होगी, नवीन योजनाएं बनेंगी, अचानक रोग उत्पन्न हो सकता है। शत्रुओं से समझौता होगा, साहस एवं उत्साह से कार्य करें।

यात्रा : ६, ९, १५

प्रेम प्रसंग : ७, १३, १६

विपरीत तिथियां : ७, १३, १७, ३०

अनुकूल तिथियां : १५, १८, २७, २८

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : पनेल

(७) व्यक्ति जिनका जन्म तिथि ७, १६ या २५ है

प्रभुत्व बढ़ेगा, अधिकारियों से सहयोग मिलेगा, शिक्षा में सफलता मिलेगी। चोट लग सकती है, कार्यों की अधिकता रहेगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

यात्रा : १, ६, १०

प्रेम प्रसंग : ४, ९, ११

विपरीत तिथियां : ८, १३, २६

अनुकूल तिथियां : १४, १९, २३, २७

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : चिलवेल

(८) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ८, १७, या २६ है

कार्य क्षमता बढ़ेगी, शत्रुओं से छुटकारा मिलेगा चोर भय की आशंका रहेगी शारीरिक सुख में कमी होगी। जीवन साथी के सहयोग से समस्याएं सुलझ जायेंगी।

यात्रा : ५, १०, १४

प्रेम प्रसंग : १, ३, ७

विपरीत तिथियां : २, ६, १६

अनुकूल तिथियां : १०, १४, १९, २३

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : ऐरवेन

(९) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ९, १८, २७ है

मास अत्यन्त उत्साह वर्द्धक है, व्यापारी वर्ग को अच्छी सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों को अनुकूल परिणाम मिलेगें। महिलाओं को इच्छाएं पूरी होंगी। आकस्मिक धन लाभ होगा, परन्तु व्यय की अधिकता रहेगी।

यात्रा : ९, १५, १८

प्रेम प्रसंग : ४, १३, २०

विपरीत तिथियां : २, २०, २९

अनुकूल तिथियां : १८, २१, २४, २७

वर्ष १९९३ के अनुकूल रत्न : सौन्दर्ग

Scanned by CamScanner

मई मास काल निर्णय

१४ अप्रैल से १३ मई तक

रविवार (दिन)

महेन्द्र काल ६.०० से ६.४८ बजे
अमृत काल ६.४८ से १० बजे
वक्र १० से २ बजे तक
शून्य २ से ५.१२ बजे तक
अमृत ५.१२ से ६.०० बजे तक

सोमवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र काल ७.३६ से १०.४८ बजे तक
अमृत काल १०.४८ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से ३.३६ बजे तक
अमृतकाल ३.३६ से ५.१२ बजे तक
शून्य काल ५.१२ से ६.०० बजे तक

मंगलवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ८.२४ बजे तक
शून्य काल ८.२४ से ९.१२ तक
वक्र काल ९.१२ से १०.०० बजे तक
अमृत काल १०.०० बजे से १२.२४ बजे तक
शून्य काल १२.२४ से ३.३६ बजे तक
अमृत काल ३.३६ से ५.१२ बजे तक
शून्य काल ५.१२ से ६.०० बजे तक

बुधवार (दिन)

वक्र काल ६.०० से ७.३७ बजे तक
अमृत काल ७.३७ से ९.१२ बजे तक
वक्र काल ९.१२ से ११.३६ बजे तक
अमृत काल ११.३६ से १.१२ बजे तक
शून्य काल १.१२ से २.०० बजे तक
वक्र काल २.०० से ३.३६ बजे तक
महेन्द्र काल ३.३६ से ४.२४ बजे तक
अमृत काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

गुरुवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ८.२४ बजे तक
शून्य काल ८.२४ से ९.१२ बजे तक
वक्र काल ९.१२ से १०.४८ बजे तक
अमृत काल १०.४८ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से ४.२४ बजे तक
अमृत काल ४.२४ से ६.०० बजे तंक

शुक्रवार (दिन)

शून्य काल ६.०० से ६.४८ बजे तक
अमृत काल ६.४८ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से ४.२४ बजे तक
अमृत काल ४.२४ से ५.१२ बजे तक
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

शनिवार (दिन)

शून्य काल ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र काल ७.३६ से ८.२४ बजे तक
शून्य काल ८.२४ से ९.१२ बजे तक
अमृत काल ९.१२ से १२.२४ बजे तक
शून्य काल १२.२४ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से २.०० बजे तक
शून्य काल २.०० से ३.३६ बजे तक
अमृत काल ३.३६ से ५.१२ बजे तक
शून्य काल ५.१२ से ६.०० बजे तक

१४ मई से १३ जून तक

रविवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ८.२४ बजे तक
वक्र काल ८.२४ से ११.३६ बजे तक
अमृत काल ११.३६ से २.४८ बजे तक
शून्य काल २.४८ से ३.३६ बजे तक
महेन्द्र काल ३.३६ से ४.२४ बजे तक
शून्य काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

सोमवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र काल ७.३६ से ९.१२ बजे तक
अमृत काल ९.१२ से ११.३६ बजे तक
वक्र काल ११.३६ से ६.०० बजे तक

मंगलवार (दिन)

शून्य काल ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र काल ७.३६ से १०.०० बजे तक
अमृत काल १०.०० से ११.३६ बजे तक
शून्य काल ११.३६ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से ३.३६ बजे तक
शून्य काल ३.३६ से ४.२४ बजे तक
अमृत काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

बुधवार (दिन)

शून्य काल ६.०० से ६.४८ बजे तक
महेन्द्र काल ६.४८ से ८.२४ बजे तक
अमृत काल ८.२४ से १०.०० बजे तक
वक्र काल १०.०० से १२.२४ बजे तक
शून्य काल १२.२४ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से २.४८ बजे तक
अमृत काल २.४८ से ५.१२ बजे तक
शून्य काल ५.१२ से ६.०० बजे तक

गुरुवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र काल ७.३६ से १०.०० बजे तक
अमृत काल १०.०० से ११.३६ बजे तक
शून्य काल ११.३६ से १.१२ बजे तक
वक्र काल १.१२ से ३.३६ बजे तक
शून्य काल ३.३६ से ४.२४ बजे तक
अमृत काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

शुक्रवार (दिन)

अमृत काल ६.०० से ६.४८ बजे तक
वक्र काल ६.४८ से ७.३६ बजे तक
अमृत काल ७.३६ से १०.०० बजे तक
वक्र काल १०.०० से १२.२४ बजे तक
अमृत काल १२.२४ से ३.३६ बजे तक
शून्य काल ३.३६ से ४.२४ बजे तक
वक्र काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

शनिवार (दिन)

महेन्द्र काल ६.०० से ६.४८ बजे तक
शून्य काल ६.४८ से ९.१२ बजे तक
अमृत काल ९.१२ से १२.२४ बजे तक
वक्र काल १२.२४ से ४.२४ बजे तक
शून्य काल ४.२४ से ६.०० बजे तक

कुण्डलिनी जागरण विशेषांक : दीक्षा परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने व्यवस्था की जाती है। तथा साधना से संबंधित, दीक्षा देने की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

शीर्षक	न्यौछावर
गर्भस्थ बालक की कुण्डलिनी जागरण	२१००
शक्तिपात से कुण्डलिनी जागरण	२१००
फोटो द्वारा कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	११००
धनवन्तरी दीक्षा	६००
समय दीक्षा (सामान्य दीक्षा)	३००
ज्ञान दीक्षा	६००
जीवन मार्ग दीक्षा	६००
शांभवी दीक्षा	१५००
चक्रजागरण दीक्षा	३०००
विद्या दीक्षा	८००
शिष्याभिषेक दीक्षा	३०००
आचार्याभिषेक दीक्षा	५०००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (प्रथम चरण)	१५००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (द्वितीय चरण)	१८००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (तृतीय चरण)	२१००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (चतुर्थ चरण)	२४००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (पंचम चरण)	३१००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (षष्टम चरण)	४१००
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा (सप्तम चरण)	५१००

* चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

* ड्रॉफ्ट किसी बैंक का हो, वह "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्रॉफ्ट भेजने का पता :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.), टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा प्रकाशित। ताज प्रेस ए-३५/४, मायापुरी, नई दिल्ली में मुद्रित।

विशेष तंत्र रक्षा कवच

यह अत्यधिक दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं आपके लिये सौभाग्य दायक योजना है

* यह एक जीवन की पूर्णता प्रदायक योजना है, जिसके माध्यम से आप अपने जीवन को निडर भाव से आगे बढ़ा सकते हैं
* आप निश्चिन्त भाव से लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इस योजना के माध्यम से हम आपके साथ हैं, प्रतिपल प्रति क्षण सम्पूर्ण जीवन भर ....

हमारे समाज में हर दूसरा या तीसरा परिवार अपने शत्रु या स्वजनों द्वारा शत्रुतावश किये हुए या दूसरों से करवाये हुए तांत्रिक प्रयोग से अत्यन्त परेशान रहता है। ये तांत्रिक प्रयोग जिस पर किया जाता है, उस व्यक्ति का सर्वनाश सा हो जाता है, इसमें व्यापार बांधना, मानसिक डिप्रेशन, बुद्धि काम न करना, कमाई होते हुए भी पैसे उड़ जाना, बीमारी से ग्रस्त होना तो होता ही है, यहां तक कि मारण प्रयोग से मृत्यु भी हो जाती है, आदमी जिन्दा लाश बनकर रह जाता है। इस तरह के सैकड़ों पत्र कार्यालय में प्रतिदिन आते हैं एतदर्थ विशेष तांत्रिक पण्डितों ने करुणावश सर्वजन हिताय पूर्ण मंत्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठित सद्यः लाभप्रद "आजीवन तंत्र रक्षा-कवच" सुलभ किया है, जो अद्वितीय एवं दुर्लभ है। इसके धारण करने के कुछ समय बाद ही इसके अचूक प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित होने लगता है। यन्त्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित करके तैयार किया जायेगाा, उसी को ही इसके लाभ मिल सकेंगे। इस कवच को धारण करने वाले व्यक्ति पर संसार के किसी भी तांत्रिक या मांत्रिक का तंत्र प्रयोग निष्प्रभावी रहेगा।

कवच धारक पर किसी तंत्र प्रयोग का कोई असर नहीं होगा, उल्टे प्रयोग कर्ता की स्थिति भयानक हो सकती है।

यदि किसी व्यक्ति पर कवच धारण से पूर्व ही किसी ने तंत्र प्रयोग करवा रखा हो तो कवच धारण करने के एक महीने के भीतर-भीतर उस प्रयोग का दुष्प्रभाव समाप्त होने लग जायगा।

इस कवच को धारण करने वाला व्यक्ति आजीवन किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा एवं भूतप्रेत आदि बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

इस दिव्यतम कवच की न्यौछावर मात्र ११०००/- रूपये (ग्यारह हजार) है। यह कवच गुरूधाम में आकर प्राप्त कर सकते हैं, या पत्र आने पर भिजवाया जा सकता है।

और फिर इतने बड़े अनुष्ठान को देखते हुए यह धनराशि है क्या ... कुछ भी तो नहीं

आप क्या करें

कुछ भी नहीं, न पंडितों-पुरोहितों के चक्कर काटें और न परेशान हों ... सब कुछ हम पर छोड़ दें

धनराशि अग्रिम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें, बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो पर जोधपुर में देय हो एवं "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान जोधपुर" के नाम से बना हो।

यह धनराशि वापिस लौटाई नहीं जायगी और न इस संबंध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य होगी और पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले साधक शिष्य या पत्रिका पाठक ले सकते हैं।

ड्राफ्ट इस पते पर भेजें :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)-३४२००१, टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

अथवा

आप दिल्ली में-३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं - टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

सभी दृष्टियों से जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिये अद्वितीय आठ दीक्षाएं

जो एक के बाद एक लेकर श्रेष्ठता प्राप्त की जा सकती है।

१. ***समय दीक्षा*** : हृदय को शुद्ध निर्मल पवित्र एवं दिव्य बनाने के साथ-साथ पूज्य गुरुदेव से पूर्णता के साथ जुड़ने की प्रक्रिया। आगे बढ़ने एवं पूर्णता प्राप्त करने हेतु बीजारोपण प्रक्रिया।

२. ***ज्ञान दीक्षा*** : देह शुद्धि, मन शुद्धि, प्राण शुद्धि, आत्म शुद्धि एवं समस्त अन्त्र बाह्य की शुद्धि इसी दीक्षा के फलस्वरूप संभव है, जीवन के दुख, चिन्ता, दरिद्रता एवं अपूर्णता इसी दीक्षा के माध्यम से समाप्त हो सकती है, जिससे कि साधक तेजी से आगे बढ़ सके।

३. ***जीवन मार्ग दीक्षा*** : एक अद्‌भुत अनिवर्चनीय दीक्षा। गुरुदेव जो हृदय में बीजारोपण करते हैं, उसे ऊंचा उठना एवं सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ पूरा शरीर निर्मल एवं चैतन्य इसी दीक्षा से संभव है, इस दीक्षा से साधक अपनी शक्ति पहिचान कर ऊंचाई पर तेजी से उठता है।

४. ***शांभवी दीक्षा*** : जब शिष्य गुरुमय हो जाता है, तब इसी दीक्षा के माध्यम से उसमें प्राणशक्ति संचरित की जाती है, इसके फलस्वरूप वह श्रेष्ठ योग विद्याओं एवं साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, इसी दीक्षा के माध्यम से शिष्य को रक्षा कवच प्राप्त होता है।

५. ***चक्र जागरण दीक्षा*** : एक तेजस्वी दीक्षा, जिससे शिष्य ध्यान, धारणा एवं समाधि में पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है, उसके शरीर स्थित एक के बाद एक चक्र जाग्रत होने लगते हैं और कुण्डलिनी जागरण क्रिया तेजी के साथ गतिशील होती है।

६. ***विद्या दीक्षा*** : इसी दीक्षा में 'हादी' एवं 'कादी' विद्या की तेजस्विता प्रदान की जाती है, जिससे वह अष्ट सिद्धियों में सफलता प्राप्त करने लगता है जीवन की यह श्रेष्ठ दीक्षा है।

६. ***शिष्याभिषेक*** : इसी दीक्षा के अन्तर्गत शिष्य का विशेष अभिषेक किया जाता है, जिससे वह समस्त सिद्धियों में पूर्णता एवं लक्ष्मी, काली आदि महाविद्या साधनाओं में पारंगत होकर वह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है जो दुर्लभ होती है।

७. ***आचार्याभिषेक*** : इस अति महत्वपूर्ण दीक्षा में अन्त्र का अभिषेक होने से शिष्य गुरुपद का अधिकारी हो जाता है और उसे कई साधनाएं एवं सिद्धियां स्वतः प्राप्त होने लग जाती हैं।

शिष्य एक-एक कर के या आठों दीक्षाएं एक साथ प्राप्त कर सकता है।

दीक्षा के लिये सम्पर्क

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली

टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

दीक्षा के लिए तारीख व समय पहले से ही टेलीफोन से तय कर लें।

राजस्ट्रेशन नं. १५३०५/८१

A.H.W.

पोस्टल-एन.आर.जे. ३६६७/८३-८७